@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

December 2017

Rotary

Vol.35, Issue 6 | Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

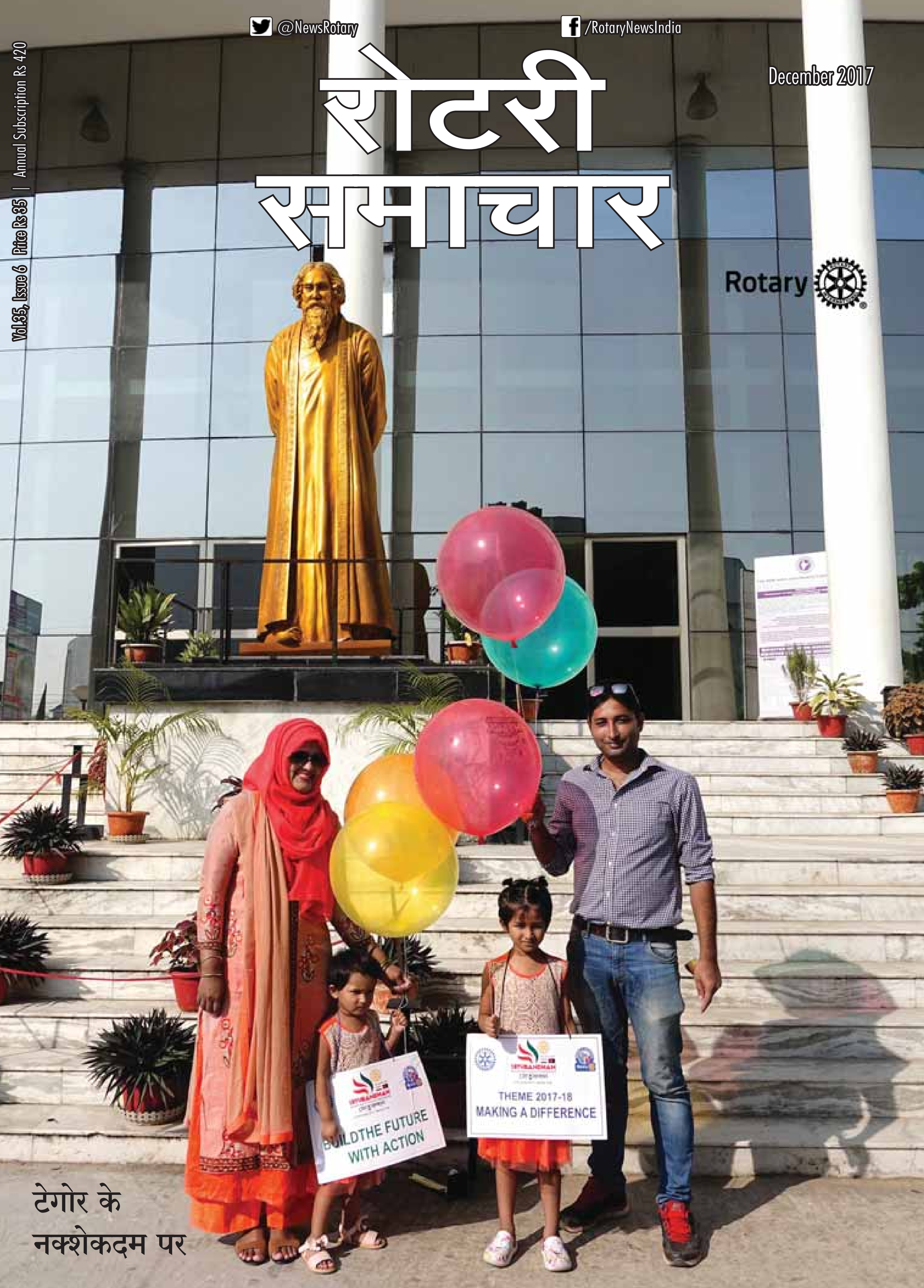

टेगोर के नक्शेकदम पर

अकापुल्को के चट्टान गोताखोर

पुराने ज़मानेवाले, एल्विस प्रेस्ली की 1963 की प्रसिद्ध हॉलीवुड ब्लॉकबस्टर — *फन इन अकापुल्को*, को कभी भूल नहीं सकते। इस फिल्म ने दुनिया को विशेषज्ञ चट्टान गोताखोरों से परिचित करवाया, जो ला कबराड़ा की खड़ी चट्टानों, मैक्सिको के अकापुल्को में एक प्रसिद्ध जगह से गोता लगाते हैं। हाल की छुट्टी के दौरान, भय और ख़ौफ़ के साथ हमने देखा की कैसे ये गोताखोर चट्टानों पर चढ़े और 100-135 फीट दूर की छलांग समुद्र में लगायी जो लगभग 18 फ़ीट घेहरा था। उनकी विशेषज्ञता यह सुनिश्चित करने में है की वे छलाँग लगाते समय चटानों से न जा टकराएं और इस शानदार उपलब्धि का प्रदर्शन करें। नियमित पर्यटक आकर्षण, 2002 में गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स ने इस साहसी प्रदर्शन को "नियमित रूप से सर के बल छलांग का सर्वाधिक प्रदर्शन" करार किया था।

रशीदा भगत द्वारा मूलशब्द और चित्र।

विषयसूची

12 **रोटेरियन विभाजनकारी गतिविधियों का मुकाबला करें**

सेतुबंधन, अगरतला में बहु-मंडल सम्मेलन द्वारा मंडल 3240 और मंडल 3282 के बीच भाईचारा मजबूत करनी की कोशिश।

30 **मौज मस्ती, खाना पीना और परोपकार भी ... आम्ची मुंबई में**

'रोटरी वर्ल्ड फेस्टिवल' में संगीत, नृत्य, घुड़ दौड़ और स्वादिष्ट व्यंजन रोटरी फाउंडेशन के लिए अधिक से अधिक धनराशि एकत्रित करने के लिए।

44 **एक अकेले क्लब द्वारा एक साल में 106 हैप्पी स्कूल**

रोटरी क्लब बैंगलोर ने 'सपने देखने की हिम्मत',की और 106 से भी अधिक हैप्पी स्कूल बनाए।

24 **भारत में रोटरी टी बी उन्मूलन की चुनौती को स्वीकार करे:सौम्या स्वामीनाथन**

WHO की डिप्टी डायरेक्टर जनरल को रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट ने सम्मानित किया।

36 **बैंगकॉक में हुआ प्रादेशिक संपादकों का सम्मेलन**

हाल ही में आयोजित बैंकाक में एशिया प्रशांत के क्षेत्रीय संपादकों के सम्मेलन का संक्षिप्त विवरण।

42 **आशा का सीवन**

रोटरी क्लब शिमला के रोटेरियन कैदियों के जीवन में खुशी और उद्देश्य लाते हैं।

50 **अच्छे कार्यों के 75 वर्ष**

रोटरी क्लब तिन्नेवेली ने अपनी प्लेटिनम जयंती का जश्न मनाते हुए स्कूलों में स्वच्छता सुविधाओं में सुधार लेन का प्रयास किया।

60 **सीमाओं के परे दृष्टि का सुधार**

भारतीय रोटेरियन गाम्बिया में उत्कृष्ट आंखों की देखभाल प्रदान करते हैं।

54 **प्रेम के साथ कानपुर से अमृतसर**

अमृतसर टूर पर रोटरी एन्स ऑफ़ रोटरी क्लब कानपूर ग्रेटर ने दोस्ती, मज़ा और उल्लास का उत्सव मनाया।

कवर पर : अगरतला में आयोजित एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'सेतुबंधन' में प्रतिनिधि।

चित्र: रशीदा भगत

एक शानदार नवंबर अंक

एक बार फिर, एक उत्कृष्ट नवम्बर अंक। मासूम बच्चों की कवर की तस्वीर लुभावनी है। इस प्यारी तस्वीर के लिए फोटोग्राफर मैडम का शुक्रिया। निदेशक मंडल की कवर की भीतरी तस्वीर में केवल एक महिला है और मैं आशा करता हूँ कि जल्द ही कोई महिला रोई अध्यक्ष का मुख्य पद प्राप्त करें! निकट भविष्य में ऐसी किसी तस्वीर में हम जल्द ही किसी साड़ी पहनी हुई महिला को देखने की आशा करते है।

मैं *रोटरी समाचार* दल - जयश्री और वी मुत्तुकुमारन, डिज़ाइनर एस कृष्णाप्रथीश, एन कृष्णमूर्ति और एल गुणसेकरण, किरण ज़ेहरा और संध्या राव, सबिता राधाकृष्णा और शीला नाम्बियार की प्रशंसा करना चाहता हूँ।

यह पढ़कर अच्छा लगा कि ज्यादातर पाठकों ने पत्रिका के लिए आपके सर्वेक्षण में शाबाशी दी है, इसका श्रेय संपादक रशीदा भगत और उनके दल को जाता है।मैं यह जानकर बहुत खुश हुआ कि हमारे मंडल 3000 में सबसे अधिक संख्या में रोटरेक्ट और इंटरेक्ट क्लब है (*सदस्यता सारांश*)।

शुद्ध पीने योग्य पानी पर आपकी सम्पादकीय और कवर स्टोरी बहुत बढ़िया थी और हमने ध्यान दिया कि संपादक ने स्वयं अनेक लेख

लिखे है और जयश्री ने भी उतने ही लेख लिखे है।

नन नारायणन, रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट
मंडल 3000

नवंबर अंक कवर पेज से लेकर अंत तक मनोरम एवं असाधारण था। हर एक पन्ने को पढ़कर मुझे आनंद आया। सर्वेक्षण विश्लेषण परिणामों ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया; परिणाम बिल्कुल वैसे ही थे जैसी हमें आशा थी! एक छोटी सी विनती है - क्लब की गतिविधियों में हर मंडल की दो तस्वीरें सम्मिलित कीजिये क्योंकि इससे उन्हें और अधिक गतिविधियाँ करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

के ए एस जगाबर सादिक
रोटरी क्लब नागोर - मंडल 2981

नवम्बर अंक का कवरेज, गुणवत्ता और संपूर्ण लेख वाकई बहुत अच्छे थे। बधाई

पेरुमल मुरुगन,
रोटरी क्लब नागेरकोईल गोल्डन सिटी मंडल 3212

यह देखकर अच्छा लगता है कि हर अंक के साथ रोटरी समाचार तेजी से बेहतर हो रहा है। मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि आपको पर्यावरण के मुद्दे पर विशेष ध्यान देना चाहिए और इसे पत्रिका में एक खास जगह प्रदान करना चाहिए जिसमें पर्यावरण के हित में निर्माण, वर्षा-जल संग्रहण और जल पुनर्चक्रण पर लेख हो।

प्रमोद चौगुले
रोटरी क्लब कृष्णा वैली - मंडल 3170

नवम्बर अंक में प्यारे लेख भूले-बिसरों को इज्जत देना के लिए बहुत बड़ा धन्यवाद।

कमांडर प्रदीप बहरी
सचिव, रोटरी क्लब दिल्ली साउथ - मंडल 3011

रोटरी - भारत सरकार की साझेदारी

जैसे ही मुझे *रोटरी समाचार* प्राप्त होता है, मैं सम्पादकीय पर सरसरी नज़र डालता हूँ। अक्टूबर की सम्पादकीय *पॉवर... कुछ अच्छा करने के लिए* सबसे अधिक प्रभावित किया।

यह पढ़कर अच्छा लगा कि केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव सार्वभौमिक टीकाकरण परियोजना - मिशन इन्द्रधनुष के लिए रोई, विशेषकर भारतीय रोटेरियनों के साथ साझेदारी एवं सहयोग की तलाश में है। मुझे गर्व होता है कि रोटरी ने लगभग पोलियो-मुक्त दुनिया बनाने के लिए अपनी विश्वसनीयता को प्रमाणित किया है। दो भारतीय रोटरी आइकॉन पीआरआईपी राजेंद्र के साबू और कल्याण बेनर्जी -ईमानदारी और नेक नीयत से रोटरी द्वारा की जा रही निस्वार्थ समर्पित सेवा के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है।

यह अच्छी बात है कि रोटरी की 'सेवाओं' ने हमारी सरकार का ध्यान आकर्षित किया है। पोलियोप्लस कार्यक्रम के द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति करने के लिए अब डीजी और पीडीजी दोनों को कार्य करना होगा।

अरुण कुमार दास
रोटरी क्लब बरीपदा -
मंडल 3262

रोटरी क्लब बर्मिंघम

रोटरी क्लब बिर्मिंघम, यूएसए के दो प्रतिष्ठित सदस्य - उसके अध्यक्ष फ्रेड मेक्कालम और कार्यकारिणी निदेशक सूसन जैक्सन - के साथ संपादक का साक्षात्कार सूचनाप्रद एवं प्रेरणादायक है। 1914 में स्थापित किये गए एवं 640 सदस्यों वाले इस क्लब की गतिविधियाँ पढ़ने और अनुसरण करने योग्य है। क्लब के पास आधुनिक सुविधाओं वाली अपनी स्वयं की ईमारत है, और इसने अनेक परियोजनाओं जैसे विद्यालय भवन, श्रीलंका में कैंसर का पता लगाने वाले केंद्रों पर कई मिलियन डॉलर खर्च किये है, और इसके पास 290 सदस्यों के साथ सबसे बड़ा रोटरेक्ट क्लब है। इसके सदस्यों की निस्वार्थ सेवा के लिए इनपर भगवान का आशीर्वाद बना रहे।

जी वी सयागावी
रोटरी क्लब दवानगेरे विद्यानगर
मंडल 3160

शुधु टेबलेट्स: एक प्रशंसनीय परियोजना

महाराष्ट्र के रोटरी क्लब जालना मिडटाउन के रोटेरियनों को सलाम जिन्होंने विद्यालय के छात्रों और समुदाय को शुद्ध पीने योग्य पानी प्रदान करने के लिए प्रशंसनीय और अनुकरणीय परियोजना (*शुद्ध जल*, नवम्बर अंक) अपने हाथों में ली। संपादक को शुधु गोलियों और परियोजना तरल के लिए स्वयं उन क्षेत्रों में जाकर दौरा करने और जानकारी इकट्ठा करके आठ पन्ने का एक सुन्दर लेख शुद्ध जल, जो दूसरे क्लबों को भी इस परियोजना का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करेगा, लिखने के लिए मेरी शुभकामनाएं। अपनी सम्पादकीय के लिए संपादक का उचित शीर्षक: एक विशेष, *अनुकरणीय और विस्तारणीय प्रोजेक्ट,* और उनकी शुरुआती टिप्पणियाँ: ''कुछ बेहद खूबसूरत चीज़ें छोटे पुलिंदों में आती है'' प्रशंसनीय है।

सम्पादकीय उचित रूप से यह व्यक्त करती है कि हमारे बच्चों की स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ी जरूरतों की देखभाल करके, भारत के रोटरी क्लब प्रगति और विकास की ओर बढ़ते भारत के लिए एक अनमोल योगदान दे रहे है। रोटेरियन वो कर रहे है जो सरकार नहीं कर सकती।

एक बार फिर रशीदा भगत द्वारा लिखित लेख *भूले-बिसरों को इज्जत देना* रोटरी क्लब दिल्ली साउथ की इनरव्हील सदस्यों के साथ की गई एक शानदार परियोजना है। संध्या राव द्वारा उपहार में पुस्तकें, शेखर मेहता द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के साथ रोटरी की साझेदारी ऐसे अन्य महत्वपूर्ण एवं पढ़ने योग्य लेख है।

टीम *रोटरी न्यूज़* द्वारा *अंगदान के संबंध में जागरूकता बढ़ाना* रोटरी क्लब गंगानगर, राजस्थान की एक ध्यान देने योग्य परियोजना है। डीजी बाघ सिंह पन्नू ने जागरूकता पर स्कूल के बच्चों को उपदेश दिया है। अंग दान एक सर्वोत्तम उपहार है जो कोई किसी को दे सकता है और अधिक जागरूकता फ़ैलाने के लिए बहुत कुछ किये जाने की आवश्यकता है।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080

सरल विचार बहुत मायने रखते है

आपने अपनी संपादकीय में उचित कहा कि ''सबसे सुन्दर चीज़ें छोटे पुलिंदों में आती है।'' हमारे पास भी बैनर संदेशों का एक छोटा पैकेज अभियान था जो कोलकाता के चार पेट्रोल पम्पों पर हॉर्न ना बजाए, धूम्रपान ना करें और गाड़ी चलाते वक्त हेलमेट पहने का सन्देश दे रहा था। अब यह एक बहुत बड़े छवि निर्माण प्रयोग के रूप में उभरा है। एक लाख से भी अधिक वाहन चालक संदेश को पढ़ते है। एक सरल विचार बड़े स्तर पर विस्तारित हो गया।

पियूष दोषी, रोटरी क्लब बेलूर
मंडल 3291

एक प्रशंसनीय सर्वेक्षण

टीम *रोटरी समाचार* को ऑनलाइन सर्वेक्षण के लिए बधाई जिससे यह पता लगता है की 82 प्रतिशत पाठक पत्रिका की गुणवत्ता से खुश हैं,जबकि 70 प्रतिशतपर विषय से आदिक प्रस्सना है । लेकिन और बेहतर हो सकता है।

डी पी मुनिअप्पा
रोटरी क्लब कोलार गोल्ड फ़ील्ड
मंडल 3190

नवंबर अंक में *रोटरी समाचार* - सर्वेक्षण विश्लेषण परिणाम में प्रदर्शित सकारात्मक प्रतिक्रिया, जो आपकी बड़ी सफलता को व्यक्त करती है, के लिए बधाईयाँ। आशा है आप आगे भी अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे और आने वाले वर्षों में नयी ऊचाइयां छुएंगे।

किर्श चिताले, रोटरी क्लब मद्रास - मंडल 3232

जानकारीपूर्ण लेख

डॉ अमन अग्रवाल और ग्ल्यूड IOL सर्जरी पर लेख अत्यंत सूचनाप्रद है। बेशक डॉ अमन अग्रवाल खजङ सर्जरी के अग्र-दूत है। लेकिन वह एक रोटेरियन नहीं है और इसलिए, इस तरह का विस्तृत लेख उचित नहीं है। हम संयुक्त राष्ट्र के निर्माण में रोटरी के योगदान, स्वर्गीय रोटेरियन इंद्र कुमार गुजराल और रोटेरियन जे आर डी टाटा, जो उनके समय के सक्रिय रोटेरियन थे, पर लेख प्रकाशित होने की आशा कर रहे है।

सनत जैन
रोटरी क्लब रायपुर हेरिटेज - मंडल 3261

एक अद्भुत, असाधारण गवर्नर

लेख आपके गवर्नरों से मिलें (नवंबर अंक) में, मैंने डॉ ज़मीन हुसैन के रवैये को कुछ खास पाया। वह अपने मरीजों से केवल रु 50 परामर्श शुल्क लेते है, इस तरह विषय-वस्तु: 'स्वयं से बढ़कर सेवा' को चरितार्थ करते है।

सामान्यतौर पर, रोटेरियन टीआरएफ में तभी दान करते है जब उनके पसंदीदा नेता शीर्ष स्थान पर हो। यह जानकर हैरत हुई कि जब एक रोटेरियन पिछले वर्ष इन डीजी से बोला कि वह टीआरएफ में उनके कार्यकाल के दौरान दान करेगा, तो ''उन्होंने कहा मेरे वर्ष का इंतजार क्यों करना? अभी क्यों नहीं? लोगों की तकलीफें इंतजार नहीं कर सकती।'' समय पर किया हुआ आपका दान लोगों की तब मदद करेगा जब उन्हें इसकी सबसे अधिक जरूरत होगी। एक शानदार उत्तर। मैं ऐसे गवर्नर के बारे में पढ़कर खुश हूँ।

एन. जगथीसन
रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

किताबों की विशेष दुनिया

संध्या राव का लेख *उपहार में पुस्तकें* मुझे शिमला की पुस्तक की दुकानों, याद दिलाता है। मारिया एक ऐसी दुकान थी जिसमें जाना मैं कभी नहीं भूलता था क्योंकि उसके पास पुरानी किताबों का अच्छा संग्रह होता था, मॉल रोड पर स्थित इस प्राचीन दुकान पर कम से कम आधा घंटा व्यतीत करता था, जहाँ पर मैं वर्ष 1895 की *पंच* मैगज़ीन का एक लेख प्राप्त करके अचम्भित हुआ था!

यह ब्रिटिश पत्रिका हास्य, व्यंग्य और कार्टूनों से परिपूर्ण होने के नाते बहुत ही प्रसिद्ध थी, लेकिन दुर्भाग्यवश, 1996 में इसने प्रकाशन बंद कर दिया।

एच एस खुराना
रोटरी क्लब लुधियाना - मंडल 3070

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

एक वादा - उत्तर पूर्व के लिए

इस बार अपनी पत्रिका में हमने चेन्नई, दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु से बाहर निकल कर उन छोटे क्लबों पर अपनी ऊर्जा और समय केंद्रित करने का निर्णय किया जो मेट्रो में तो नहीं हैं पर जहाँ सदस्य अपने सामर्थ्य के अनुसार समुदाय में जीवन बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। और, धीरे-धीरे ही सही, लेकिन निश्चित रूप से, भारत का चेहरा बदल रहा है। जहाँ हमारा पिछला अंक भारत के एक छोटे से शहर में एक अपेक्षाकृत छोटे क्लब - रोटरी कल्ब जालना मिडटाउन पर केंद्रित था, जो जालना कस्बे के दूर दराज़ के गांवों में स्कूली बच्चों और उनके परिवारों को सुरक्षित और शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए एक साधारण परन्तु अद्भुत परियोजना कर रहा है, वहीं इस महीने आपके संपादक ने एक छोटे पर खूबसूरत उत्तर पूर्वी राज्य त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में मंडल 3240 (भारत के पूर्वोत्तर और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों) और मंडल 3282 (बांग्लादेश), दोनों मंडलों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन - *सेतुबंधन* - को सम्बोधित करने और इसे पत्रिका में कवर करने का का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। बांग्लादेश (मंडल 3282) के रोटेरियंस की, सम्मलेन आयोजित करने की भारी मांग आयोजकों और मेजबान क्लब के लिए काफी आश्चर्य का विषय थी। क्लब के अध्यक्ष डॉ एस के बनिक ने बताया, हालांकि हमारे क्लब में सिर्फ 40 सदस्य हैं लेकिन उन्होने पहली बार 800 प्रतिनिधियों का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने की चुनौती स्वीकार की। बांग्लादेश के 660 ... जी हाँ, भारत से केवल 140.. प्रतिनिधियों के लिए कमरे ढूंढना और परिवहन व अन्य सुविधाएं आयोजित करना वास्तव में एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन मुश्किल को मुमकिन में बदलना ही तो रोटरी की भावना है। क्यों, है न ?

उन दो दिनों में, हरियाली से आच्छादित इस छोटे पर खूबसूरत अगरतला में किसी रोटेरियन से टकराये बिना तो आप घूम ही नहीं सकते थे। सम्मलेन की पूर्व संध्या पर आयोजित प्रीती भोज में लम्बी कतारें अविश्वसनीय लगती थीं। और जब मैने डॉ से शहर की सफाई और साफ़ सुथरी सडकों पर आश्चर्य जताया तो उन्होंने बताया कि म्युनिसिपेलिटी कर्मचारी सुबह 5 बजे सड़कों पर आ जाते हैं। हर कोई केरल की शिक्षा दर की बात करता है ''पर हमारी शिक्षा दर भी 100% है मातृ - शिशु मृत्यु दर भी पूरे भारत की अपेक्षा काफी काम है। साथ ही हमारे यहाँ संस्थागत डिलीवरी (प्रसव) भी अपेक्षाकृत सबसे अधिक होते है; और ये मैं इसलिए भी जानता हूँ क्योंकि मैं स्त्री रोग विशेषज्ञ हूँ। उन्होंने और मंडल 3240 के अध्यक्ष सुनील सराफ ने कहा की हम अभी भी ऐसी परियोजना की तलाश कर रहे हैं जो ना केवल अद्वितीय हो बल्कि टिकाऊ भी हो। मैंने उन दोनों से वादा किया की भविष्य में उत्तर पूर्वी क्षेत्र में रोटेरियनों द्वारा की जा रही 1-2 परियोजनाओं को *रोटरी समाचार* में अवश्य स्थान दूंगी।

जब से हमने लिखा की मेट्रो और दक्षिण क्षेत्र ही नहीं बल्कि *रोटरी समाचार* पूरे भारत के समाचार के लिए प्रतिबद्ध हैं - चेन्नई को इसका प्राकृतिक लाभ है क्योंकि आरएनटी मुख्यालय यहां स्थित है - अन्य शहरों से भी हमारे पास उनकी परियोजनाओं को छापने के प्रस्ताव आ रहे हैं। हमें सूरत और तिरुनेलवेल्ली ने अनुरोध किया है और शीघ्र ही हम उनके गांव और कस्बों में जा कर, वहीं से परियोजनाओं के बारे में बताएंगे, जो बताने का सटीक तरीका भी है। इसलिए, आप बिना यह सोचे कि आपका क्लब अथवा शहर छोटा है या बड़ा, आप अपने विचार और प्रतिष्ठित परियोजनाओं के बारे में ज़रूर बतायें। और परियोजनाओं को विस्तार से छपने के लिए : बताएं - किस प्रकार आप रोटरी के मूल क्षेत्र स्वास्थ्य, शिक्षा, पर्यावरण हित लाभ, आर्थिक प्रभाव और सबसे महत्वपूर्ण - आपने, किस प्रकार निराशा का जीवन जी रहे लोगों में आशा का संचार किया ताकि वो अपना और परिवार का भविष्य बेहतर बना सके, सुरक्षित कर सके।

रशीदा भगत

एक शांतिपूर्ण दुनिया की ओर

प्रिय साथी रोटेरियनों,

बहत्तर साल पहले, आने वाली पीढ़ियों को युद्ध के संकट से बचाने के लिए... (और) अच्छे पड़ोसियों की तरह एक दूसरे के साथ शांति के साथ रहने और सहिष्णुता को व्यवहार में लाने के लिए संयुक्त राष्ट्र का गठन हुआ था। उन बहुमूल्य आकांक्षाओं, और उसे प्राप्त करने में पीढ़ियों के निवेश के बावजूद भी, युद्ध का संकट अभी भी हमारे साथ है: पिछले वर्ष, दुनियाभर में 49 सशस्त्र संघर्षों में 102,000 से ज्यादा लोग मारे गए। इनमें से कुछ संघर्ष पांच दशक या उससे भी ज्यादा के थे। आतंकवाद, असहिष्णुता, और उग्रवाद; शरणार्थी संकट; और पर्यावरणीय निम्नीकरण अब वैश्विक चुनौतियाँ है।

सामूहिक रूप से, हम 1945 में इतनी महत्वाकांक्षा और आशावाद के साथ निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में पहले से अधिक दूर प्रतीत होते है। फिर भी आशा मौजूद है, जब तक ऐसे लोग है जो अधिक शान्तिप्रद भविष्य के लिए काम करने की इच्छा रखते है - केवल अपनी सरकारों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि उनके पास और एक दूसरे के बगल में भी। आज, रोटरी शांति के लिए स्थायी और वास्तविक प्रभाव डालने के लिए पहले से बेहतर स्थिति में है: हमारे शांति-केन्द्रित कार्यक्रमों द्वारा, जैसे रोटरी शांति निर्माता, और हमारी सेवा के सभी क्षेत्रों द्वारा। जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा, और आर्थिक विकास सभी परस्पर संबंधित है और उस जटिल पारस्परिक प्रभाव का हिस्सा है जो संघर्ष का कारण बन सकता है - या इसे टाल सकता है। इन सभी क्षेत्रों में हमारी सेवा का सर्वोत्तम लाभ उठाने के लिए, और शांति के लिए उनके प्रभाव को अधिकतम करने के लिए, इन पारस्परिक प्रभावों को समझना और उसी के अनुसार अपनी सेवा को नियोजित करना आवश्यक है।

इन कारणों की वजह से, हमने फरवरी से जून तक कनाडा, लेबनान, यूके, ऑस्ट्रेलिया, इटली और संयुक्त राज्य में छह अध्यक्षीय शांति निर्माण सम्मेलनों की एक श्रंखला निर्धारित की है। यह सम्मेलन केवल शांति पर नहीं बल्कि शांति निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करेंगे: हम *शांति निर्माण* के उन तरीकों को साझा करेंगे जिन पर हमारे रोटरी क्लबों और मंडलों द्वारा दी जा रही सेवा के माध्यम से काम किया जा सकता है। एक दिवसीय सम्मेलनों में से पांच सम्मेलन, शांति और ध्यान केन्द्रित करने योग्य अन्य क्षेत्रों के मध्य संबंधों को उजागर करेंगे। वैन्कूवर, बी. सी. में आयोजित होने वाला पहला सम्मेलन शांति और रोटरी में हमारी चिंता के एक अन्य बड़े क्षेत्र - पर्यावरण संवहनीयता - के मध्य संबध का पता लगाएगा। आप पूरी समय-सारणी को *www.rotary.org/presidential-conferences* पर देख सकते है और पंजीकरण कर सकते है।

लक्ष्य सरल है: उनकी सेवा के माध्यम से शांति को बढ़ावा देने के नए रास्तों को खोजने में रोटेरियनों की मदद करना, विशेषज्ञों से सीखना और शांति निर्माण के लिए हमारी योग्यताओं को मजबूत बनाना। मुझे यह आशा और विश्वास है कि *रोटरी: परिवर्तन ला रही है* के माध्यम से, ये सम्मेलन हमें एक अधिक शांतिपूर्ण दुनिया के करीब जाने में मदद करेंगे।

इयन एच एस राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल, 2017-18

एक अनुकरणीय रोटरी-बैंक की साझेदारी

प्रिय रोटेरियनों,

मैं सत्ताईस साल पहले रोटरी से जुड़ा। अपने पहले दिन, मैंने एक वरिष्ठ रोटेरियन से उनके नाम में लगे उपसर्ग के बारे में पूछा - पीपी क्या है? उनके सरल से उत्तर ने मुझे समझा दिया कि रोटरी क्या है। उन्होंने कहा पीपी पूर्व अध्यक्ष का संक्षिप्त रूप है; लेकिन यह रोटरी की सेवाओं को भी स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है... लोगों को गरीबी से बाहर निकालना; संघर्षों की रोकथाम करना, पोलियो जैसी बीमारी को मिटाना, भूख को शांत करना, और अंततः शांति, स्वच्छता, स्वास्थ्य और सभी अच्छी चीज़ों को बढ़ावा देना।

एक प्रसिद्व कहावत 'इलाज से रोकथाम बेहतर है' एक सही सलाह है उन लोगों के लिए जो खुशहाल और स्वस्थ जीवन जीना पसंद करते है। रोटरी एक सेवा संगठन है और 100 प्रतिशत धर्मार्थ संगठन नहीं है। निवारण समय और पैसा बचाता है और हमारी खुशियों के अनुपात को बेहतर बनाकर हमें स्वस्थ रखता है। रोटरी की सर्वोत्तम सेवा जागरूकता फैलाना और कार्यवाही करना है। सेवा में हमारे साझेदारों, इंटरैक्ट और रोटरेक्ट, की सहायता से, हम साथ मिलकर अच्छे और खुशहाल जीवन पर जागरूकता फ़ैलाने के नियमित अभियानों को आयोजित कर सकते है।

उदाहरण के लिए, चीन के बाद दूसरे स्थान पर सबसे अधिक डायबिटीज मेलिटस से पीड़ित 70 मिलियन से अधिक लोगों के साथ, भारत दुनिया की डायबिटीज राजधानी है। हाल ही के अध्ययन बताते है कि यह महामारी सभी वर्गों, अमीर और गरीब दोनों के मध्य बढ़ रही है। अध्ययन ने व्यस्क लोगों में डायबिटीज, विशेष रूप से बिना जांच किये हुए मामलों, की उच्च संभावना को बताया, जिनमें से बहुत से लोगों का शर्करा स्तर अनियंत्रित था। यह समुदाय में सुव्यवस्थित कार्यवाही और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से ऐसे लोगों का पता लगाने जिनकी जांच नहीं हुई है और उन्हें शीघ्र उपचार देने एवं उनकी नियमित जांच करने की आवश्यकता को प्रदर्शित करता है।

हमारे रोटरी क्लब स्थानीय अस्पतालों के साथ मिलकर डायबिटीज का पता लगाने के शिविरों को आयोजित कर सकते है और इसके बचाव एवं उपचार के बारे में जन-जागरूकता फैला सकते है। मुझे याद है कि कैसे मेरे साथी रोटेरियनों ने, लक्ष्मी विलास बैंक के साथ मिलकर करूर के लोगों की सेवा करने के लिए एलवीबी-रोटरी परियोजना को बढ़ावा दिया था। करूर आधारित एलवीबी के प्रबंधन ने जब उनकी 70वीं वर्षगांठ को करूर के लोगों की सेवा करने की एक परियोजना के साथ चिन्हित करने का फैसला किया, तो सस्ती चिकित्सा सेवा उनकी पसंद बनी। फिर बैंक करूर के रोटरी क्लब के रोटेरियनों के पास पहुँचा जिन्होंने उत्साहपूर्वक उस चिकित्सा केंद्र को चलाने की जिम्मेदारी लेना स्वीकार किया। तब से मुफ़्त चिकित्सा सेवा लेने वाले मरीजों की संख्या बढ़कर प्रतिदिन 100 तक पहुँच चुकी है, जो सालाना रु 300,000 से भी ज्यादा मरीज तक हो जाती है। एलवीबी के रु 500,000 के सालाना योगदान और रोटरी संस्थान के मिलान अनुदान की मदद से क्लब चिकित्सा केंद्र चलाने के लिए चिकित्सा सामग्री और दवाइयां खरीदता है। एलवीबी-रोटरी चिकित्सा केंद्र यह साबित करने का एक उत्कृष्ट नमूना है कि एक अच्छी तरह से संगठित एवं कुशलतापूर्वक चलने वाली कॉर्पोरेट-रोटरी की साझेदारी क्या हासिल कर सकती है। इस सब के लिए, बैंक के संस्थापकों की परिकल्पना को सलाम जिन्होंने सीएसआर के विचार की उत्पत्ति के लगभग 100 वर्ष पूर्व ही संस्था के अंतर्नियम में यह निर्धारित किया था कि शुद्ध लाभ का एक प्रतिशत हिस्सा सामुदायिक विकास के लिए खर्च किया जायेगा।

चलिए इस उदाहरण को दोहराएं और हमारे समुदाय में अच्छे स्वास्थ्य और निवारक देखभाल की आवश्यकता के बारे में बड़े पैमाने पर जागरूकता फ़ैलाने का प्रयास करें और इस प्रकार इस वर्ष की विषय-वस्तु, *रोटरी: परिवर्तन ला रही है* को प्रदर्शित करें।

सी भास्कर
निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

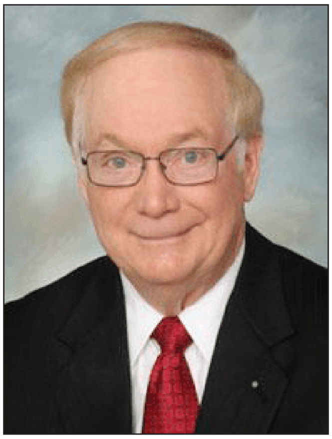

साझेदारि की ताकत

इस माह मेरा ध्यान साझेदारियों के उद्देश्य और उसकी ताकत पर है।

रोटरी के हर स्तर पर हमारे पास साझेदारियों का इतिहास है। हम सदस्य को सदस्य से, क्लब को क्लब से, मंडल को मंडल से जोड़ते है, सभी रोटरी संस्थान के अनेक प्रकार के कार्यक्रमों, परियोजनाओं, और अनुदानों से सहायता प्राप्त करना चाहते है। यह कितना शक्तिशाली बना हुआ है!

परन्तु केवल पिछले कुछ दशकों में हमने रोटरी के बाहर के संस्थानों के साथ साझेदारी करने के विचार पर अधिक ध्यान दिया है। अधिकतर लोग इस बात से सहमत होंगे कि यह परिवर्तन वैश्विक पोलियो उन्मूलन पहल तक ले गया, जो हर एक साझेदार द्वारा अपनी विशेषज्ञता साझा करने और एक समान उद्देश्य के लिए साथ मिलकर काम करने के कारण काफी हद तक पूर्ण कर लिया गया। वैश्विक स्वास्थ्य के लिए यह सार्वजानिक-निजी साझेदारी इतिहास में केवल दूसरी बार मानवों को प्रभावित करने वाली इस संक्रामक बीमारी को खत्म करने की कगार पर है।

सरल शब्दों में, साझेदार परस्पर लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में सहयोग देने के लिए सहमत है। ऐसा करने से, एक अकेली संस्था जो हासिल कर सकती है वे उससे कई अधिक हासिल करते है। अब हम समझते है कि हमारे प्रभाव को अधिकतम करने के लिए, रोटरी को नवीन साझेदारियों को स्थापित करना होगा, केवल हमारे संगठन में ही सभी स्तरों पर नहीं, बल्कि रोटरी के बाहर भी।

हमारी दूसरी बड़ी साझेदारी पहल रोटरी शांति केंद्र कार्यक्रम है। एक दशक से थोड़े अधिक समय में, हमारे शांति केन्द्रों ने 1,100 से अधिक व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया है। इस कार्यक्रम के माध्यम से, रोटरी शांति दूत उन कौशलों को विकसित करते है जो उनके लिए उनके समुदायों और विश्व भर में शांति एवं संघर्ष समाधान के नेतृत्वकर्ता एवं उत्प्रेरक के रूप में सेवा देने के लिए जरुरी है।

साझेदारियों पर संयुक्त समिति, जिसमें रोई निदेशक और संस्थान के ट्रस्टी शामिल है, के सतत कार्यों के कारण रोटरी साझेदारियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। *Rotary.org* में साझेदारी पृष्ठ (*About Rotary* पर जाएं, फिर *Partners* का चयन करें) पर भारी मात्रा में जानकारी है। कृपया कुछ मिनट देकर पृष्ठ को देखें। साझेदारों के बारे में अधिक जानने के लिए पृष्ठ को नीचे तक स्क्रॉल करने का ध्यान रखें और - सबसे महत्वपूर्ण - कैसे आपका क्लब या मंडल शामिल हो सकता है।

चूंकि हम 2018 की ओर अग्रसर है और हम नए वर्ष में लिए जाने वाले संकल्पों के बारे में विचार करते है, हमारे समर्पित साझेदारों के साथ हमारा इंतज़ार कर रहे सेवा अवसरों के बारे में बड़े सपने देखें।

2018 को, रोटरी जो कुछ भी प्रदान करती है उसका लाभ लेने वाला वर्ष बनाइये और देखिये कि कैसे साझेदारियों की ताकत का इस्तेमाल करके हम अधिक उपयोगी और प्रभावी बन सकते है।

नए वर्ष के लिए आपको शुभकामनाएं।

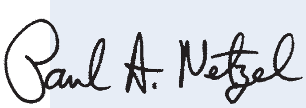

पॉल ए नेटज़ेल

फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

फाउंडेशन के बारे में
अपने विचार मुझे भेजें।
Paul.Netzel@rotary.org.
हम सुन रहे हैं।

Häcker

kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR	MANGALURU
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000	7899119955

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

रोटेरियन विभाजनकारी गतिविधियों का मुकाबला करें

रशीदा भगत

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक सरकार ने भारत और बांग्लादेश के रोटेरियनों से निवेदन किया है कि वे दोनों देशों की एकता को कमज़ोर करनेवाली विभाजनकारी ताकतों का सामना करें। उन्होंने भारतीय रोटेरियनों से कहा कि वे, ''साहसी बनें और देश में होनेवाली विभाजनकारी गतिविधियों का न सिर्फ विरोध करें बल्कि उनका डटकर मुकाबला भी करें। आपको यह कोशिश करनी है और सुनिश्चित करना है कि हमारे लोगों की एकता और अखंडता कायम रहे।''

रोटरी इंटरनैशनल डिस्ट्रिक्ट 3240 (भारत) और 3282 (बांग्लादेश) की बहु-ज़िला (मल्टी-डिस्ट्रिक्ट) कॉंफरेंस *सेतुबंधन* का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि सबसे पहले ''भारत और बांग्लादेश, दोनों ही देशों के रोटेरियनों को अपने-अपने देश में वर्तमान स्थिति का जायज़ा लेना चाहिए। भारत पर पहले टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा, ''भारत में इस वक्त हालात अच्छे नहीं हैं। वे बद से बदतर होते जा रहे हैं। हमारे देश के धर्मनिरपेक्षता के ढाँचे पर ज़बर्दस्त हमला हो रहा है और लोकतंत्र खतरे में है। विभाजनकारी ताकतें देश के लोगों को विभाजित करने की कोशिश में लगी हैं खासकर उन लोगों को जो निचले तबके के हैं, मजदूर हैं, और अपने भोजन की सुरक्षा, आश्रय, कपड़ों, स्वास्थ्य और जीवनयापन की मूलभूत समस्याओं का हल निकालने में सक्षम नहीं हैं।''

सरकार ने कहा कि ''जब तक हम अपने ही देश में इन समस्याओं का हल नहीं निकाल सकते तो भारत और बाग्लादेश के बीच दोस्ती,

संबंध और सेतु के नारे लगाने में क्या तर्क है?''

इसी तरह उन्होंने कहा, ''बांग्लादेश में भी स्थिति अच्छी नहीं है। वे कुछ तत्व जो बांग्लादेश की स्वतंत्रता और स्वाधीनता से खुश नहीं हैं, धार्मिक असहिष्णुता फैलाकर वातावरण दूषित कर रहे हैं। वे बांग्लादेश के लोगों की एकता और अखंडता को कमज़ोर करने की कोशिश में लगे हैं। इन दोनों ही देशों में लंबे हाथ सक्रिय हैं। इसलिए मैं बांग्लादेश के रोटेरियनों से भी अपील करता हूँ कि अपने लोगों की एकता मज़बूत करने के लिए आप प्रगाढ़ कोशिश करें। आप तभी भारत के साथ मैत्री का सेतु बनाने के लिए अनिवार्य कदम उठा सकते हैं।''

मुख्यमंत्री बने ऑनरेरी रोटेरियन

रो ई मंडल 3240 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर (डीजी) सुनील सराफ ने मुख्यमंत्री से रोटरी क्लब अगरतला सिटी का ऑनरेरी सदस्य बनने की अपील की और उनके तुरंत तैयार हो जाने पर उन्हें रोटरी पिन भी दिया गया।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक सरकार अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सेतुबंधन का उद्घाटन करते हुए एक दीपक को जलाते हैं, उनके बाईं ओर रो ई मंडल 3282 के डी जी तौयुब चौधरी और रो ई मंडल 3240 डीजी सुनील सराफ हैं और उसके दाएं ओर पर बांग्लादेश रेलवे मंत्री माज़िबूल होक और रोटरी क्लब अगरतला सिटी के अध्यक्ष डॉ एस के बानिक हैं।

सभा को संबोधित करते हुए आरआई के पूर्व प्रेसिडेंट कल्याण बेनर्जी ने कहा कि वे सेतुबंधन में भाग लेने के लिए आए बांग्लादेश के रोटेरियनों का इतना बड़ा दल (800 में से 660 डेलिगेट यानी प्रतिनिधि बांग्लादेश से थे) देख कर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डी आईज़ेनहॉवर के शब्दों को दोहराया कि ''यदि सिर्फ लोग साथ आ जाएं, तो देश भी साथ आ जाएंगे,'' और कहा, ''और आज आप भी बिल्कुल वही कर रहे हैं - लोगों को साथ ला रहे हैं - सिर्फ ढाका या कोलकाता में नहीं बल्कि अगरतला जैसी छोटी जगहों में जहाँ पर मैं यह कह सकता हूँ कि लोग बहुत गर्मजोशी से मिलते हैं। छोटी जगहों में निश्चित रूप से मज़बूत और गहरी दोस्तियाँ बनती हैं। वहाँ लोग स्थायी रिश्ते बनाते हैं।''

उन्होंने कहा, ''मेरे ख्याल से एक और अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ही ने कहा था कि यदि मैं हर गाँव और हर कस्बे में एक रोटरी क्लब शुरू कर पाता तो ज़रूर करता जिससे हर जगह विकास, उन्नति, सौहार्द्रता और शांति सुनिश्चित हो जाती। और यदि आप इस बात पर वाकई गौर करें तो यह बात सच है, है न?''

बेनर्जी ने कहा कि रोटरी के अनेक कार्यों में से सिर्फ एक का उदाहरण देना काफी होगा. ''इंटरनैशनल यूथ एक्सचेंज प्रोग्रैम में, एक देश के छात्र दूसरे देश के रोटेरियनों के घरों में रहते हैं, उनका जीवन जीते हैं, उनके स्कूलों में पढ़ते हैं, उनका भोजन खाते हैं। यकीन मानिये, यह एक ज़िंदगी बदल देनेवाला प्रोग्रैम है। जब वे लौटते हैं, तो वे पहले जैसे बिल्कुल नहीं रहते। वे अब दुनिया को बेहतर समझते हैं, ज़्यादा सहिष्णु होते हैं, अपनी खुशियाँ और ग़म बाँटते हैं, और न सिर्फ छात्रों बल्कि उनके होस्ट (मेज़बान) परिवारों, होस्ट भाइयों और होस्ट बहनों के लिए भी यह एक ज़िंदगी बदल देनेवाला अनुभव होता है। यदि आपने अभी तक इसका अनुभव नहीं लिया है, तो इस प्रोग्रैम को ज़रूर आज़माएं।''

3240-3282 एक्सचेंज प्रोग्रैम

बेनर्जी ने सुझाव दिया कि वे डिस्ट्रिक्ट 3240 और 3282 के बीच छात्रों के एक साल तक के एक्सचेंज (आदान-प्रदान) से इस प्रोग्रैम की शुरुआत कर सकते हैं। उन्होंने हॉल में बैठे माता-पिता से कहा, ''मेरा विश्वास कीजिये, कृपया इस बात की चिंता नहीं कीजियेगा कि आपका बच्चा स्कूल में एक साल

विभाजनकारी ताकतें देश के लोगों को विभाजित करने की कोशिश में लगी हैं खासकर उन लोगों को जो निचले तबके के हैं, मजदूर हैं, और अपने भोजन की सुरक्षा, आश्रय, कपड़ों, स्वास्थ्य और जीवनयापन की मूलभूत समस्याओं का हल निकालने में सक्षम नहीं हैं।

त्रिपुरा के मुख्य मंत्री
माणिक सरकार

सेतुबंधन के संयोजक बहारुल इस्लाम मजूमदार, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी को स्मृति चिन्ह के साथ सम्मानित कर रहे हैं। चित्र में मंडल 3282 के डी जी तैयुब चौधरी और मंडल 3240 के डी जी सुनील सराफ भी शामिल हैं।

गँवा देगा। ये परीक्षाएँ मायने नहीं रखतीं क्योंकि आपके बच्चे को वह अनुभव हासिल होगा जो उसे कहीं और नहीं मिल सकता, फिर चाहे आप कितना भी पैसा क्यों न खर्च कर लें।''

और आईवाईई प्रोग्रैम को दो ही जगहों तक सीमित क्यों रखा जाये, उन्होंने पूछा। ''अपने बच्चों को भारतीय उपमहाद्वीप की जानकारी मिलने दीजिये - राजस्थान, कन्याकुमारी, भुबनेश्वर, मुंबई, पुणे। एक अद्भुत, विकास करता हुआ और बदलता हुआ जग हमारे आसपास है - हमें उसका हिस्सा बनना चाहिए। और यदि आपको मेरी सहायता चाहिये तो मुझे बताइये मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ। अब एक पूर्व आरआई प्रेसिडेंट और पूर्व टीआरएफ ट्रस्टी चेयर होने के बाद मैं रोटरी में बिल्कुल बेरोज़गार हूँ। यदि आपको मेरी मदद की ज़रूरत है तो मुझे अपनी मदद करने का मौका दें। मेरे पास आपके लिए बहुत वक्त है।''

बेनर्जी ने कहा कि आरआई प्रेसिडेंट और टीआरएफ ट्रस्टी चेयर रहते हुए दोनों ही वक्त उनके मुख्य लक्ष्यों में से एक था बेघर लोगों के लिए कम लागत के मकान बनाना एक सादा, ''300 स्क्वॉयर फीट का मकान, टाइल्स की छत और एक शौचालय के साथ। ऊपर लगे एक छोटे से टैंक से जुड़ा हुआ एक छोटा सा पंप, बस। आपने एक घर दे दिया एक आश्रय, जिसका मतलब होता है सुरक्षा।'' यह बताते हुए उन्होंने सूखे और बाढ़ जैसी विपदाओं से अकसर झकझोर दिये जानेवाले बांग्लादेश में बनाये गए कम लागतवाले मकानों को भी याद किया। वहाँ 1991 में भयंकर चक्रवात आया था जिसमें 1,35,000 लोगों की मौत हो गयी थी और हज़ारों घरों का सर्वनाश हो गया था। बेनर्जी ने याद किया कि औरों के साथ रोटरी ने भी वहाँ कम लागत के मकान बनाये थे। (वर्ष 1997-98 में देश में 53 क्लबों को टीआरएफ से मिली मैचिंग ग्रॉंट की 636,000 डॉलर की राशि से कम लागत के 530 मकान निर्माण करके लाभार्थियों (बैनेफिशियरी) को दिये गए थे।)

एक परिवार को, जिसके पास या तो मकान नहीं था या जिसने उसे प्राकृतिक विपदा में गँवा दिया था, घर देने से मिलनेवाली संतोष की भावना से बढ़कर कोई भावना नहीं थी। ''इसलिए, जाकर मकान बनाइये। एक बेघर को अपना घर होने से जीवन में एक नया अर्थ मिलता है,'' उन्होंने कहा और रोटेरियनों से अपील की कि वे शौचालय बनाकर इस बात को सुनिश्चित करें कि खुले में शौच जाने की प्रथा बंद हो। उन्होंने कहा कि परिवारजनों के खुले में शौच जाने से अनेक तरह की भयंकर संभावनाएं खड़ी हो जाती हैं। इस संदर्भ में उन्होंने भीड़ से खचाखच भरे मुंबई शहर के आरे मिल्क कॉलोनी इलाके में एक तेंदुए द्वारा एक बच्चे पर हमला किये जाने की बात बताई।

कम लागत के स्कूल

बेनर्जी ने पीछे मुड़कर देखते हुए टीआरएफ चेयर की हैसियत से पिछले वर्ष एक आखिरी काम कर पाने की अपनी कोशिश पर संतोष ज़ाहिर किया। ''वह काम था ट्रस्टियों से उन जगहों में, जहाँ स्कूल नहीं थे, कम लागत के — 2-3 कक्षाओं के, ग्रामीण स्कूल निर्माण करने की मंज़ूरी लेना। उन जगहों पर बच्चों को नज़दीक के स्कूल तक पहुँचने के लिए या तो मीलों पैदल चलना पड़ता था या फिर साइकिल चलाकर जाना होता था। और यदि वे लड़कियाँ हों तो उन्हें स्कूल जाना पूरी तरह बंद करना पड़ता है। यह बात स्वीकार नहीं की जा सकती। आज के दिन और युग में तो नहीं । न आधुनिक भारत में और न ही बांग्लादेश में। तो आप इकट्ठे होइये, कोई सरकारी या खाली पड़ी या मुफ्त ज़मीन लीजिये, और एक स्कूल का निर्माण कीजिये। यह आपके जीवन में सबसे ज़्यादा संतोष देनेवाली बात होगी।''

उन्होंने रोटेरियनों को बताया कि अब वे टीआरएफ ग्लोबल ग्रॉंट की राशि को स्कूल के निर्माण के लिए प्रयोग में ला सकते हैं, लेकिन दिये गए दिशानिर्देशों का पालन करते हुए (रोटरी

अब एक पूर्व आरआई प्रेसिडेंट और पूर्व टीआरएफ ट्रस्टी चेयर होने के बाद मैं रोटरी में बिल्कुल बेरोज़गार हूँ। यदि आपको मेरी मदद की ज़रूरत है तो मुझे अपनी मदद करने का मौका दें। मेरे पास आपके लिए बहुत वक्त है।

पीआरआईपी
कल्याण बेनर्जी

न्यूज़ का अगस्त 2017 का अंक देखें *https://rotarynewsonline.org/now-global-grants-low-cost-shelters-simple-schools/*)। ये दिशानिर्देश आरआई साउथ एशिया ऑफिस से भी लिये जा सकते हैं; ''या फिर आप मुझे लिख सकते हैं। चलिये हम भारत को पूरी तरह साक्षर बनाएँ,'' उन्होंने कहा।

एक साक्षर भारत

भारत को पूरी तरह साक्षर बनाना बहुत कठिन काम है और अकसर पूछा जाता है कि क्या ऐसा रोटरी द्वारा किया जा सकता है? ''जैसा मैंने हमेशा कहा है कि पोलिओ प्लस की वजह से दुनिया रोटरी को जान पाई, और ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह कि रोटेरियन खुद को जान पाए। ज़रा सोचिए। हम जानते हैं कि हम वह सब कर सकते हैं जो हम करना चाहें, और जो किया जाना चाहिए। किसी ने एक बार रोटरी की परिभाषा बयान करते वक्त कहा था कि इसमें माता-पिता की कोमलता, मृदुता एवम् दयालुता है और सरकार की शक्ति। और रोटरी में इतने सालों के मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया है कि हम वाकई में यही हैं जो यह परिभाषा हमारे बारे में कहती है।''

मुख्यमंत्री से रोटरी क्लब अगरतला सिटी का ऑनरेरी सदस्य बनने की अपील की और उनके तुरंत तैयार हो जाने पर उन्हें रोटरी पिन भी दिया गया।

डीजी **सुनिल सराफ**

बेनर्जी ने 800 रोटेरियनों की प्रभावशाली सभा में अपना आखिरी विचार कुछ यूँ रखाः ''हम अपने चौथे एवेन्यू ऑफ सर्विस - अंतर्राष्ट्रीय सेवा, सहयोग, समझदारी और शांति - की बहुत बात करते हैं। रो ई के भी ''अपने काफी प्रचारित पीस प्रोग्रैम और पीस स्कॉलरशिप हैं। लेकिन मैं अकसर सोचता हूँ कि क्या हमारे प्रोग्रैम और स्कॉलरशिप के कारण दुनिया कुछ और शांतिमय हुई है? क्या हम कोई बदलाव ला रहे हैं या शांति ला रहे हैं? और मैं उससे संतुष्ट नहीं हूँ जो हम कर रहे हैं। मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आप संतुष्ट हैं?''

रोटेरियनों को इस बात पर ध्यान देना चाहिये कि वे जो कर रहे हैं क्या वह ठीक है, या उसमें कुछ बदलाव करने की ज़रूरत है, या फिर उन्हें कुछ और करना चाहिए। ''मुझे अकसर लगता है कि हमें दुनिया से ज़्यादा अपने घर के पास - शायद अपने ही घरों में - ज़्यादा शांति चाहिए।

रो ई मंडल 3240 और 3282 के डीजी और उनके जीवन साथी उपहार का आदान-प्रदान करते हुए।

दाएं से: रो ई मंडल 3240 के डी जी सुनील सराफ, रो ई मंडल 3282 के डी जी तायुब चौधुरी, त्रिपुरा के मुख्य मंत्री माणिक सरकार, बांग्लादेश रेलवे मंत्री माज़िबूल होक और रोटरी क्लब अगरतला सिटी के अध्यक्ष डॉ एस के बानिक।

नागालैंड और बाकी देश के बीच शांति चाहिए। मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, और हमारे छात्रों के बीच शांति चाहिए जब वे देश के बाकी हिस्सों में पढ़ने जाते हैं और वहाँ उनके साथ अच्छा सलूक नहीं किया जाता। क्या ये हम भारतीय रोटेरियनों और हमारे पड़ोसियों के लिए प्राथमिकता नहीं होनी चाहिएं,'' उन्होंने सवाल किया और अंग्रेज़ी की एक कहावत कही जिसका मतलब है कि संपूर्ण विश्व की चिंता करना मुश्किल नहीं है, असली समस्या तो अगले दरवाज़े के पीछे रह रहा वह व्यक्ति है।

एक बड़ी चुनौती

होस्ट क्लब आरसी ऑफ अगरतला सिटी के प्रेसिडेंट डॉ. एसके बानिक ने कहा कि हालाँकि उनका क्लब सिर्फ 40 सदस्योंवाला छोटा क्लब है, उन्होंने पहली बार एक कॉंफरेंस, और वह भी अंतरराष्ट्रीय कॉंफरेंस जिसमें 800 डेलिगेट (प्रतिनिधि) आनेवाले थे, की चुनौती स्वीकार की। बांग्लादेश से आ रहे 660 प्रतिनिधियों के लिए कमरे ढूँढ़ना, उनके आने-जाने के लिए वाहनों और बाकी सहूलियतों का इंतज़ाम करना बहुत बड़ी चुनौती थी लेकिन हमारे रोटेरियनों ने इस सेतुबंधन के आयोजन के लिए एक टीम के रूप में काम किया।

उन्होंने कहा कि वे तब हतप्रभ रह गए थे जब एक स्कूल में उनसे पूछा गया कि जब भारत सरकार ही स्वच्छ भारत कर रही है तो रोटरी अब क्या करेगी। लेकिन उन्होंने तत्परता से सूझबूझ वाला जवाब दिया, जो भी सरकार नहीं कर पाएगी, रोटरी करेगी।

यह कहते हुए कि त्रिपुरा में बहुत अच्छे मानव सूचकांक संकेतक हैं, उन्होंने बताया कि इस छोटे से उत्तर-पूर्व राज्य में जहाँ साक्षरता सौ प्रतिशत है वहीं माता और शिशु मृत्यु दर देश के बाकी हिस्सों से काफी कम है। और हमारे यहाँ संस्थागत प्रसव की संख्या सबसे ज़्यादा है; मैं जानता हूँ क्योंकि मैं पेशे से स्त्रीरोग विशेषज्ञ (गाइनिकॉलोजिस्ट) हूँ। और चेन्नई जैसे शहर से आनेवाले मेरे जैसे व्यक्ति के लिए शहर को इतना स्वच्छ और हरा-भरा देखना आनंददायी आश्चर्य था।

डॉ. बानिक ने बताया कि क्लब का सिद्धांत (मोटो) वो प्रॉजेक्ट करना है जिन्हें आगे भी चलाया जा सके; हमारे कुछ विशेष प्रॉजेक्ट हैं और उनमें से एक है हाल ही में जोरहाट में खोला गया डायलिसिस सेंटर जहाँ पर कम कीमत में डायलिसिस की सुविधायें मुहैया कराई जाती हैं। और अब उनका लक्ष्य है बांग्लादेश के क्लबों के साथ लंबे समय तक चलाये जा सकनेवाले संयुक्त (जॉंएंट) प्रॉजेक्ट की रूपरेखा तय करना।

डीजी सराफ ने बताया कि डिस्ट्रिक्ट 3240 में नौ राज्य, पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्से आते हैं और भौगोलिक रूप से यह दुनिया की सबसे बड़ी डिस्ट्रिक्ट में से एक है। जब मैंने डीजी की ज़िम्मेदारी संभाली तब 87 क्लब थे, अब 88 हैं। ज़्यादातर क्लब स्कूलों की मूलभूत आवशकताओं की वृद्धि पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। और मैं अपने दौरों के वक्त यह देखकर बहुत खुश हूँ कि रोटेरियन स्कूलों में विकास कर रहे हैं और समाज को स्वच्छ जल दे रहे हैं।

डिस्ट्रिक्ट 3282 के डीजी तयूब चौधरी ने कहा कि वे और उनके रोटेरियन डिस्ट्रिक्ट 3240 के साथ मिलकर जॉंएंट प्रॉजेक्ट की रूपरेखा तैयार करने और उन्हें साकार करने के लिए बहुत खुश हैं। बांग्लादेश के रेल मंत्री मज़ीबुल हक़ ने विशेष भाषण दिया।

रॉबींद्रो भवन, जहाँ कॉंफरेंस आयोजित की गई थी, से एक रंग-बिरंगी और प्रभावशाली रैली निकाली गई जिसने रोटरी की सार्वजनिक छवि बढ़ाने का अपना उद्देश्य भरपूर निभाया।

चित्र: रशीदा भगत

किसी ने एक बार रोटरी की परिभाषा बयान करते वक्त कहा था कि इसमें माता-पिता की कोमलता, मृदुता एवम् दयालुता है और सरकार की शक्ति। और रोटरी में इतने सालों के मेरे अनुभव ने मुझे सिखाया है कि हम वाकई में यही हैं जो यह परिभाषा हमारे बारे में कहती है।

पीआरआईपी **कल्याण बेनर्जी**

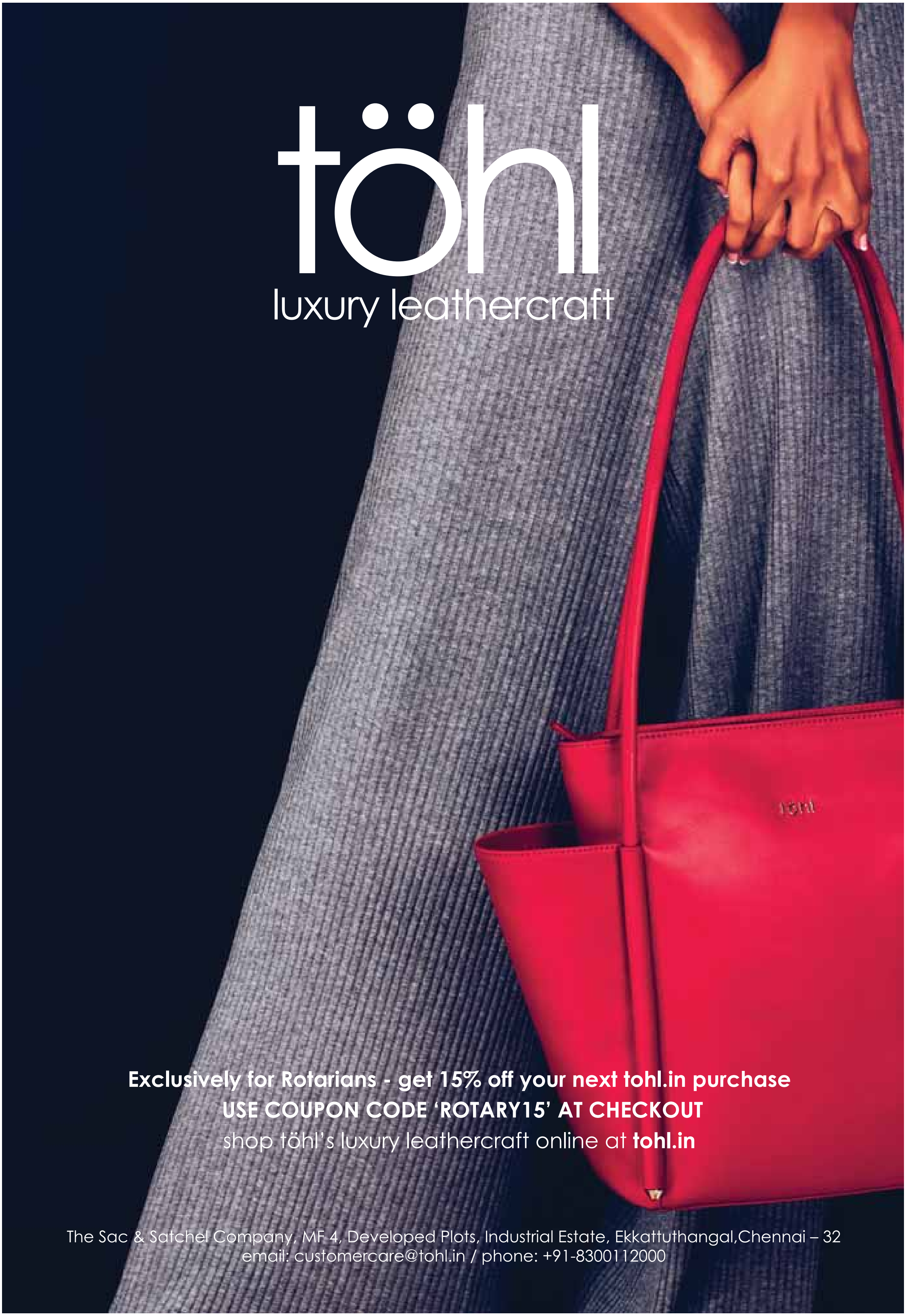
töhl
luxury leathercraft
Exclusively for Rotarians - get 15% off your next tohl.in purchase
USE COUPON CODE 'ROTARY15' AT CHECKOUT
shop töhl's luxury leathercraft online at tohl.in
The Sac & Satchel Company, MF 4, Developed Plots, Industrial Estate, Ekkattuthangal,Chennai – 32
email: customercare@tohl.in / phone: +91-8300112000

सेतु निर्माण

ऊपर: त्रिपुरा नर्तक मनोरंजन कार्यक्रम के लिए तैयार; नीचे: रोटरी क्लब अगरतला सिटी के अध्यक्ष डॉ एस के बानिक (चरम बाएं) और डीजी सुनील सराफ द्वारा पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी का हैहवाई अड्डे पर स्वागत।

डीजी सुनील सराफ (बाएं से तीसरे) और उनकी पत्नी ज्योति बांग्लादेश के प्रतिनिधियों के साथ।

ऊपर बायीं ओर : *मंडल 3240 के डीजी सुनील सराफ और मंडल 3282 के डीजी तय्यब चौधरी; ऊपर दायीं ओर: रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने के लिए एक रैली; नीचे: ली के लिए तैयार डीजी सुनील सराफ, रोटरी क्लब अगरतला सिटी के अध्यक्ष डॉ एस के बानिक और (दाएं) पीडीजी स्वपन चौधरी।*

चित्र: रशीदा भगत; एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

होसपेट के रोटेरियनों की समाज सेवा

वी मुत्तुकुमारन

कर्नाटक के बेल्लारी ज़िले में तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित एक छोटा सा नगर होसपेट रोटरी का बहुत आभारी है क्योंकि स्थानीय क्लब (मंडल 3160) ने स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा हेतु अनेक परियोजनाएं शुरू की है।

टीआरएफ समारोह से अलग हटकर, रोटरी क्लब होसपेट के अध्यक्ष पी. एस. गुरुनाथ और उनके दल ने स्थानीय कारोबारियों के साथ एक सीएसआर बैठक की और उनका मुख्य एजेंडा WinS (स्कूलों में WASH) परियोजनाओं पर था जो 10-12 सरकारी स्कूलों को लक्षित करेगा। ''हम बच्चों की मानसिकता बदलेंगे और लड़के एवं लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय खण्ड बनाकर, पीने के पानी की इकाइयाँ स्थापित करके एवं कन्या छात्रों के मध्य मासिक धर्म स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाकर बच्चों को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति संवेदनशील बनाएँगे,'' गुरुनाथ कहते है।

रेलवे स्टेशन रोड के एक तरफ स्वास्थ्य सुविधा स्थापित करने और समाज में अपनी पहुँच बढ़ाने के कारण क्लब लोकप्रिय है। यहाँ तक कि क्लब का विशाल हॉल भी सार्वजनिक बैठकों के लिए उपलब्ध है। पी. बाल सुब्बा शेट्टी रोटरी फिजियोथेरेपी केंद्र और आर. पेमपथि रोटरी नेत्र अस्पताल ''हमारी प्रभावी स्वास्थ्य सेवा के ज़रिये लोगों से जुड़ने के पर्याय है।'' मई 2011 से, डॉ. पी. जयाराव की अध्यक्षता में चल रहा फिज़ियोथेरेपी केंद्र रोज़ाना 80-100 मरीजों का इलाज कर रहा है। मस्तिष्क पक्षाघात से पीड़ित बच्चों को सँभालने के साथ ही, वे दुर्घटनाओं, लकवों एवं पीठ, घुटने और गर्दन दर्द के लिए भौतिक विद्युत चिकित्सा का संचालन करते है।

इस 10 साल पुराने नेत्र अस्पताल ने 11,000 मोतियाबिंद की सर्जरियाँ की है और उनमें से हर माह लगभग 100 सर्जरियाँ मुफ्त में करते है। मोतियाबिंद की प्रक्रिया के लिए मरीजों को चुनने के लिए एक साप्ताहिक नेत्र शिविर आयोजित किया जाता है। दानकर्ताओं की सुविधा के लिए मार्च 2018 से पहले एक नेत्र संग्रह केंद्र खोला जाएगा क्योंकि अभी वे पूरी तरह 65 कि.मी. दूर स्थित बेल्लारी के नेत्र बैंक पर आश्रित है।

डायलिसिस एवं अन्य सुविधाएं

होसपेट के किडनी के मरीजों के लिए, पी बाला सुब्बा शेट्टी रोटरी डायलिसिस केंद्र जिसे वैश्विक अनुदान द्वारा समर्थित एक मियादी उपहार के ज़रिये शुरू किया गया था, एक वरदान है। नूर अहमद

(53) रोटरी की सुविधा आने से पहले हफ्ते में तीन बार डायलिसिस के लिए या तो बेल्लारी या हुबली, 140 कि. मी. दूर, तक की यात्रा करते थे। अब, इस डायलिसिस केंद्र का उपयोग कर वह बहुत सारा पैसा और समय बचाते है। वह कहते है, ''यह बहुत ही आरामदायक है; सभी परीक्षण स्थानीय स्टाफ द्वारा किये जाते है। छह डायलिसिस मशीनों के साथ, केंद्र रोज़ाना 11-12 मरीजों को संभालता है और प्रत्येक दौर का रु 900 शुल्क लेता है।''

रोई निदेशक सी भास्कर, जिन्होंने टीआरएफ सेमिनार की अध्यक्षता की, ने क्लब के द्वारा स्थापित सभी चिकित्सीय सुविधाओं का दौरा किया और सुझाव दिया कि रोटेरियन कोशिश करके आगे भी चिकित्सीय परीक्षणों एवं इलाज की कीमतों को कम कर सकते है। ''आपको कोशिश करके वैश्विक साझेदार ढूँढना चाहिए और फिर वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करना चाहिए ताकि आपके द्वारा दी जा रही सेवाओं की कीमत को आर्थिक सहायता मिल सके।'' होसपेट में समुदाय की इतने उत्साह के साथ सेवा करने के लिए उन्होंने क्लब के सदस्यों की प्रशंसा की।

डॉ पल्लवी अमरनाथ, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, कहती है कि एक किडनी रोग विशेषज्ञ 15 दिन में एक बार डायलिसिस केंद्र का मुआयना करने आते है। ''पिछले दो सालों में, 5,762 डायलिसिस प्रक्रियाएं की गई, जिसमें से 480 मुफ्त में की गई थी,'' डायलिसिस ईकाई के परियोजना अध्यक्ष रोटेरियन श्रीनिवास राव कहते है। वर्तमान में, 42 मरीजों को उपचार मिल रहा है। लेकिन सबसे पुरानी परियोजना 1991 में शुरू हुआ AAPI धर्मार्थ दवाखाना है, जिसे यूएस के एक एनआरआई एवं होसपेट के पूर्व निवासी डॉ. विजयनगर द्वारा हर माह 1,000 डॉलर का योगदान प्राप्त होता है। डॉ अमरनाथ कहते है, ''दो दिन की मुफ्त दवा और परामर्श के लिए हर बार आने पर रु 10 का नाममात्र शुल्क लिया जाता है।'' गर्भवती महिलाओं के लिए मुफ्त प्रसवोत्तर जांच; आयरन और कैल्शियम की गोलियों का मुफ्त वितरण; रक्तहीनता से पीड़ित गर्भवती महिलाओं के लिए खत इंजेक्शन; और अस्थमा से पीड़ित मरीजों के लिए मुफ्त में नेब्युलाईसेशन; इस सामान्य चिकित्सालय की प्रमुख विशेषताएं है। स्वास्थ्य केंद्र में रोज़ाना लगभग 90 मरीज आते है।

दो डॉक्टरों द्वारा चलाई जा रही आशा परियोजना ने रोटरी का महत्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त किया और इसके अंतर्गत रोजाना लगभग 100 एचआईवी पॉजिटिव मरीजों को मुफ्त परामर्श दिया जाता है। व्यावसायिक केंद्र पर 80 शिक्षार्थियों के लिए टैली और बुनियादी कंप्यूटर ऑपरेशनों पर दो कोर्स संचालित किए जाते है। यह पहले ही 3,000 लाभार्थियों को प्रशिक्षित कर चुका है जिनमें कंप्यूटर बेचों में नामांकित छात्रों के अलावा, अधिकतर महिलाएं और छोटे व्यापारी है।

नियमित स्वास्थ्य शिविर क्लब को समुदाय से जुड़े रहने में सहायता करते है। ''हमारे एक्यूप्रेशर शिविरों के लिए भी अच्छी प्रतिक्रिया है,'' गुरुनाथ कहते है।

ध्यान केन्द्रित करने योग्य क्षेत्र

स्वास्थ्य के मुद्दे पर, जून 2003 में एक मिलान अनुदान और एक प्रायोजक रोटरी क्लब यूनियन काउंटी, जॉर्जिया - मंडल 6910 - की सहायता से नगर के बाजार क्षेत्र में एक शौचालय परिसर का

रोटरी स्कूल की प्रमुख शिक्षिका भारती होसकरी, क्लब सचिव राजेश कोरिशेतर (बीच में) और निर्वाचित अध्यक्ष पी मुनी वासुदेव रेड्डी, कक्षा 9 के छात्रों और उनके शिक्षक के साथ।

बायें से: *रोटेरियन अब्दुल हक सैट, एआरआरएफसी विनोद बंसल, रो ई निदेशक सी भास्कर, पीडीजी आर गोपिनाथ और डायलिसिस प्रोजेक्ट के अध्यक्ष वाई श्रीनिवासा राव क्लब हॉल में।*

निर्माण किया गया था। सार्वजनिक सुविधालय में सामान रखने के एक कक्ष और यूरिनल ब्लॉक के अतिरिक्त पुरुषों के लिए सात और महिलाओं के लिए चार शौचालय इकाईयाँ है। ''हमने हाल ही में स्थानीय खरीददारों की जरूरतों के मुताबिक शौचालय परिसर के नवीनीकरण पर रु 3.5 लाख खर्च किये है, क्लब के अध्यक्ष-निर्वाचित डॉ पी मुनि वासुदेव रेड्डी कहते है। जल्द ही, सामान्य लोगों के लिए दो और शौचालय परिसर बनाए जाएंगे।

मंडल सचिव रोटेरियन तिरुपति नायडू कहते है कि एक मिलान अनुदान की मदद से 10 कम लागत वाले घरों, प्रत्येक 300 वर्ग फीट के जिनमें शौचालय संलग्न है और पानी की सुविधा है, को वर्ष 2000-01 में लाभार्थियों को सौंप दिया गया था। उन्होंने आगे कहा कि क्लब जल्द ही एक 100 प्रतिशत पीएचएफ संस्था बन जाएगा।

भारती होसाकेरी, रोटरी अंग्रेजी माध्यम उच्चतर प्राथमिक एवं उच्च विद्यालय की प्रधानाध्यापिका उत्साहित है कि आने वाले शैक्षणिक वर्ष में स्कूल कक्षा दसवीं तक होने वाला है। उन्हें आशा है कि 326 विद्यार्थी अगले साल बोर्ड परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। कक्षा 9 की छात्रा के. मंजुला उल्लासमय है। ''मैंने अपनी पढ़ाई को शिक्षकों द्वारा दिए गए हौसले और व्यक्तिगत कोचिंग से काफी सुधारा है। अगले वर्ष, हम सार्वजानिक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करके स्कूल को सम्मानित करवाएंगे,'' वह कहती है। एक वैश्विक अनुदान परियोजना के अंतर्गत क्लब ने रु 25 लाख खर्च किये जिसमें 50 सरकारी स्कूलों को स्मार्ट कक्षाओं के लिए ई-शिक्षण उपकरण दिए गए। मानसिक और शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए एक स्कूल शुरू किया जाएगा और जल्द ही नगरपालिका हमें ज़मीन देगी, गुरुनाथ आगे कहते है।

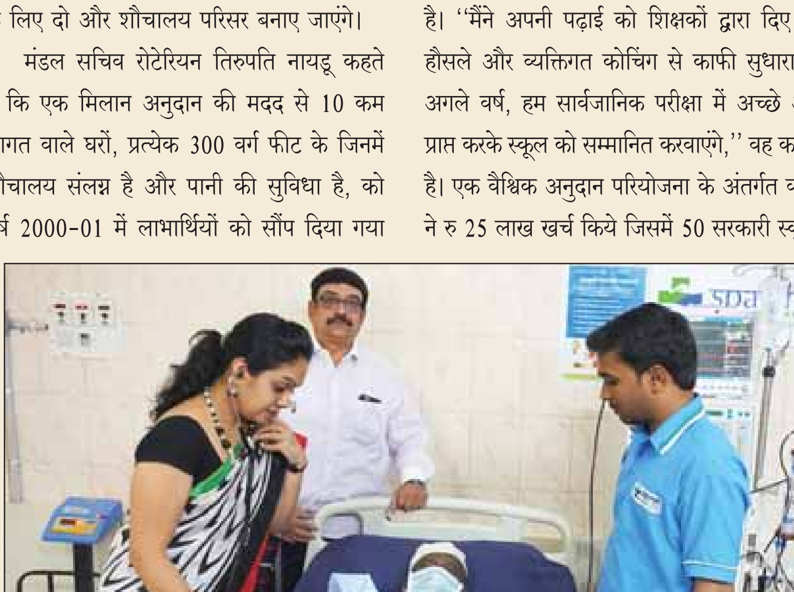

पी बाला सुब्बा शेट्टी रोटरी डायलिसिस सेंटर की मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉपल्लवी अमरनाथ, रोगी नूर अहमद की जांच करती हुयी, परियोजना सचिव अब्दुल हक सैट (बीच में) भी चित्र में शामिल है।

सदस्यता, टीआरएफ लक्ष्य

122 सदस्यीय क्लब, जिसने नौ नए सदस्यों को प्रवेश दिया, जल्द ही इसकी पहली महिला सदस्य को प्रवेश देने के लिए तैयार हो रहा है। टीआरएफ में, क्लब ने वर्ष 2016-17 के 24,000 डॉलर के लक्ष्य से बढ़कर इस वर्ष 30,000 डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया है। वर्ष 2000 से, होसपेट में खनन उद्योग में तेजी आई है, जिसके कारण हम हमारी परियोजनाओं के लिए दानकर्ता ढूंढ पाए है, क्लब के सचिव राजेश कोरिशेतर कहते है। लेकिन इस क्षेत्र में हवाई संपर्क एक समस्या है - इसके पास केवल दो निजी हवाईपट्टियाँ है, होसपेट से 35 कि.मी. दूर तोरानागल्लू में और नगर से 25 कि.मी. दूर कोप्पल ज़िले के जिनेगारा में।

सभी महत्वपूर्ण त्यौहार मनाए जाते है और अब क्लब क्रिकेट की ही तरह रोटेरियनों और इनरव्हील सदस्यों के माता-पिता एवं बच्चों को भी घर के अंदर खेले जाने वाले खेल जैसे कैरम, टेबल टेनिस और थ्रो बाल में प्रतिस्पर्धा करने की अनुमति देता है। विचार रोटेरियनों के बड़े परिवारों को हमारी गतिविधियों में शामिल करने का है, वह समझाते है। तीन रोटरेक्ट और दो इंटरेक्ट क्लबों के साथ, गुरुनाथ अब भी रोटरी की पहुँच को छात्र समुदाय तक विस्तृत करने की तलाश में है।

चित्र: वी मुत्तुकुमारण

परोपकार के लिए कला

टीम रोटरी न्यूज़

ठाणे अपटाउन, मंडल 3142, रोटरी क्लब ने ठाणे में कला भवन नामक एक आर्ट गैलरी में 'आर्ट फॉर चैरिटी (परोपकार के लिए कला),' पर दो दिवसीय एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। प्रदर्शनी में छियालीस कलाकारों ने अपनी पेंटिंग प्रदर्शित की, जिनकी सराहना 250 से अधिक दर्शकों ने की। कुल सैतीस चित्रों की बिक्री हुई जिससे कुल रु 2 लाख प्राप्त हुए। इस आय को क्लब और कलाकारों के बीच बांट दिया गया। क्लब का इरादा धन का उपयोग अपने हैप्पी स्कूल परियोजना के लिए धन करना है।

राशि एकत्र करने में मदद करने के अलावा, इस कार्यक्रम ने विशेष रूप से शौकीनों और नए पेशेवर कलाकारों को उनकी कलाकृति दर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान किया। क्लब के अध्यक्ष उषा मुरली ने कहा, ''अच्छी बुकिंग के साथ यह विशेष रूप से कुछ युवा कलाकारों की मदद करता है, जो अपने चित्रों को बढ़ावा देने के लिए संघर्ष कर रहे थे,'' और प्रदर्शनी ने रोटरी की सार्वजनिक छवि को भी बढ़ने में योगदान दिया है।

प्रदर्शनी का दौरा करने के बाद डीजीएन मोहन चंदावरकर ने कहा, ''हर व्यक्ति के पास छिपी प्रतिभा होती है। इन्हें एक आधारभूत संचरना से सम्बंधित कार्यक्रम के माध्यम से प्रोत्साहित करना स्वयं से बढ़कर सेवा का प्रतीक है।'' कैनन इंडिया के फोटो मेंटर सागर गोसावी द्वारा 'डिजिटल फोटोग्राफी के बुनियादी सिद्धांतों' पर एक कार्यशाला भी आयोजित की गई थी। रोटरी की हैप्पी स्कूल की सफलता की कहानियों के एक ऑडियो-विजुअल प्रदर्शन ने दर्शकों को इस परियोजना के लिए कुछ अप्रत्यक्ष दान देने के लिए प्रोत्साहित किया।■

पीआरआइडी अशोक महाजन, राजश्री बिड़ला, अध्यक्ष आदित्य बिड़ला फाउंडेशन फार कम्युनिटी इनिशीयटिवस एंड रूरल डेवलपमेंट, से रु 50 लाख का चेक प्राप्त करते हुए।

रोटरी के थैलेसीमिया केंद्र को एक ईनाम प्राप्त हुआ

टीम रोटरी न्यूज़

आदित्य बिड़ला फाउंडेशन सादायिक प्रयास और ग्रामीण विकास के अध्यक्ष राजश्री बिड़ला ने हाल ही में दान के रूप में रु 50 लाख थलसेमिया डे केयर सेंटर को दिया, जो ठाणे हिल्स की रोटरी क्लब, मंडल 3142, और बीएचईएल की एक पहल है। क्लब की ओर से पीआरआईडी अशोक महाजन ने चेक प्राप्त कियों है। उन्होंने पिछले साल भी इतनी ही राशि दान में दिया था।

रोटरी फाउंडेशन के लिए राजश्री सबसे बड़े व्यक्तिगत योगदानकर्ता है। टीआरएफ. में उनका योगदान ने 11 मिलियन को पार कर चुका है और उसे तत्कालीन आरआई अध्यक्ष जॉन जर्म ने अटलांटा कन्वेंशन में उन्हें एक क्रिस्टल देकर सम्मानित किया था।

क्लब अपने ट्रस्ट - ट्रयम्फ फाउंडेशन के माध्यम से थैलेसीमिया केंद्र संचालित करता है। ट्रयम्फ रक्त बैंक की स्थापना वर्ष 2013 में की गई थी, जो थैलेसीमिया के मरीजों और रक्त आधान की आवश्यकता वाले अन्य लोगों के लिए सबसे सुरक्षित रक्त और अवयव प्रदान करने के लिए एनएटी (न्यूक्लिक एसिड एम्पलिफिकेशन टेस्टिंग) तकनीक से लैस है। केंद्र अपने देखभाल के तहत 75 थैलेसीमिया बच्चों की मदद करता है। इसके स्थापना के बाद से, पीआरआईडी महाजन इसके मार्गदर्शक शक्ति के रूप में कार्य करते रहे है।■

भारत में रोटरी टी बी उन्मूलन की चुनौती को स्वीकार करे:

सौम्या स्वामीनाथन

रशीदा भगत

अब जब रोटरी एवं रोटरेरियनों ने पोलियो का भारत से भगाने में बड़ी जीत हासिल कर ली है, तो समय आ गया है कि "रोटरी इन्टरनेशनल टी बी उन्मूलन जो एक बड़ी समस्या है और जो असमान रूप से अधिकतर गरीब देशों को ही प्रभावित करती है को अगली चुनौती के रूप में स्वीकार करें।"

यह सुझाव आई सी एम आई (इण्डियन काउंसिल फॉर मेडिकल रिसर्च) की उपमहानिदेशक डॉ. सौम्या स्वामीनाथन द्वारा उन्हें रोटरी क्लब मद्रास पूर्व (मंडल 3232) की तरफ से उन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन की उपमहानिदेशक नियुक्त किये जाने के उपलक्ष में आयोजित अभिनन्दन समारोह में दिया गया। यह हैल्थ केयर के क्षेत्र में किसी भारतीय द्वारा धारण किये जाने वाला सर्वोच्च पद है।

क्लब की बैठक को सम्बोधित करते हुए जहाँ उनके सुविख्यात माता-पिता डॉ एम एस स्वामीनाथन, जो इस क्लब के मानद सदस्य है व डॉ. मीना स्वामीनाथन भी उपस्थित थे, डॉ सौम्या ने कहा कि पिछले 25 वर्षों में भारत में "हैल्थ केयर के क्षेत्र में जबर्दस्त तरक्की की है और इसमें पोलियो उन्मूलन बहुत बड़ी शायद सबसे बड़ी सफलता की कहानी है। उसमें रोटरी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। अब हमें हमारी अगली बड़ी वैश्विक चुनौती की ओर ध्यान देना चाहिए क्योंकि पोलियो की सफलता ने सहभागिता के महत्व को दर्शाया है।"

किसी भी अभियान के लिए सरकार के सहयोग की तो आवश्यकता पड़ती ही है साथ ही "नागरिक समाज और पोलियो के विरूद्ध जंग में गतिशील संगठनों जैसे रोटरी क्लबों, मीडिया, गेट्स फाउण्डेशन जैसे फंड जुटाने वाले बड़े संगठनों और निःसंदेह वैज्ञानिकों ने भी भूमिका निभाई।" विज्ञान ने टीकों पर कार्य - "वे कैसे कार्य करते हैं, कितनी खुराकें दी जाए, कम उम्र में दी जाए, एक टीके की जगह

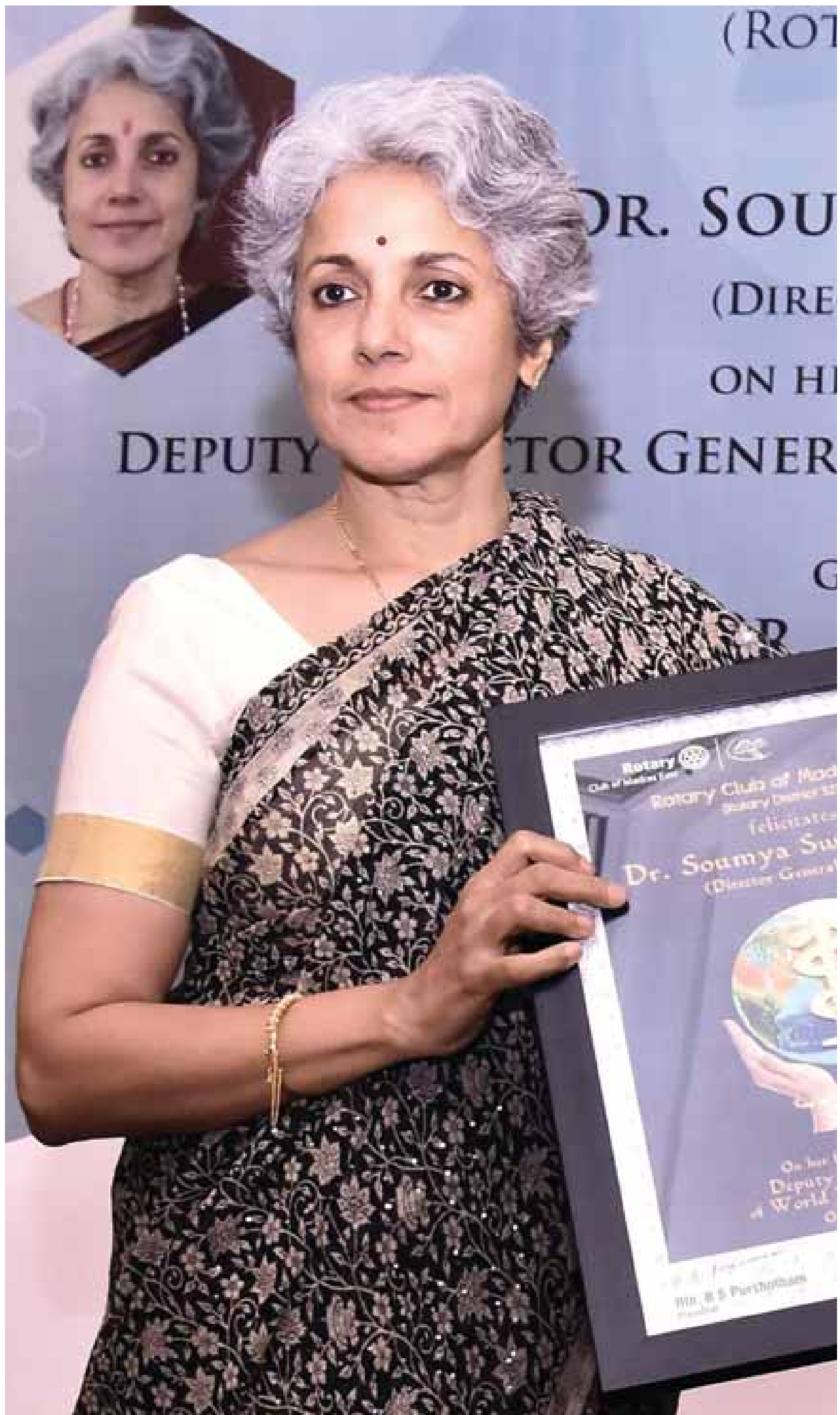

डॉ सौम्या स्वामिनाथन, उपमहानिदेशक, WHO और OCMR की मुख्य निदेशक।

रशीदा भगत

बाएँ से: *डॉ सौम्या स्वामिनाथन, आरसीएमई अध्यक्ष के बी एस पुरुषोत्तम, टी बी अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ पी आर नारायणन और आरसीएमई के सचिव पापाराव नल्लूरु।*

दूसरा टीका कब दिया जाए, जंगली पोलियो वायरस की तलाश के लिए पर्यावरणीय नमूनों की निगरानी कैसे करें आदि द्वारा पोलियो की सफलता में बहुत बड़ा योगदान दिया है।'' पर लोगों को बाहर निकलने और पोलियो की खुराक देने के लिए प्रोत्साहित करने में रोटरी ने अहम भूमिका निभाई है।

टी बी भारत में एक बहुत बड़ी चुनौती

डॉ सौम्या ने कहा कि गरीब देशों में भारत पर टी बी का बोझ सबसे ज्यादा है। ''भारत में टी बी के मामलों में कमी लाए बिना विश्व स्तर पर टी.बी. का उन्मूलन नहीं हो सकता। प्रतिवर्ष सामने आने वाले 10 मिलियन टी बी के मामलों में से अधिक नहीं तो तीन मिलियन तो भारत में टी बी के लिए उत्तरदायी कारक एच आई वी नहीं कुपोषण है। कुछ ऐसे जनजातीय क्षेत्र हैं जहाँ हर परिवार में एक टी बी का मरीज है।'' शहरी झुग्गी बस्तियों में भी यही कहानी है जहाँ समय पर रोग निदान नहीं हो पाता।

टी बी मुक्त चैन्नई के लिए पहल जिससे वे जुड़ी है से जुड़ने के लिए चैन्नई के रोटरी क्लबों का आह्वान करते हुए डॉ सौम्या ने कहा कि कई वर्षों की चर्चा के बाद तमिलनाडू के मुख्यमंत्री ईडाप्पडी के पालानिस्वामी ने टी बी मुक्त चैन्नई अभियान शुरू किया है। ''यह एक जन आन्दोलन है जिसमें कई एजेंसिया यह दिखाने के लिए साथ आई है कि आठ मिलियन से अधिक की आबादी के कम से कम एक शहर को तो हम टी बी मुक्त कर सकते हैं। इसे अभियान का मुख्य कार्य कार्यक्रम एवं निजी चिकित्सकों के बीच की कड़ी का काम करना है क्योंकि अनेक टी बी मरीज निजी क्षेत्र से हैं।'' इस पहल का नेतृत्व चेन्नई निगम ने ICMR और Reach नमक गैर सरकारी संगठन की संस्तापक डॉ नलिनी कृष्णन के साथ साझेदारी में किया जो अन्य गैर सरकारी संगठ, चिकित्सकों और टी बी रोगियों के बीच की कड़ी होगी ।

कई प्रसिद्ध हस्तियाँ भी इसके समर्थन में आगे आई है जैसे सूर्या और सुहासिनी मणिरत्नम जिन्होंने मुझे लिखा कि वह टी बी के लिए क्या कर सकती है। उन्हें दो बार टी बी हुआ था। अमिताभ बच्चन जो एक राष्ट्रीय हस्ती है उन्हें भी टी बी हुई जो किसी को नहीं बख्शाती। मैं ऐसे मेडिकल छात्रों को जानती हूँ जिनकी मौत टी बी से हुई क्योंकि उन पर दवाईयाँ भी बेअसर हो गई थी।

एक युवा वैज्ञानिक के रूप में हमें यह नहीं पता होता कि कौनसा रास्ता चुनना है। ऐसे में आपको एक संरक्षक और पथ प्रदर्शक की आवश्यकता होती है, जो आपको सही दिशा दिखाए और आपको आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त स्थान और आजादी दें।

एक उपेक्षित बीमारी

उन्होंने इस मुहिम में मीडिया को भी शामिल करने पर बल दिया ''मीडिया वालों के साथ खुलिए और उन्हें हैल्थ के बारे में सही जानकारी प्रदान कीजिए। नहीं तो गलत खबरें सामने आती है। हमारे देश में विज्ञान सम्प्रेषण अभी भी शैशव अवस्था में है। यह बढ़ रहा है पर हमें विज्ञान पर रिपोर्ट देने के लिए और पत्रकारों की जरूरत है।''

दुर्भाग्यवश बुरी खबरें सुर्खियाँ बटोरती है। डॉ सौम्या ने कहा और साथ ही उदाहरण दिया कि कैसे ''न्यूज चैनल डेंगू महामारी के दौरान हर साल बार-बार यह दिखाते हैं कि कैसे 24 घण्टों में डेंगू से 3 या 7 मौते हुई। मैं उनसे कहना चाहती हूँ इसी अवधि में भारत में हजार लोग टी बी से मारे गये, क्यों कोई भी इस बारे में रिपोर्ट नहीं देता।''

ऐसा इसलिए है क्योंकि यह लम्बे समय से चल रहा है और यह दिल्ली-मुम्बई या चैन्नई में नहीं अपितू दुर-दराज के इलाकों में हो रहा है और क्योंकि लोग महत्वपूर्ण नहीं है। इसी वजह से टी बी को उपेक्षित बीमारी कहा जाता है। मैं इस मुहिम में शामिल हुई क्योंकि मैं बच्चों के विकास के लिए स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण बनाना चाहती हूँ। मैं एक बीमारी को हाथ में लेकर यह दिखाना चाहती हूँ कि इसे खत्म किया जा सकता है। रोटरी ने अतीत में ऐसी कई चुनौतीपूर्ण लक्ष्य हाथ में लिए है और टी.बी. उन्मूलन भी बहुत चुनौतीपूर्ण काम है जिसके लिए 5 वर्षों के ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।''

अतीव की सुखद स्मृति

डॉ. सौम्या ने टी बी के क्षेत्र में अत्यधिक अनुभवी डॉ पी आर नारायणन द्वारा उनके परिचय के जवाब में कहा ''अब तक वे मेरा परिचय देते-देते तंग आ गये होंगे, किन्तु फिर भी वे ऐसा धैर्यपूर्ण करते हैं। वे मुझे भली भाँति जानते है। मेरे कैरियर का ज्यादातर

संरक्षक का परिचय

डॉ. सौम्या का इतने उच्च पद तक पहुँचना उनके परिवार, सहकर्मियों, सीनियर्स एवं उनके मार्गदर्शक गुरूओं जैसे डॉ पी आर नारायणन जो क्षय अनुसंधान केन्द्र (अब टी बी अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय संस्थान) के निदेशक थे और जिन्होंने डॉ सौम्या के साथ कई वर्षों तक काम किया था, के लिए विशेष पल था। उन्हें इस उच्च पद पर पहुँचने के लिए शुभकामनायें देते हुए डॉ नारायणन ने गर्व से कहा ''कोई भी भारतीय व्यक्ति इस विश्व स्वास्थ्य संस्था में इतने उच्च पद तक नहीं पहुँच सका है किन्तु यह बात भी सच है कि डॉ सौम्या को टी बी और एचआईवी/एड्स के लिए किये गये अनुसंधान की वजह से विश्व स्तर पर पहचान मिली है। प्रश्न यह उठता है कि उन्होंने यह पद कैसे प्राप्त किया? क्या उनके सहकर्मियों की उपेक्षा करके उन्हें लाभ पहुँचाया गया। नहीं मैं आपको आवश्स्त करता हूँ कि ऐसा कतई नहीं हैं।''

उन्होंने अतीत के पन्ने उलटते हुए कहा कि बात तब की है जब डॉ सौम्या 1992 में टीआरसी (अब एनआईटी) से जुड़ी ही थी। उस समय ज्यादा अच्छी स्थिति नहीं थी। खासकर सरकारी संस्थानों में जहाँ स्टॉफ खुलकर काम करने की आजादी नहीं मिलने और सुविधाओं की कमी की हमेशा शिकायत करते हैं। ऐसे में भी डॉ सौम्या जैसी महिला जो उत्तर भारत के प्रतिष्ठित संस्थानों से उच्च योग्यता प्राप्त होने और यूरोप और अमेरिका के संस्थानों का अनुभव लेने के बावजूद शिकायत करने की बजाय आवश्यक धैर्य के साथ पहले ही दिन से रोगियों की देखभाल में जुट गई।

जब वे (डॉ नारायणन) 1996 में संस्थान के निदेशक बने तो एचआईवी की जिम्मेदारी को संभालने के लिए किसी योग्य व्यक्ति की बहुत जरूरत थी। ''और मैनें सौम्या को इसके लिए चुना क्योंकि मुझे उनमें एचआईवी/एड्स का अलग से विभाग खोलने की इच्छा व प्रतिर्स्पधा दिखाई दी। उन्होंने बहुत कम समय में एक श्रेष्ठ टीम का गठन कर लिया और टीबी एवं एचआईवी पर अग्रणी अनुसंधान कर दिखाए। उनके अनुसंधानों की समीक्षा उस समय के पत्र पत्रिकाओं में छपी और उन्हें विश्व स्तर पर एक सक्षम अनुसंधानकर्ता के रूप में पहचान मिली।

डॉ नारायणन ने कहा कि टी बी एवं एचआईवी/एड्स अनुसंधान के क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ छूने के बावजूद भी डॉ. सौम्या ने कभी भी शिशु चिकित्सा के बुनियादी प्रशिक्षण पर से अपना ध्यान नहीं हटने दिया। उन्होंने कहानी सुनाई कि जब वे अपने स्टॉफ को तमिलनाडू में वेल्वोर के निकट जवाधु की पहाड़ियों में एक आदिवासी इलाके में लेकर गये जो सौम्या अपने कमरे में नहीं मिलती थी। वे तो आदिवासी औरतों और बच्चों के झुण्ड के बीच घिरी रहती जो उनसे अपनी विभिन्न समस्याओं के बारे में चर्चा करते रहते थे। वे धैर्यपूर्वक और करूणापूर्वक उनकी समस्यायें सुनती थी, जो कि एक चिकित्सक के लिए सबसे अधिक जरूरी है और जिसकी आज के समय बहुत कमी है। वे यथासंभव उनकी माँगों को पूरा कराने की कोशिश करती थी, वे उन लोगों में इतनी लोकप्रिय हो गई कि जब भी उनकी टीम उन आदिवासी इलाकों में जाती तो आदिवासी लोग यह आशा करते कि वे भी टीम के साथ आए।

डॉ. नारायणन ने कहा कि वे सात वर्षों तक दक्षिणी पूर्व एशिया क्षेत्र की तरफ से विश्व स्वास्थ्य संगठन की तकनीकी कार्मिक संस्था के अध्यक्ष रहे। डॉ. सौम्या उनकी बैठकों में शामिल होती और बार-बार अपनी आवाज उठती ताकि टी.बी. से प्रभावित बच्चों के निदान व पुनर्वास पर ध्यान दिया जा सके।

जल्दी ही अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का ध्यान उनकी ओर जाने लगा। वे चाहते थे कि डॉ. सौम्या विश्व

मैनें सौम्या को इसके लिए चुना क्योंकि मुझे उनमें एचआईवी/एड्स का अलग से विभाग खोलने की इच्छा व प्रतिर्स्पधा दिखाई दी।

डॉ पी आर नारायणन

स्वास्थ्य से जुड़े मामलों पर ध्यान दें। शीघ्र ही भारतीय अधिकारियों का ध्यान भी उनकी श्रेष्ठ का गठन करने और उस टीम को जोड़कर रखने की योग्यता, रोगों एवं उनके नियंत्रण कार्यक्रमों के लिए उनकी नीतियों व उनके अंतर्राष्ट्रीय अनुभव की ओर गया। ''मैं आपको आवश्स्त कर सकता हूँ कि डॉ. सौम्या ने इस पद को पाने के लिए प्रयास नहीं किए। पूरे विश्व ने उनके कार्य को देखा और उनके गुणों, अनुसंधान एवं नेत्त्व करने की उनकी असाधारण योग्यता को पहचाना है। तभी तो उन्हें स्वास्थ्य मंत्रालय में महानिदेशक का पद उन्हें दिये जाने और स्वास्थ्य सचिव बनाने पर किसी को आश्चर्य नहीं हुआ।''

उन्होंने यह भी कहा कि डॉ. सौम्या में बड़े संस्थानों से समन्वय, सहयोग व तालमेल की असाधारण क्षमता होने के वाजदूज भी वे शिशु चिकित्सक के रूप में अपना योगदान देती है। इसे सब पर संभवतया विश्व ताकतों का ध्यान आकृष्ट हुआ और विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक का एक कुशल अनुसंधानकर्ता, सहयोगी, नीति निर्माता एवं फील्ड वर्कर के रूप में उन पर ध्यान गया और उन्होंने 12 अक्टूबर को उन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन के उपमहानिदेशक का पद ग्रहण के लिए न्यौता भेजा। डॉ. नारायणन ने समझाया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक ने 14 देशों के सदस्यों की एक नई टीम का गठन किया है। इस नई टीम में भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री विश्व के अग्रणी चिकित्सक, वैज्ञानिक अनुसंधानकर्ता एवं विश्व स्वास्थ्य कवरेज, संक्रामक एवं असंक्रामक बीमारियों, महिलाओं, किशारों एवं बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़े विशेषज्ञों को शामिल किया गया है।

डॉ. नारायणन ने यह कहकर अपनी बात समाप्त की कि उनके साथ काम करके मैने यह पाया कि वे हर बात पर आसानी से समहत नहीं होती। वे ज्यादातर बातों पर अपनी असहमति ही व्यक्त करती है। मैं उन्हें सच्चा और इमानदार पेशेवर मानता हूँ। उन्हें बहुत अच्छी तरह से जानने के कारण मैं यह विश्वास से कह सकता हूँ कि इस पद पर पहुँचने के बाद उनसे जो आशाएँ लगाई गई हैं वे बिना बदले में कुछ चाहे इन पर खरी उतरेंगी।

यदि विद्यालय स्तर पर बच्चों को खोज व खुद से टेस्ट करने के अवसर मिले और उन्हें कुछ नया खोजने का अनुभव हो तो इससे अनुसंधान में उनकी रूचि विकसित होती है, और संभवतया वे अनुसंधान में अपना भविष्य बना सकते हैं

समय डॉ. नारायणन के संरक्षण में ही बीता है। आज जो कुछ मैनें प्राप्त किया है, वह उनके दिशानिर्देश के बिना संभव नहीं था क्योंकि एक युवा वैज्ञानिक के रूप में हमें यह नहीं पता होता कि कौनसा रास्ता चुनना है। ऐसे में आपको एक संरक्षक और पथ प्रदर्शक की आवश्यकता होती है, जो आपको सही दिशा दिखाए और आपको आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त स्थान और आजादी दें।''

उन्होंने कहा कि हमें इस बात के लिए आत्ममंथन की आवश्यकता है कि भारत अनुसंधान, विशेषकर मेडिकल एवं हैल्थ केयर अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रणी क्यों नहीं हो सकता। अंतरिक्ष अनुसंधान जिसमें हमने आशातीत सफलता प्राप्त की है और ''अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है के अतिरिक्त दूसरे क्षेत्रों में हम और बेहतर कर सकते हैं।''

उन्होंने याद किया कि उन्हें शोध का पहला अनुभव तब हुआ जब उन्होंने 11वीं कक्षा में विज्ञान प्रतिभा पुरस्कार हासिल किया। उन्होंने अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ प्रो अर्चना शर्मा के साथ बिताई जो एक प्रसिद्ध आनुवंशिकीविद् थी। उनका शोध टर्नर सिंड्रोम नामक आनुवांशिक क्रोमोजोमल रोग पर था। डॉ. सौम्या की मुलाकात एक हॉस्पिटल में ऐसी 16 वर्षीय लड़की से हुई जिसका अभी यौवन काल भी आरंभ नहीं हुआ था। उन्होंने उस लड़की के खून का नमूना लिया और प्रो अर्चना शर्मा के लैब में टेस्ट किये, ''यह काफी रोचक था क्योंकि ऐसे में तुरन्त रोग का निदान किया जा सकता था क्योंकि एक ग गुणसूत्र गायब था। एक लड़के में एक द और एक ध गुणसूत्र होते हैं जबकि एक लड़की में दो द गुणसूत्र होने चाहिए। एक द गुणसूत्र के नहीं होने की वजह से ऐसी लड़कियाँ यौवन प्राप्त नहीं कर सकती और सामान्य प्रजनन जीवन यापन नहीं कर सकती।''

इस बात से उनकी अनुसंधान में रूचि जाग्रत हुई। यदि विद्यालय स्तर पर बच्चों को खोज व खुद से टेस्ट करने के अवसर मिले और उन्हें कुछ नया खोजने का अनुभव हो तो इससे अनुसंधान में उनकी रूचि विकसित होती है, और संभवतया वे अनुसंधान में अपना भविष्य बना सकते हैं किन्तु दुर्भाग्यवश यह चीज हमारे अधिकांश विद्यालयों में देखने को नहीं मिलती। बच्चों के पास खुद से कोशिश करके खोजबीन करने के अवसर नहीं हैं।

अनुसंधान मार्ग दर्शन की कमी

अपनी शिक्षा के दौरान काफी बाद में उन्हें अनुसंधान के क्षेत्र में मार्गदर्शन की कमी का अनुभव हुआ। इसलिए मेडिकल स्कूल एवं पी.जी. के दौरान भी ''जब मैं अपने शोध प्रबन्ध पर काम कर रही थी तो मुझे वह ज्यादा रोमांचक नहीं लगा। किन्तु जब मैं अपनी फैलोशिप के लिए अमेरिका गई तो वहाँ मुझे श्रेष्ठ अनुसंधान परामर्शदाता एवं मार्गदर्शक मिले और तभी वहाँ मैं अपने अनुसंधान की ज्यातातर बातें सीख सकी। अनुसंधान के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए पर पथ प्रदर्शक की आवश्यकता तो होती ही है।''

काफी बाद में जरूर उन्हें नारायणन के रूप में मार्ग दर्शक मिला। डॉ. सौम्या ने यादों की जुगाली करते हुए बताया कि जब वे टी आर सी (ट्यूब रक्तयूलासिस रिसर्च सेन्टर) की एक टी.बी. परियोजना पर काम कर रही थी तो उनहें जावधु की पहाड़ियों में बसे काफी पिछड़े हुए आदिवासी गाँव में जाने का मौका मिला ''मैनें गौर किया कि वहाँ माताएँ अलग ही बात को लेकर चिन्तित थीं। उन्होंने मुझसे पूछा कि आप क्यों आते है और हम समय बस टी.बी. के बारे में बातें करते हैं।'' टी.बी. तो साल में एक बार किसी के होती है। हमारी दूसरी स्वास्थ्य समस्यायें भी हैं लेकिन आपको उनकी कोई परवाह नहीं है। आप की पूरी की पूरी टीम आती है और टी.बी. रोगी मिल जाता है तो आप खुश होकर लौट जाते हैं। हमारी दूसरी स्वास्थ्य आवश्यकताओं की ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यदि किसी के फ्रेक्चर होता है तो हमें उसे प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र तक ले जाने में तीन दिन लग जाते हैं।''

तब उन्हें यह ख्याल आया कि ''हालांकि हम अनुसंधानकर्ताओं के अपने विचार है किन्तु लोगों को उनकी आवश्यकता नहीं है। उनकी प्राथमिकताएँ अलग है। उसी कारण जहाँ सार्वजनिक स्वास्थ्य की बात आती है, यह जानना आवश्यकता हो जाता कि लोग क्या चाहते हैं।''

एच.आई.वी./एड्स के क्षेत्र में उनका कार्य

एच.आई.वी/एड्स पर काम करते हुए उन्हें एक और महत्वपूर्ण सबक सीखने को मिला है जब डॉ. सुनीति सोलोमन के सामने मुम्बई के सैक्स वर्कर्स के छः मामले आए। एच.आई.वी. से संक्रमित होना किसी सामाजिक कलंक से कम नहीं था। एच.आई.वी./एड्स से संक्रमित व्यक्ति को कोई भी छूना नहीं चाहता था। ऐसे लोगों को कुछ समय पश्चात तांबरम के टी.बी. आरोग्य केन्द्र भेज दिया जाता था जो आगे चलकर एच.आई.वी./एड्स के रोगियों के लिए एशिया का सबसे बड़ा अस्पताल बना।

''ढ़ेर सारे एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्तियों को घरों से निकाल दिया जाता था। ऐसे लोगों को अपमान व हिंसा का शिकार होना पड़ता था। ऐसे लोगों के लिए कोई ठिकाना नहीं था। यहाँ वार्ड एड्स के रोगियों से भरे रहते थे जिनमें रोगी सब तरह की परेशानियों को सहते हुए मरते रहते थे। वहाँ मैंने अनुभव किया एच आई वी /एड्स से संक्रमित होने का कलंक क्या होता है और ऐसे लोगों के परिवारों का क्या हश्र होता है महिलाओं को एड्स से उनके पति की मौत होने पर किस तरह दोषी ठहराया जाता था और एच आई वी पीड़ित ऐसे का क्या हाल होता था जिनके माता-पिता मर चुके होते थे।'' ऐसे रोगियों की देखभाल के लिए बहुत कम मेडिकल टीमें थी। ''इसलिए हमने दवाइयाँ उपलब्ध कराने की वाली एनजीओ की मदद से ऐसे रोगियों की देखभाल करनी शुरू की। कई बच्चे मर जाते थे। किन्तु कुछ बच भी जाते थे और ठीक होकर बाकी जीवन जी पाते थे। मैं आज भी उनमें से कुछ बच्चों से मिलती हूँ। वे अब बीस वर्ष से अधिक आयु के हो चुके है और पढ़ लिख भी लिए है।''

इसलिए जहाँ तक एचआईवी एड्स की बात है यह अनुसंधान रोकथाम और इलाज तक सीजित नहीं थी अपितु सामाजिक पहलू, कलंक, कैसे एचआईवी वायरस के प्रसार के माध्यमों के बारे में अफवाओं और इससे बचाव क्यों जरूरी है जैसी बातों पर भी ध्यान देना आवश्यक था। उन्होंने साथ ही कहा कि फिर भी इन पिछले 25 वर्षों में भारत ने हैल्थ केयर के मोर्चे पर काफी प्रगति की है।

क्लब की सदस्य राधिका सत्यनारायण, डॉ सौम्य स्वामीनाथन के साथ।

जीवनशैली से सम्बन्धित रोग

दूसरी बड़ी समस्यायें जिनसे भारत जूझ रहा है वे जीवन शैली से सम्बन्धित बीमारियाँ है जैसे मधुमेह और ऐसे रोग जिनका निवारण किया जा सकता है जो जल जनित है तथा जिनकी साफ सफाई एवं सुरक्षित पेयजल के द्वारा रोकथाम की जा सकती है। उन्होंने कहा भारत के लिए एक बहुत बड़ी चिन्ता की बात यह है कि ''या तो हम बहुत ज्यादा भोजन खा रहे हैं या गलत तरह का भोजन ले रहें हैं जिससे बहुत अधिक मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, ढ़ेर सारा नमक और चीनी होती है। हम भोजन के बहाने छिपी हुई और अनावश्यक कैलोरी ले रहे हैं। हम परम्परागत भोजनों जैसे बाजरे से दूर होते जा रहे हैं और प्रसंस्कृत भोजन ज्यादा ले रहे हैं साथ ही व्यायाम भी कम रकते हैं। मधुमेह एक बहुत बड़ी महामारी है जिससे दूसरी व्याध्यिों जैसे पक्षाघात, किडनी की बीमारी, हृदय व धमनियों से जुड़ी और दूसरी जटिलताएं उत्पन्न होती है इसमे बचा जा सकता है केवल जीवन शैली में बदलाव करके और जोखिम पैदा करने वाले कारकों जैसे शराब व तम्बाकू का प्रयोग बन्द करके।''

न्यूज़ चैनल डेंगू महामारी के दौरान हर साल बार-बार यह दिखाते हैं कि कैसे 24 घण्टों में डेंगू से 3 या 7 मौते हुई। मैं उनसे कहना चाहती हूँ इसी अवधि में भारत में हजार लोग टी.बी. से मारे गये, क्यों कोई भी इस बारे में रिपोर्ट नहीं देता।

डॉ सौम्या ने कहा भारत के लिए और चिंताजनक आंकड़े आत्महत्या की तेजी से बढ़ती दर के हैं। ''आत्महत्या 15-20 आयु वर्ग के मृत्यु का प्रमुख कारण है जो कि काफी चिंताजनक बात है। युवा खुद की जान क्यों ले रहे हैं? वे अवसाद और दूसरी तरह के दबावों से निपटने में सक्षम नहीं है। उस पर अब इन्टरनेट एवं ब्लू व्हेल जैसे चीजें आ गई हैं।''

कुपोषण भी कोई छोटी समस्या नहीं हैं। हमारे यहाँ 5 वर्ष से कम आयु के 38 प्रतिशत बच्चे अल्पविकसित हैं। उनके कद काठी और बौद्धिक क्षमता दोनों पर कुपोषण का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। दूसरी तरफ शहरों में मोटापे में वृद्धि हो रही है और जीर्ण (पुराने) रोग बढ़ रहे हैं। देखा जाए तो ''हमारे यहाँ दो तरह के भारत हैं - एक भारत जिसमें गरीब संतुलित भोजन भी नहीं खा पाते हैं और दूसरा भारत जिसमें धनवानों के मधुमेह जैसे बीमारियाँ हैं।''

क्लब के पूर्व अध्यक्ष श्रीनिवासन ने डॉ सौम्या का परिचय दिया और क्लब के वर्तमान अध्यक्ष बी.एस. पुरूषोत्तम ने बैठक की अध्यक्षता की।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

आइए रोटरी के पुनर्निर्माण में मदद करें!

रेखा शेट्टी

रोटरी के बारे में सबसे बडी बात यह है कि प्रत्येक रोटरीयन के पास इसके संपूर्ण संविधान को परिवर्तित करने का एक अवसर है। कोई भी रोटरीयन सीओएल (विधान परिषद) में प्रस्ताव या अधिनियमन का प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकता है जिसकी बैठक तीन वर्षों में एक बार आयोजित की जाती है। इसकी अगली बैठक वर्ष 2019 में शिकागो में होने वाली है। मंडल में सभी क्लबों द्वारा अधिनियमित करने का कार्य किया जाना चाहिए।

अप्रैल 2016 में आयोजित किए गए सीओएल 2016 में, एक नई वार्षिक संकल्प परिषद (सीओआर) के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई थी। ई-वोटिंग द्वारा वर्ष 2017 में संकल्प परिषद द्वारा पारित किए गए प्रस्तावों में दो भारतीय प्रस्तावों का उल्लेख नीचे किया गया हैं:

- रोट्रैक्ट क्लब प्रमाण प्रपत्र को संशोधित करने के लिए आरआई बोर्ड से अनुरोध करना - जिसका समर्थन मंडल 3141 द्वारा किया गया था
- मंडल 3070 द्वारा हिंदी में वार्षिक अध्यक्षीय विषय को प्रकाशित करने के लिए आरआई बोर्ड से अनुरोध करना

सीओआर एक अलग शासी निकाय है जिसकी बैठाक प्रति वर्ष ऑनलाइन होगी। यह क्लबों और मंडलों द्वारा आरआई बोर्ड को भेजे गए प्रस्तावों की समीक्षा करेगी। प्रस्तावित संकल्प विचारों को व्यक्त करता हैं और बोर्ड को अपनी अनुशंसा भेजता हैं। वे आरआई के संवैधानिक दस्तावेजों में संशोधन करने का प्रयास नहीं करते हैं, बल्कि वे आरआई की अन्य नीतियों, प्रक्रियाओं और कार्यक्रमों में सुधार करना चाहते है। यदि सीओआर द्वारा उन्हें अनुमोदित किया जाता है, तो प्रस्तावित संकल्पों को आरआई बोर्ड के विचारार्थ भेजा जाता है।

प्रस्तावित व्यवस्थापन रोटरी के संवैधानिक दस्तावेजों - आरआई के संविधान, आरआई उप-नियमों और मानक रोटरी क्लब के संविधान में बदलाव की कोशिश करते हैं। यदि सीओएल अपनी स्वीकृति प्रदान करता है, तो अधिनियमन अगले रोटरी वर्ष के 1 जुलाई से प्रभावी हो जाता हैं। लेकिन उन्हें 31 दिसंबर, 2017 तक आरआई द्वारा अवश्य प्राप्त किया जाना चाहिए। इसलिए, मंडलों को नवंबर तक उन्हें पास करना होगा। प्रस्तावित कानून को ऑनलाइन प्रपत्र के माध्यम से रोटरी को प्रस्तुत किए जाना चाहिए: https://rotary.qualtrics.com/SE/?SID=SV_1zb6VhSSzgQXLLL.

2017-20 परिषद चक्र के लिए समय-सीमा:

- 2017-18 प्रस्ताव परिषद: 15 नवंबर
- अधिनियम जमा करने की अंतिम तिथि : 31 दिसंबर 2017
- प्रस्तावित अधिननयमों में संशोधन करने की अंतिम तिथि : 31 मार्च 2018
- संकल्प प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि: 30 जून 2018
- विधान परिषद की पुस्तक प्रकाशित होने की तिथि: सितंबर 2018

इसलिए, जो रोटरियन आप अपने क्लब को 31 दिसंबर से पहले एक क्रांतिकारी नए रोटरी बनाने के लिए सक्रिय करें!

लेखक एक पीडीजी और मंडल 3232 के सीओएल प्रतिनिधि है।

मौज मस्ती, खाना पीना और परोपकार भी...

आम्ची मुंबई में

रशीदा भगत

मुंबई के महालक्ष्मी रेस कोर्स में मंडल 3141 ने एक शानदार चैरिटी इवेंट 'रोटरी वर्ल्ड फेस्टिवल आयोजित किया, जिसका ज़बरदस्त आकर्षण था संगीत, नृत्य, घुड़ दौड़ और मुंबई स्ट्रीट के स्वादिष्ट व्यंजन परोसती स्टाल्स, साथ ही गला तर करने के सभी इंतज़ाम थे, लेकिन मुफ्त नहीं बल्कि कीमत पर। बेशक, क्यूंकि इस आयोजन का उद्देश्य ही रोटरी फाउंडेशन के लिए अधिक से अधिक धनराशि एकत्रित करना था।

इवेंट की बेहतरीन शुरुआत डीजी प्रफुल्ल शर्मा और उनकी पत्नी विद्योतमा द्वारा 10,000 मुफ्त भोजन पैकेट्स वितरण की घोषणा के साथ हुई जिन्हे मुंबई के चुनिंदा इलाको में अनाश्रित और वंचित लड़कियों में बांटा जायेगा। 30 अंतरराष्ट्रीय छात्र स्वयंसेवकों सहित, बैग में अनाज पैक करने में व्यस्त, आर सी बॉम्बे नोवा की रोटरीयन, जयश्री दवे ने कहा यह दुनिया में भूख कम करने का छोटा सा प्रयास है।

NGO राइज अगेन्स्ट हंगर इंडिया चलाने वाले आर सी बॉम्बे वरली के डोला मोहपात्रा ने कहा कि भोजन पैकिंग का आयोजन इस NGO के दिल की धड़कन है जो सिर्फ चंदे की राशि से ही चलता है; आम तौर पर एक व्यक्ति को भोजन खिलाने की मासिक लागत रु 1,100 आती है । उन्होंने जानकारी दी कि, उनके क्लब के साथ साथ आरसी बॉम्बे वरली और NGO तीन साल से मिल कर ये सेवा कार्य कर रहे हैं । उन्होंने बताया, लगभग 30

लोग सिर्फ दो घंटे में ही 10,000 से अधिक लोगों के लिए भोजन पैक कर सकते हैं'।

''आज पैक किये भोजन पैकेट्स माटुंगा, माहिम और घाटकोपर इलाकों के कुपोषित बच्चों में बांटे जाएंगे; वे भिखारी, कचरा बीनने और सब्ज़ी बेचने वालों के बच्चे हैं।''

डीजी शर्मा ने कहा कि पूर्व में, रोटरी वर्ल्ड फेस्टिवल, कुछ वर्षों के लिए आयोजित किया गया था, फिर इसे स्थगित कर दिया गया, ''अब इसमें काफी परिवर्तन किया गया है और इस वर्ष यह आयोजन बिलकुल अलग है।'' इसके तीन स्तरीय उद्देश्य हैं - दुनिया को रोटरी से अवगत कराना , आपसी साहचर्य (फैलोशिप) और टीआरएफ के लिए धन जुटाना। । यहां पूरे महालक्ष्मी रेस कोर्स में आज विशाल, भव्य और रंगीन कार्निवल की सी चहल-पहल है, और आज आयोजित सात घुड़दौड़ में से छह अपने मण्डल के विभिन्न रोटरी क्लबों द्वारा प्रायोजित थी। सभी आयोजनों से कुल 2,60,000 डॉलर राशि एकत्रित की गई और ''ये राशि क्लब द्वारा प्रतिबद्ध राशि से कहीं अधिक है।''

आईपीडीजी क्रिस्टीन ब्यूरिंग, मंडल 1950 (बाएं से दूसरी) और गोपाल मंधानिया, मंडल 3141 रोटरी वर्ल्ड फेस्ट में। बीच में रोटरी एन माल्टी जैन (रोटरी क्लब बॉम्बे)।

शारीरिक रूप से विकलांग युवाओं द्वारा प्रस्तुत एक जीवंत संगीत और नृत्य प्रदर्शन।

टीआरएफ लक्ष्य - 3 मिलियन डॉलर

शर्मा ने कहा कि अपने डीजी वर्ष के दौरान उन्होंने टीआरएफ़ के लिए ''3 मिलियन डॉलर एकत्रित करने का लक्ष्य'' निर्धारित किया है और हमने टीआरएफ़ अकाउंट में 370,000 डॉलर जमा भी कर दिए हैं'' शर्मा ने यह भी बताया की आर आई राष्ट्रपति इयान रिसेली की यात्रा के दौरान 12 दिसम्बर को सी एस आर कोष के लिए आयोजित टी आर एफ रात्रि भोज से उन्हें बहुत आशाएं हैं ''जिसमे मुंबई कॉर्पोरेट जगत की नामचीन हस्तियां शिरकत करेंगी। इसी आयोजन के दौरान करीब 150 अतिविशिष्ट अतिथियों के बीच हम अपने मण्डल के ए के एस सदस्यों को सम्मानित भी करेंगे,'' शर्मा ने बताया।

टीआरएफ़ के लिए 3 मिलियन डॉलर एकत्रित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है और हमने टीआरएफ़ अकाउंट में 370,000 डॉलर जमा भी कर दिए हैं।

डीजी **प्रफुल शर्मा**

भोजन के 10,000 पैकेट बनाने में व्यस्त युवा।

मैडम सींक कबाब से ग्रेवी वाला कीमा बना देंगे।

स्टॉल के प्रभारी

उन्होंने पीडीजी और टीआरएफ ट्रस्टी (नामित) गुलाम वाहनवटी, जो बोर्ड ऑफ स्टीवर्ट्स के अध्यक्ष हैं और रॉयल वेस्टर्न इंडियन टर्फ क्लब की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य भी, का आभार व्यक्त किया तथा विशेष रूप से ''यह स्थान, निशुल्क देने के लिए धन्यवाद दिया। आम तौर पर रविवार को इस की कीमत लगभग रु 20 लाख है।''

वाहनवटी ने कहा कि इस आयोजन और घुड़दौड़ को एक साथ रखने में दो चुनौतियां थीं; ''वे यह आयोजन नवंबर में चाहते थे, लेकिन यही वो महीना है जब मुंबई में रेस का मौसम भी शुरू होता है। इसके अलावा, हमारे यहां बेमौसम बारिश कभी भी आ सकती थी जिसकी वजह से रेसिंग ट्रैक अनुपयुक्त हो जाते।'' खैर, बिना किसी परेशानी के रेस और फेस्टिवल दोनों सफलतापूर्वक आयोजित हुए।

एक विशेष डाक कवर

इस उत्सव में सरकारी और गैर सरकारी एजेंसियों दोनों की ही व्यापक भागीदारी देखने को मिली। यहाँ भारतीय डाक विभाग की प्रभावशाली उपस्थिति रही और रोटरी वर्ल्ड फेस्टिवल को यादगार बनाने के लिए, पी आर आई डी अशोक महाजन की उपस्थिति में एक विशेष डाक कवर जारी किया गया।

सहायक गवर्नर और समारोह के मुख्य समन्वयक संदीप शाह ने कहा कि लड़कियों की शिक्षा के लिए पैसे जुटाना इस मेले की प्रमुख परियोजना है। ''यहाँ एक कलाकार - सोहेल देगानी 56 चित्र दान कर रहा है जिसे बनाने में

विशेष डाक कवर की रिहाई पर रोटेरियन केविन कोलाको, सहायक गवर्नर संदीप शाह, टीआरएफ ट्रस्टी मनोनीत गुलाम वाहनवती, पीआरआईडी अशोक महाजन, डीजी प्रफुल्ल शर्मा और अन्य रोटेरियन।

डीजी प्रफुल्ल शर्मा और पत्नी विद्योत्तममा शर्मा भोजन पैकेजिंग कार्यक्रम की शुरुआत करने के लिए गोंग को बजाते हैं।

उसे तीन वर्ष लगे और उन चित्रों की बिक्री से करीब रु 17.5 लाख की आय हुई,'' जिस का उपयोग लड़कियों को शिक्षित करने के लिए किया जाएगा। इन सभी पेंटिंग्स को कैटलॉग के बजाय 2018 के डेस्क कैलेंडर में छापा गया है।

मेजबान क्लब रोटरी कल्ब बॉम्बे वर्ल्ड के अध्यक्ष कविता गोडबोले ने कहा कि टीआरएफ़ के लिए धनराशि एकत्रित करने के साथ ही इसे मनोरंजक और मौज मस्ती से भरपूर पारिवारिक उत्सव बनाने के लिए कड़ी मेहनत की गई, और यह बन भी गया।

डीजी शर्मा ने कहा की इस रंगीन मेगा समारोह की तयारी एक वर्ष पहले ही शुरू हो गयी थी और इस कार्यक्रम के ज़रिये सहकार्यता की शक्ति का भंडार साझा करना था और मररोव डोनर.रजिस्ट्री, नेशनल बर्न्स सेंटर, नेशनल लिवर फाउंडेशन, राइज अगेंस्ट हंगर, पार्किंसन डिजीज एंड मूवमेंट डिसऑर्डर सोसाइटी जैसे एन जी यों को स्टाल मुफ्त में दिए गए। एक काउंटर पर खड्ढउजछ के मध्या मील की स्कीम का प्रदर्शन किया गया जिसके ज़रिये रोटरीयनों और गैर रोटरीयनों को -कुल 2000 लोगों को - यह समझाया गया की कैसे संस्था स्कूल के बच्चों के खाने में उत्कृष्टता और स्वाद दोनों को बरकरार रखती हैं ।

उत्कृष्ट संगीत

इस समारोह के एक और भागीदार थे - ग्रेटर मुंबई के नगर निगम और उन्होंने कचरे के संग्रहण ,निस्तारण और उसे अलग अलग रखने से सम्बंधित सवालों के जवाब दिए।

शाम ढल रही थी साथ ही लोगों की भीड़ भी। आज शाम के मनोरंजन का मुख्य आकर्षण था जैज़ कथक। जैज़ और भारतीय शास्त्रीय संगीत की जुगलबंदी के लिए प्रसिद्ध सैक्सोफोनिस्ट जॉर्ज ब्रूक्स, जैज़ मास्टर लुई बैंक, शीतल कोल्वलकर (कथक), इशिता चक्रवर्ती (गायक) और ड्रमर जीनो बैंक, ने अदभुत संगीतमय प्रस्तुति दीं। इसके बाद सलीम-सुलेमान बन्धुओं ने *अल्लाह हू अल्लाह हू, इश्कवाला लाव, क़ुर्बान हुआ* के साथ उपस्थित श्रोताओं में अपनी गायकी का जादू बिखेरा। और उसके बाद राजस्थान के मंगनीयर बंधु - राज पंडित और विपुल ने दर्शकों को अपनी गायकी से आनंद विभोर किया।

मेरे लिए आयोजन के वो क्षण यादगार रहेंगे जब स्ट्रीट फूड के स्टाल्स पर घूमते और स्वादिष्ट व्यंजनों का चटखारा लेते हुए मुझे अपने बचपन और किशोरावस्था की यादें ताज़ा हो गईं। लेकिन उससे पहले मैने रेस कोर्स में वाहनवटी।के बॉक्स में आराम से बैठ कर रेस का आनंद भी लिया। और यहां मुझे मुंबई

वे यह आयोजन नवंबर में चाहते थे, लेकिन यही वो महीना है जब मुंबई में रेस का मौसम भी शुरू होता है। इसके अलावा, हमारे यहां बेमौसम बारिश कभी भी आ सकती थी जिसकी वजह से रेसिंग ट्रैक अनुपयुक्त हो जाते।

टीआरएफ ट्रस्टी मनोनीत
गुलाम वाहनवटी

टीआरएफ ट्रस्टी मनोनीत गुलाम वाहनवटी।सभा को संभोदित करते हुए और (दाएं से) डीजी प्रफुल्ल शर्मा, पत्नी विद्योत्तमा शर्मा, देविका शाह, रोटरी क्लब बॉम्बे वोर्ली के अध्यक्ष कविता गोडबोले और सहायक गवर्नर संदीप शाह।

की दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मुलाक़ात का मौका मिला । पहले - मुंबई पुलिस के पूर्व प्रमुख जुलियो रिबेरो, जो किशोर, युवाओं को सलाह दे रहे थे कि किस घोड़े और जॉकी पर कैसे शर्त लगायें लेकिन बहुत ही छोटी राशि के साथ और दूसरी सेलिब्रिटी थी - हाल ही सुर्खियों में रही कर्नाटक की निर्भीक और जांबाज़ आईपीएस अधिकारी डी रूपा ।

चटपटे और स्वादिष्ट व्यंजन

पौने तीन बज रहे थे और रेस में 20 रुपये का ज़बरदस्त मुनाफा कमाने के बाद मेरे कदम मुग़लई टिक्का काउंटर की तरफ चल पड़े जिस पर मैंने दोपहर से अपनी आँख गड़ा रखी थी, यहां दम बिरयानी, मटन सींक कबाब, ब्रेन मसाला, ब्रेन फ्राई आदि मिल रहे थे और जैसी की उम्मीद थी ब्रेन मसाला, ब्रेन फ्राई के लिए

मुंबई पुलिस के पूर्व प्रमुख जुलियो रिबेरो, जो किशोर, युवाओं को सलाह दे रहे थे कि किस घोड़े और जॉकी पर कैसे शर्त लगायें लेकिन बहुत ही छोटी राशि के साथ

डीजी प्रफुल्ल शर्मा एक दौड़ के बाद कप पेश करते हुए।

बहुत देर हो चुकी थी। किसी भी रेस्टॉरेंट में ये दोनों सबसे पहले ख़त्म हो जाते हैं। मैंने नान के साथ मटन सींक कबाब का आर्डर किया। यह बहुत स्वादिष्ट था क्यूंकि मसालों के सही मिश्रण के साथ ताजा तैयार किया जा रहा था।

इसके बाद मैं मटन कीमा का लुत्फ़ उठाना चाहती थी लेकिन अफसोस, वो भी खत्म हो गया था। लेकिन फिर मुम्बईकर की कभी हार ना मानने वाली भावना के चलते शेफ ने कहा ''मैडम सींक कबाब से ग्रेवी वाला कीमा बना देंगे'' और मैं मना नहीं कर पाई उस मेले के शानदार स्मृति संजोये मैं चेन्नई लौट आयी हूँ लेकिन अभी भी उन स्वादिष्ट व्यंजनों को याद करते ही मुंह में पानी भर आता है।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

गुलाम वाहनवटी
टीआरएफ ट्रस्टी के लिए मनोनीत

टीम रोटरी न्यूज़

पीडीजी गुलाम वाहनवटी चार साल की अवधि (2018-22) के लिए रोटरी संस्थान के ट्रस्टी नियुक्त किये गए है।

आईआईएम कलकत्ता से प्रबंधन स्नातक, वाहनवटी ने कुछ समय के लिए टाटा प्रशासनिक सेवाओं के लिए कार्य किया, और बाद में जहाज तोड़ने और अवशिष्ट माल को परिष्कृत करने के अपने पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ गए। टीआरएफ ट्रस्टी-नामित स्वयं भी रोटरी की छात्रवृत्ति और विनिमय कार्यक्रम के लाभार्थी है। 1978 में वह टीआरएफ के सामूहिक अध्ययन विनिमय कार्यक्रम के लिए चुने गए और इंडियाना, यूएस, गए जिसे वह ''जीवन परिवर्तित कर देने वाले अनुभव'' के रूप में वर्णित करते है जिसने उन्हें रोटरी से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

वर्ष 1979 में वह रोटरी क्लब बॉम्बे डाउनटाउन से जुड़े, और सर्वसम्मति से 2002-03 में रोई मंडल 3140 के डीजी मनोनीत हुए, और टीआरएफ के लिए 654,000 डॉलर के रिकॉर्ड योगदान का निरीक्षण किया, जो 2006-07 तक भारत के रोटरी मंडलों में सबसे बड़ा योगदान था। डीजी के रूप में उनका कार्यकाल दो विशेषताओं - पारदर्शिता और ईमानदारी से चिन्हित हुआ, पीआरआईडी अशोक महाजन ने कहा, जब वाहनवटी अपने मंडल 3141 द्वारा नवम्बर माह में मुंबई में हुए रोटरी वर्ल्ड फेस्टिवल के दौरान अभिनंदित किये गए, जो मुख्य रूप से उनके टीआरएफ ट्रस्टी नामित होने के लिए सहायक था।

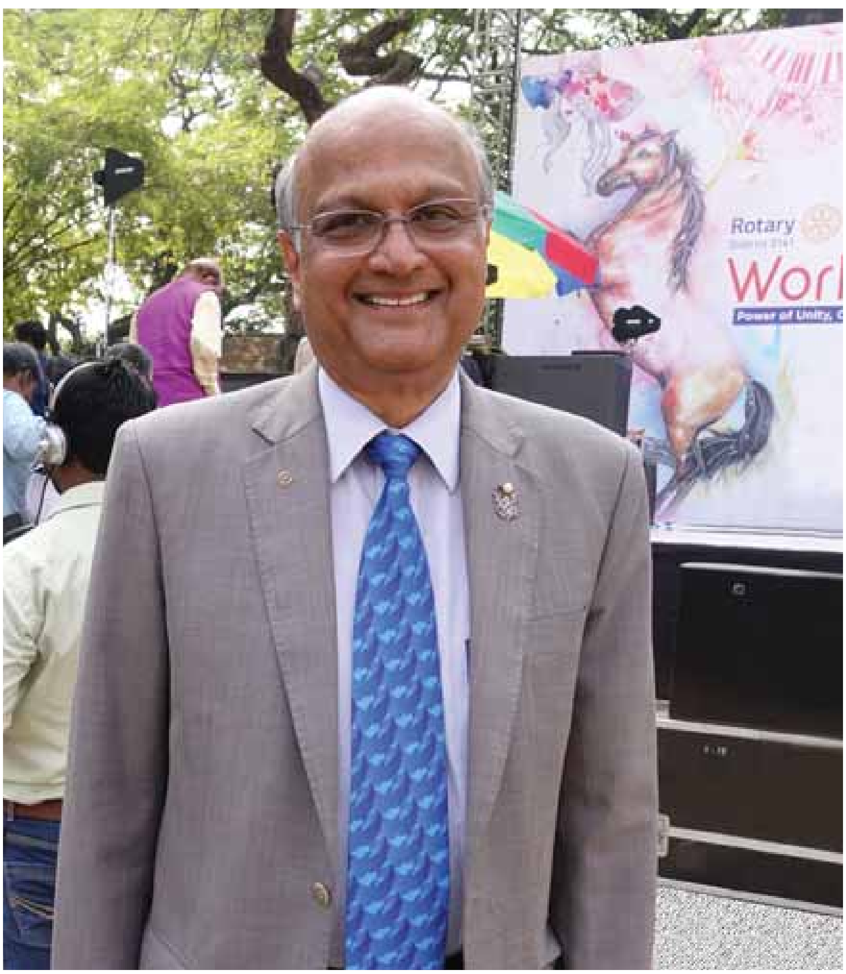

रशीदा भगत

टीआरएफ ट्रस्टी मनोनीत गुलाम वाहनवटी।

वाहनवटी 2004-07 के दौरान ज़ोन 5 के आरआरएफसी नियुक्त किये गए, बाद में रोई अध्यक्ष मनोनीत कल्याण बैनर्जी के ''थिंक टैंक'' के सदस्य थे, और आरआईपीई और अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान मुंबई स्थित उनके सचिवालय के प्रभारी थे। पूर्व में, उन्हें टीआरएफ ट्रस्टियों द्वारा मंडल 3280 (बांग्लादेश) के लिए पाँच साल (2007-12) के लिए सहायक सलाहकार नियुक्त किया गया; उन्होंने टीआरएफ प्रबंधन समिति के सदस्य के रूप में सेवा दी और वर्ष 2007, 2008 में सेन डिएगो में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सभा के लिए रोई प्रशिक्षक नेता नियुक्त किये गए।

वाहनवटी के अभिनन्दन समारोह में पीआरआईडी महाजन की समीक्षा: ''यह मिलियन डॉलर का प्रश्न है कि कैसे गुलाम टीआरएफ ट्रस्टी के रूप में मनोनीत हुए, क्योंकि ट्रस्टियों का चुनाव बहुत ही कठिन एवं महत्वपूर्ण है। खैर, रोई अध्यक्ष निर्वाचित किसी व्यक्ति की टीआरएफ गतिविधियों में सहभागिता, टीआरएफ की जानकारी, सत्यनिष्ठा और ईमानदारी देखते है। उस व्यक्ति का प्रदर्शन, विश्वसनीयता और सत्यनिष्ठा देखकर अध्यक्ष बोर्ड के सामने उसका नाम प्रस्तुत करते है। यह मंडल 3141 और हमारे पूरे देश के लिए गर्व का पल है।'' ■

बैंगकॉक में हुआ प्रादेशिक

रशीदा भगत

रोटरी वर्ल्ड मैगज़ीन प्रैस की द्विवार्षिक एशिया पैसिफिक रीजनल एडिटर्स कॉन्फ्रेंस (एशिया-प्रशांत प्रादेशिक संपादक सम्मेलन) की मेज़बानी इस वर्ष बैंगकॉक ने की। फिलिप्पीन्स, जापान, कोरिया, तैवान भारत और थाईलैंड के संपादकों ने उसमें शिरकत की। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रादेशिक संपादकों और ग्लोबल कम्यूनिकेशंस कमिटी (वैश्विक संचार समिति) दोनों ही की रोटरी इंटरनैशनल कोऑर्डिनेटर (संयोजक) डॉन्ना कॉटर ने की। अपने-अपने देश में मैगज़ीन निकालने के दौरान होनेवाले अनुभव बाँटने के लिए सेमिनार संपादकों के लिए एक मददगार मंच साबित हुआ।

रो ई की नवीनतम जानकारी देते हुए डॉन्ना ने बताया कि आरआई की संचार समिति अब बेहद सक्रिय है और संपादकों को किसी भी जानकारी के लिए अपनी ज़रूरत रो ई को सिर्फ बताने भर की ज़रूरत है। सभी ने यह माना कि प्रादेशिक पत्रिकाओं (मैगज़ीन) के सवालों और संदेहों का वे बहुत तत्परता से जवाब देती हैं।

संपादकों का सम्मेलन

डॉन्ना ने बताया कि 2010 में यह तय किया गया था कि एवंसटन में होनेवाली 'वर्ल्ड मैगज़ीन प्रैस' एडिटर्स मीट से अदल-बदल करके हर दो वर्षों में रोटरी रीजनल मैगज़ीन एडिटर्स कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाएगी।

एक सत्र में डिजिटल टैकनॉलॉजी के लगातार बढ़ते प्रयोग के दौर में प्रिंट मैगज़ीन के भविष्य पर चर्चा हुई। थाईलैंड मैगज़ीन के एडिटर-इन-चीफ वनित योथार्वुत ने कहा, ''बाज़ार में स्थिति बहुत भयावह है और कई प्रिंट मैगज़ीन थाईलैंड से यूँ ही गायब हो गई हैं।'' थाईलैंड की रोटरी मैगज़ीन जो दो महीनों में एक बार छपती है, आरआई की चार डिस्ट्रिक्ट - थाईलैंड, कंबोडिया, लाओ और मीयेनमार में जाती है और उसका सर्क्युलेशन (प्रसार) 8000 कॉपी का है।

ज़्यादातर संपादकों का मत था कि डिजिटल प्रारूप में वृद्धि के बावजूद एशियाई प्रदेश में प्रादेशिक मैगज़ीन का छपा (प्रिंट) प्रारूप अभी कुछ वक्त तक अच्छा चलेगा। डॉन्ना का मानना था कि ऐसा सुनिश्चित करने के लिए

ऊपर: योशियो शिमीज़ू, जापानी पत्रिका के रोटरी-नो-तोमो के अध्यक्ष, बैठक को संबोधित करते हुए, चित्र में पत्रिका के संपादक क्योको नोज़की भी शामिल हैं; बाएं: रोटरी क्षेत्रीय संपादक सम्मेलन में प्रतिभागि पारंपरिक थाई वेशभूषा पहने हुए; नीचे: नदी क्वआई का प्रसिद्ध पुल।

ऊपर: रो ई के क्षेत्रीय पत्रिका और समिति समन्वयक डोना कोटर, संपादक-प्रमुख रोटरी थाईलैंड वनीत यॉथरवुत, वाईस चेयरमैन रोटरी केंद्र सपॉन्ग चयुतसाहाकिज और पीडीजी सोमपॉप थिरासन की उपस्थिति में प्रतिनिधियों को संबोधित करती हुई।

संपादकों को कई तरीकों से अपनी डिजिटल उपस्थिति का विस्तार करते रहने के साथ-साथ उन तरीकों पर भी गौर करना होगा जिनसे वे प्रिंट में भी मूल्यों का संवर्धन करते रहें।

सम्मेलन में इस बात पर काफी चर्चा हुई कि मैगज़ीन को अच्छी सामग्री, आकर्षक डिज़ाइन और अच्छी तस्वीरों से रोटेरियनों और उनके परिवारों के लिए किस तरह और ज़्यादा रुचिकर और उपयोगी बनाया जा सकता है। रोलेक्स, ऑडि आदि लक्ज़री ब्रैंड्स से विज्ञापन कैसे आकर्षित किये जाएं, अन्य विषयों के साथ इस विषय पर भी बातचीत हुई।

सदस्यता राशि

कुछ प्रादेशिक संपादकों, जिनमें आपकी संपादक भी शामिल थी, ने इस बात पर चिंता जताई कि उनके प्रदेशों में रोटरी क्लब मैगज़ीन की सदस्यता लेने में इच्छा

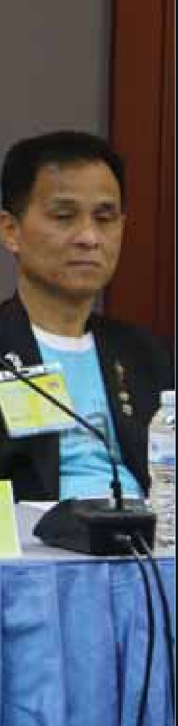

एक दिए को क्रआई नदी में बहकर नकारात्मकता को बहार निकलने का प्रयास।

नहीं रखते और अपनी सदस्यता राशि का भुगतान समय पर नहीं करते। फिलिप्पीन्स की एडिटर-इन-चीफ चिट एल लिजॉउको ने अपना एक अनुभव बताया जब आरआई और डॉन्ना कॉटर की मदद से उनकी टीम ने अगस्त 2017 में 187 रोटरी क्लब को निलंबन (सस्पेंशन) नोटिस भेज दिये थे और उन्हें भुगतान करने के लिए 120 दिन का वक्त दिया था। उन पत्रों का सही प्रभाव हुआ और 120 क्लबों ने मैगज़ीन की अपनी सदस्यता राशि का भुगतान कर दिया, लेकिन 71 क्लबों को अभी भी ऐसा करना बाकी है।

संपादकों ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि उनके क्षेत्र की रुचिपूर्ण लेखन सामग्री आपस में बाँटने की बहुत ज़रूरत है जिससे जानकारी पूरे प्रदेश में दी जा सके।

पाठकों की प्रतिक्रिया और सर्वेक्षणों पर भी बात हुई और *रोटरी समाचार* के ऑनलाइन सर्वे के परिणाम (नवंबर का संस्करण देखें) सेमिनार में घोषित किये गए और प्रतिक्रिया को सराहा गया।

सम्मेलन का स्थान बैंगकॉक के ठीक बीच में एक बहुत प्रभावशाली और आलीशान रोटरी सेंटर था, जो थाईलैंड की राजधानी की लोकप्रिय सुखुम्वित सड़क से कुछ ही दूरी पर था।

बढ़िया मेज़बान

थाईलैंड मैगज़ीन और रोटरी सेंटर दोनों ही की टीम उम्दा मेज़बान साबित हुए। स्वागत भोज में उन्होंने प्रादेशिक संपादकों को प्रतिष्ठित सॉंबून सीफ़ूड (समुद्री भोजन) रेस्तराँ में बेहतरीन चाइनीज़ भोजन करवाया। बैंगकॉक जानेवाले सभी चीनी पर्यटकों के लिए इस चीनी रेस्तराँ में जाना अनिवार्य सा है। यहाँ का, और थाई रेस्तराँ संयोद जहाँ अगली शाम को रात्रि भोज का आयोजन किया गया था, का भी सीफ़ूड स्वादिष्ट था।

जिस तरह हमें घुमाने के लिए कैंचनाबरी डिस्ट्रिक्ट ले जाया गया जहाँ क़ाई नदी पर बना और एक सफल हॉलीवुड फ़िल्म में प्रयोग किया गया प्रसिद्ध पुल है, वह तरीका काबिल-ए-तारीफ था। हम एक स्थानीय अस्पताल में मरीज़ बच्चों के लिए चलाए जा रहे एक उम्दा प्रॉजेक्ट को देखने भी गए। एक रोटरी क्लब ने हमारे लिए क़ाई नदी के तट पर दोपहर के भोजन का आयोजन किया था। वहाँ हमने पारंपरिक थाई नृत्य सीखने की कोशिश में कुछ आनंद के पल भी बिताए। यह ज़रूर मानना पड़ेगा कि इस नृत्य पर भारतीय शास्त्रीय नृत्यकला का बहुत प्रभाव है।

रो ई के क्षेत्रीय पत्रिका और समिति समन्वयक डोना कोटर, कांचनाबुरी जिले के एक बाल चिकित्सा अस्पताल में जहां रोटेरियनों ने बच्चों के लिए खेल सामग्री और सुविधाएं दान की हैं।

डोना कोटर, वनीत योथारवुत द्वारा पारंपरिक तरीके से कैसे नारियल चूरा जाता है,सीखती हुई।

हमारी सैर का अंतिम पड़ाव था एक मोहक गाँव मल्लिका जो पर्यटकों को दूसरे युग में ले जाता है। ज़्यादातर पर्यटक वहाँ पारंपरिक थाई परिधान पहन लेते हैं जो किराये पर मिलते हैं या फिर टुअर पैकेज का हिस्सा होते हैं। उस दूसरे युग में आप शॉपिंग तभी कर सकते हैं जब आप अपनी मुद्रा को पूर्व युग की मुद्रा में बदलवा लें।

शाम का अंत बहुत सुहावने तरीके से हुआ। हम सभी को फूलों और दीयों की एक-एक छोटी सी लुभावनी टोकरी दी गई। उसे क़ाई नदी के जल में बहाना था। उस अनुभव से हरिद्वार में गंगा के किनारे की

एक पारंपरिक थाई नृत्य।

जानेवाली आरति की बहुत याद आई। थाईलैंड के रोटरी सेंटर के डायरेक्टर दानुचा भूमिथावॉर्न, जिन्होंने ह्मारे पूरे ट्रिप की रूपरेखा तैयार की थी, ने कहा, ''इस टोकरी के साथ आप अपनी नकारात्मक ऊर्जा, प्रभाव या वे विचार जो दबे पाँव आपके ज़ेहन में आ गये होंगे, को बहा देते हैं, और सकारात्मक ऊर्जा, विचारों आदि के लिए रास्ता तैयार करते हैं।''

इससे ज़्यादा हम और किस बात की चाह रख सकते हैं?

यह सीखने का एक अनुभव था, अपने अनुभव और समस्याएँ बाँटने और उनका हल ढूँढ़ने का एक अवसर था, और मौज-मस्ती से भरा एक ट्रिप था जिसमें यह बहुत स्पष्ट था कि सभी को पूरा आराम देने के लिए बहुत मेहनत की गई थी।

चित्र: रशीदा भगत
सौजन्य : रोटरी सेंटर बैंकॉक

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

आशा का सीवन

किरण ज़ेहरा

शिमला की सेंट्रल मॉडल जेल कांडा के कैदियों को, एक फूल का कशीदा करके, एक बटन टांक के, एक ढीली गोट को सही से सिलकर या एक रजाई में पैबंद लगाकर क्या मिलता है? ''शांति और आशा,'' एक 32 वर्षीय बंदी प्रमोद कहते है जो यहाँ उम्र कैद काट रहे है। वह पेशे से एक दर्जी है और अब उनके पास सिलाई और डिज़ाइन में विशेषज्ञता का प्रमाण पत्र भी है, यह सब रोटरी सिंगर सिलाई केंद्र के कारण संभव हुआ जिसका उद्घाटन जून 2017 में जेलों के पुलिस महानिदेशक आईपीएस सोमेश गोयल एवं सिंगर इंडिया में मानव संसाधन, सीएसआर और विज्ञापन की उपमहाप्रबंधक अल्पना सरना द्वारा किया गया था।

रोटरी क्लब शिमला, मंडल 3080, के पूर्व अध्यक्ष मनु अग्रवाल कहते है कि रोटरी एवं सिंगर भारत की साझेदारी समस्त भारत में अनेक परिवारों को संतोषजनक आजीविका प्रदान कर रही है। ''शुरुआत में, हम शिमला के असहायों के एक आवास में व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र शुरू करना चाहते थे। लेकिन, जेल के अंदर इसको स्थापित करने का विचार ज्यादा अच्छा लगा। यह कैदियों को सुधारने में मदद कर सकता है और समाज में उनके पुनः स्थापन को आसान बना सकता है।''

22 सिलाई मशीनों (जिसमें 7 डिज़ाइनर मशीनें भी शामिल है) और सिंगर भारत की तरफ से एक

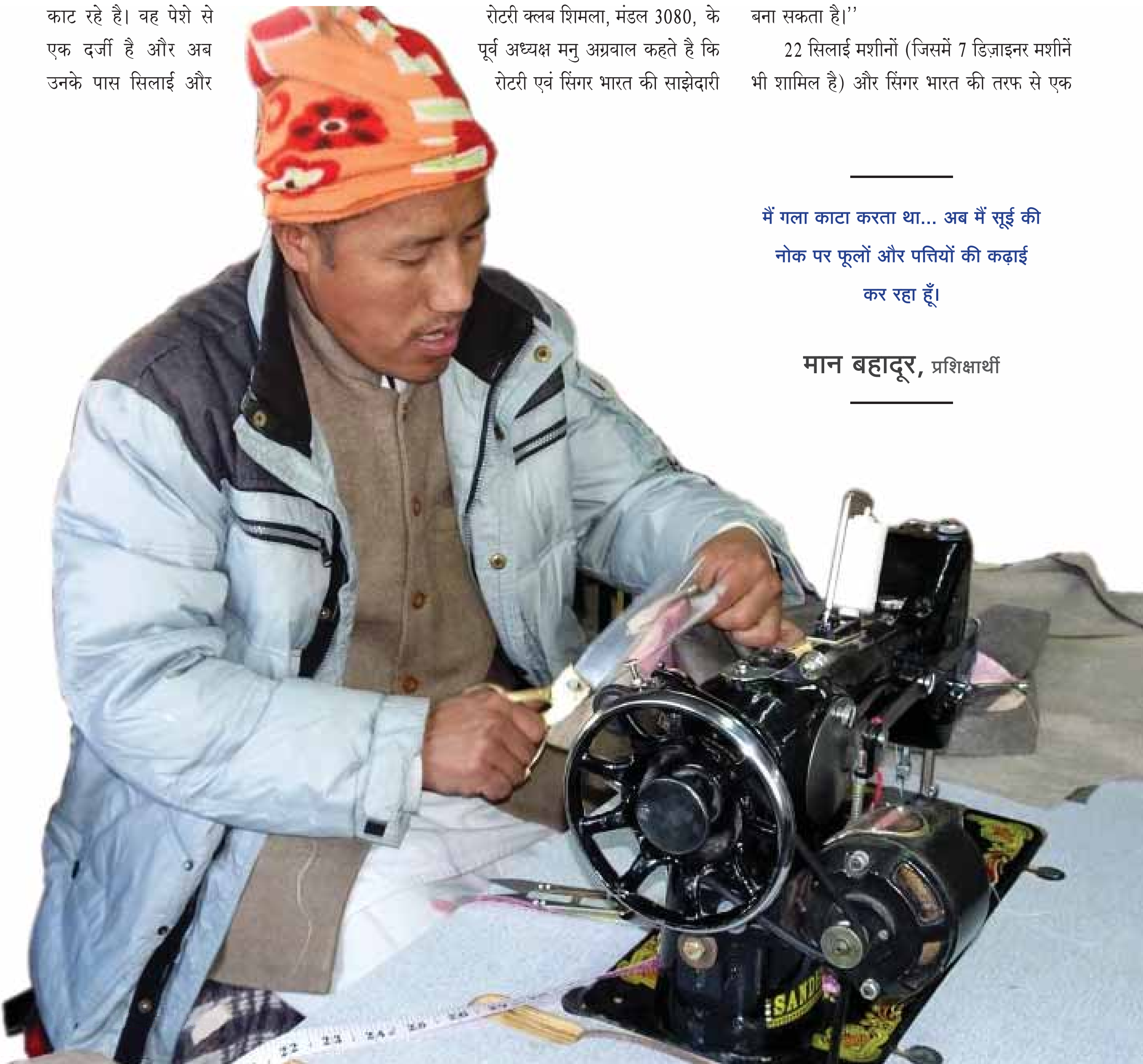

मैं गला काटा करता था... अब मैं सूई की नोक पर फूलों और पत्तियों की कढ़ाई कर रहा हूँ।

मान बहादूर, प्रशिक्षार्थी

बायीं ओर से: *सोमेश गोयल पुलिस महानिदेशक (जेल), मनु अग्रवाल, आईपीपी रोटरी क्लब ऑफ शिमला, सविता गोयल, अल्पाना सरना, डीजीएम सिंगर इंडिया लिमिटेड और पूर्व जेल के प्रबंधक एस.सी. शर्मा जेल के अधीक्षक टेलरिंग यूनिट में।*

विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ, जेल के अंदर स्थापित 'रोटरी-सिंगर एक नयी पहचान केंद्र' ने पहले ही हिमाचल खादी योग और एक स्वतंत्र डिज़ाइनर के साथ जुड़ने की सफलता प्राप्त कर ली है। ''हमने उत्पादन शुरू कर दिया है,'' अग्रवाल कहती है।

जेल अधीक्षक सुशील ठाकुर कहते है कि व्यवसाय कैदियों को उनकी उग्रता को सही एवं सकारात्मक दिशा देने में मदद करता है। फ़िलहाल, योजना 35 कैदियों को प्रशिक्षित करने की है और वे एक माह में ''कपड़ों की सिलाई और तकिये की कढ़ाई'' करके लगभग रु 3,000 कमा लेते है। वे दिन में 6 - 8 घंटे काम करते है ''जिससे उन्हें आसानी से समय व्यतीत करने और पहचान एवं सम्मान की अनुभूति को पुनः प्राप्त करने में मदद मिलती है।'' जहाँ बहुत से कैदी कार्यक्रम से पैसों के कारण जुड़े, वहीं ''सिलाई करने का असली प्रतिफल उनके चेहरे पर तब दिखा जब उन्होंने उनके पहले कुर्ते और पजामे के सेट की सिलाई को पूर्ण किया। वे उनकी स्वयं की क्षमताओं से चकित थे,'' ठाकुर कहते है।

हत्या के इल्जाम में खेध मान बहादुर कहते है ''संक्षेप में कहे तो, मैं गला काटा करता था... अब मैं सूई की नोक पर फूलों और पत्तियों की कढ़ाई कर रहा हूँ।'' बेचे जा सकने वाली एक अच्छी कशीदाकारी को एकाग्रता, धैर्य, और समर्पण की आवश्यकता होती है; इसे जल्दबाजी में नहीं किया जा सकता, वह समझाते है, आगे कहते हुए, ''मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं किसी भी चीज़ के सामने झुकूँगा। लेकिन कशीदाकारी ने झुका दिया और यह बहुत ही संतोषप्रद है।''

सब पुरानी बातों को भूल कर मास्टर जी बनना है हमें और सिलाई की दुकान खोलनी है

श्याम लाल जो अपनी अंतिम वर्ष की सज़ा काट रहे हैं।

रतन चंद, वन विभाग के पूर्व अधिकारी जो भ्रष्टाचार के लिए 7-साल की सजा काट रहे है, कहते है, ''जब मैं सिलाई की कक्षा में प्रवेश करता हूँ तो मेरा दिमाग जेल से बाहर चला जाता है। कोठरी में, कोई भी सरलता से उदास, हारा हुआ और बेकार महसूस कर सकता है; लेकिन यह कक्षा आपको बहुत ही रचनात्मक बनाती है।'' अपनी अंतिम वर्ष की सजा काट रहे शाम लाल (64) के लिए, पजामा, कुर्ता और दूसरे कपड़ों की सिलाई सीखना बहुत ही लाभदायक होने वाला है। ''सब पुरानी बातों को भूल कर मास्टर जी बनना है हमें और सिलाई की दुकान खोलनी है,'' वह कहते है।

''हम ऐसे आदमियों के साथ काम कर रहे है जिनकी आप कभी दर्जी के रूप में कल्पना नहीं कर पाएंगे,'' अग्रवाल कहती है, ''लेकिन फिर वे नीचे बैठ जाते है और केवल शांति पाने के लिए सिलाई करते है और हमें आशा कि वह उन्हें मिल जाए।''■

एक अकेले क्लब द्वारा एक साल में

106 हैप्पी स्कूल

रशीदा भगत

रोटरी क्लब बैंगलोर के रोटरीयनों द्वारा हैप्पी बनाये गए एक हैप्पी स्कूल में हैप्पी बचें।

बैंगलोर के रोटरी क्लब, रोई मंडल 3190, ने रोटरी वर्ष 2016-17 में 106 की बड़ी संख्या में सरकारी प्राथमिक स्कूलों का निर्माण/मरम्मत की है। 100वें स्कूल का उद्घाटन 27 जून को कर्नाटक के लाकेनाहल्ली में पीआरआईडी शेखर मेहता द्वारा किया गया, साथ ही कार्यक्रम में पीआरआईडी पांडूरंगा शेट्टी और पीडीजी रवि वाडलामानी ने हिस्सा लिया। 30 जून तक, इस क्लब द्वारा निर्मित स्कूलों की संख्या 106 तक पहुँच गई थी!

वर्ष 1934 में शुरू हुए इस 255 सदस्यीय क्लब के पूर्व अध्यक्ष रंगा राव कहते है कि उनके 83 साल के इतिहास में, क्लब ने 40 ग्रामीण प्राथमिक स्कूलों का निर्माण किया, रोटरी बैंगलोर विद्यालय, रोटरी टीटीके ब्लड बैंक, एक डायलिसिस केंद्र, बेंगलुरु के चन्नासांद्रा में एक अस्पताल, जहाँ पर मुफ्त इलाज किया जाता है, और शौचालय खण्डों की स्थापना की, गाँवों को सौर्य आधारित ऊर्जा के साधन दिए और भी बहुत सारी समाज से जुड़ी परियोजनाएं की।

100-स्कूल चुनौती तब शुरू हुई जब रोटरी संस्थान के 100वें वर्ष में, क्लब अपने सदस्यों को शिक्षण और साक्षरता के क्षेत्र में एक प्रभावकारी परियोजना में शामिल करना चाहता था, क्योंकि भोजन, आवास और जल के साथ-साथ शिक्षा एक मौलिक मानव अधिकार है। ''भारत में इतने बड़े पैमाने पर निरक्षरता की वजह प्राथमिक शिक्षा और व्यस्क साक्षरता दोनों को कम मिलने वाली प्राथमिकता एवं स्कूली छात्रों के लिए कम या अपर्याप्त आधारभूत संरचना है,'' वह कहते है।

इस परिस्थिति में, क्लब के वर्ष 2016-17 के आने वाले बोर्ड को आश्वस्त किया गया कि साक्षरता ही सफलता की कुंजी है, और टीआरएफ शताब्दी वर्ष के दौरान TEACH कार्यक्रम के तहत यह कुछ अनोखा करेगा। 3 जुलाई को ''संस्थापन समारोह में, पीडीजी रवि वाडलामानी ने हमें 'सपने देखने की हिम्मत करने' के लिए प्रोत्साहित किया और प्रार्थना की कि हम उस रोटरी वर्ष में 100 स्कूलों के निर्माण की चुनौती को स्वीकार करें। सभी दर्शक मंत्रमुग्ध थे और आप कह सकते है कि हमने चुनौती स्वीकार कर ली जबकि हम अभी तक चकित है,'' राव कहते है।

पीडीजी रवि वाडलामानी ने हमें उस रोटरी वर्ष में 100 स्कूलों के निर्माण की चुनौती को स्वीकार करें। सभी दर्शक मंत्रमुग्ध थे और हमने चुनौती स्वीकार कर ली जबकि हम अभी तक चकित है।

रोटरी कल्ब बैंगलोर के पूर्व धध्यक्ष
रंगा राव

राव याद करते हुए कहते है कि वह ऐसी ही हैरानी में घर चले गए, ''उस रात को भूल पाना मेरे लिए मुश्किल है... जो चुनौती हमने स्वीकार की है क्या वह संभव है, या केवल एक कल्पना मात्र है, मैंने अपने आप से पूछना ज़ारी रखा। और अंततः मैं उस पर विचार करते हुए सो गया। मैं पीडीजी रवि को इस अपील का श्रेय देना चाहता हूँ जो सीधा हमारे दिलों तक पहुँची। मुझे बाद में पता चला कि हमारे बहुत से सदस्य उस रात को ठीक से सो नहीं पाए थे, यही सोचते हुए कि कैसे इस स्वप्न को हकीकत में बदला जाए,'' वह आगे कहते है।

आगे ढेर-सारी चुनौतियाँ थी। पहली तो उनके अपने दिमाग में चल रहे विचारों के साथ शुरू हुई। ''मैं सच में बहुत आश्चर्य कर रहा था कि क्या हम इतनी बड़ी परियोजना कर सकते है।'' राव याद करते है, एक शाम, अपने हाथ में एक ड्रिंक के साथ बैठे हुए, वह अपने एक दोस्त से फ़ोन पर इस विशाल परियोजना के विचार और इसके कार्यान्वियन में आने वाली चुनौतियों के बारे में बात कर रहे थे। कुछ समय बाद, उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी कंचन अपने हाथ में रु 3 लाख के एक चेक के साथ कमरे में प्रवेश कर रही थी। उनकी पत्नी ने धीरे से कहा: ''यह आपकी स्कूल परियोजना के लिए है। और मैंने कहा कि मैं नहीं जानता कि हम इसे कर भी पाएंगे या नहीं और उसने कहा कि मैं जानती हूँ आप करोगे। इन पैसों को पहला योगदान समझकर स्वीकार करें।''

यह दिलचस्प एवं महत्वपूर्ण है कि उनकी पत्नी कंचन एक प्रशिक्षित मोंटेसरी शिक्षक है,

हम इस परियोजना के लिए धन हेतु किसी के पास भी नहीं गए, हाल ही में जब क्लब के कुछ सदस्य यूके और यूएस गए और इस परियोजना के बारे में बात की तो दोनों देशों के दो से तीन मंडलों ने इस परियोजना से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की।

पीआरआईडी पांडु रंगा शेट्टी

और बेशक समझती होंगी कि सीखने की एक सुखद जगह बच्चों की पढ़ाई के लिए कितना महत्व रखती है।

रोटेरियन जानते थे कि उन्हें केवल साधारण स्कूलों का निर्माण नहीं करना है, बल्कि हैप्पी स्कूलों का निर्माण करना है, उन सभी तत्वों के साथ जिन्हें एक तत्व में परिभाषित किया जा सकता है: बड़ी सफाई से एवं उत्साही रंगों से रंगी हुई चाहरदीवारी से सुरक्षित सुव्यवस्थित स्कूल की ईमारत, लड़के एवं लड़कियों के लिए पर्याप्त और कार्यात्मक पृथक शौचालय ताकि लड़कियों को आवश्यक निजता मिल सके; हाथों की धुलाई के स्टेशन, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों दोनों के लिए स्वच्छ और पर्याप्त पीने योग्य पानी; एक सुसज्जित पुस्तकालय, खेल सामग्री; खेल-कूद उपकरण; छात्रों के लिए बेंच और डेस्क; शिक्षक गणों के लिए सुव्यवस्थित स्थान; और छात्रों के लिए किताबें, स्कूल बैग और जूते।

उनके अपने आश्चर्य और ताज्जुब में, इस परियोजना के लिए क्लब स्तर पर जमीनी हकीकत उत्साह एवं व्यस्त गतिविधियाँ थी। बैठकों के तेज सिलसिले चले; लॉजिस्टिक्स समर्थन को एकत्रित किया गया, बड़ी छूट पर सामग्रियों के साधन जुटाएं गए, ठेकेदारों के पाँच दल बनाए गए और रोटेरियन अर्जुन मेंडा, दो पूर्व अध्यक्षों एवं अन्य लोगों के साथ पीआरआईडी पांडू रंगा शेट्टी के नेतृत्व वाले एक 12 सदस्यीय एक्शन समूह का गठन किया गया। क्लब द्वारा देखी गई सहजता की तीव्रता देखे जाने एवं आनंद लिए जाने योग्य थी। ''सदस्यों ने योगदान करने और आगे आने की जरुरत को महसूस किया, कई सदस्य जिन्होंने पोलियोप्लस कार्यक्रम की सफलता का स्वाद चखा था वे मानते थे कि हम इसे कर सकते है और अन्य सदस्य 'HAPPY 100' बनाने में सम्मिलित होकर इतिहास का एक हिस्सा बनना चाहते थे।''

अगली चुनौती स्कूलों की पहचान करने की थी। कर्नाटक में 50,632 सरकारी प्राथमिक विद्यालय है; ''हम केवल सरकारी स्कूलों को ही लेना चाहते थे, क्योंकि उन्हें अच्छी सुविधाओं की सख्त आवश्यकता है। मगर प्रश्न यह था कि कौन से 100 स्कूल और उन्हें कैसे ढूँढा जाए।'' इसलिए दल ने कर्नाटक सरकार के सर्व शिक्षा अभियान से संपर्क किया और सूची को 584 स्कूलों तक सीमित किया। ''मगर समस्या यह थी कि वे बेंगलुरु से 40-80 कि. मी. की दूरी पर स्थित थे। हालाँकि बेहद मुश्किल था, फिर भी हमने उनमें से प्रत्येक स्कूल का दौरा किया और ऐसे 100 स्कूलों की पहचान की जिनमें परियोजना की लागत रु 3 से 4 लाख, हमारे द्वारा निर्धारित प्रत्येक स्कूल के लिए राशी, से अधिक ना हो,'' वह आगे कहते है।

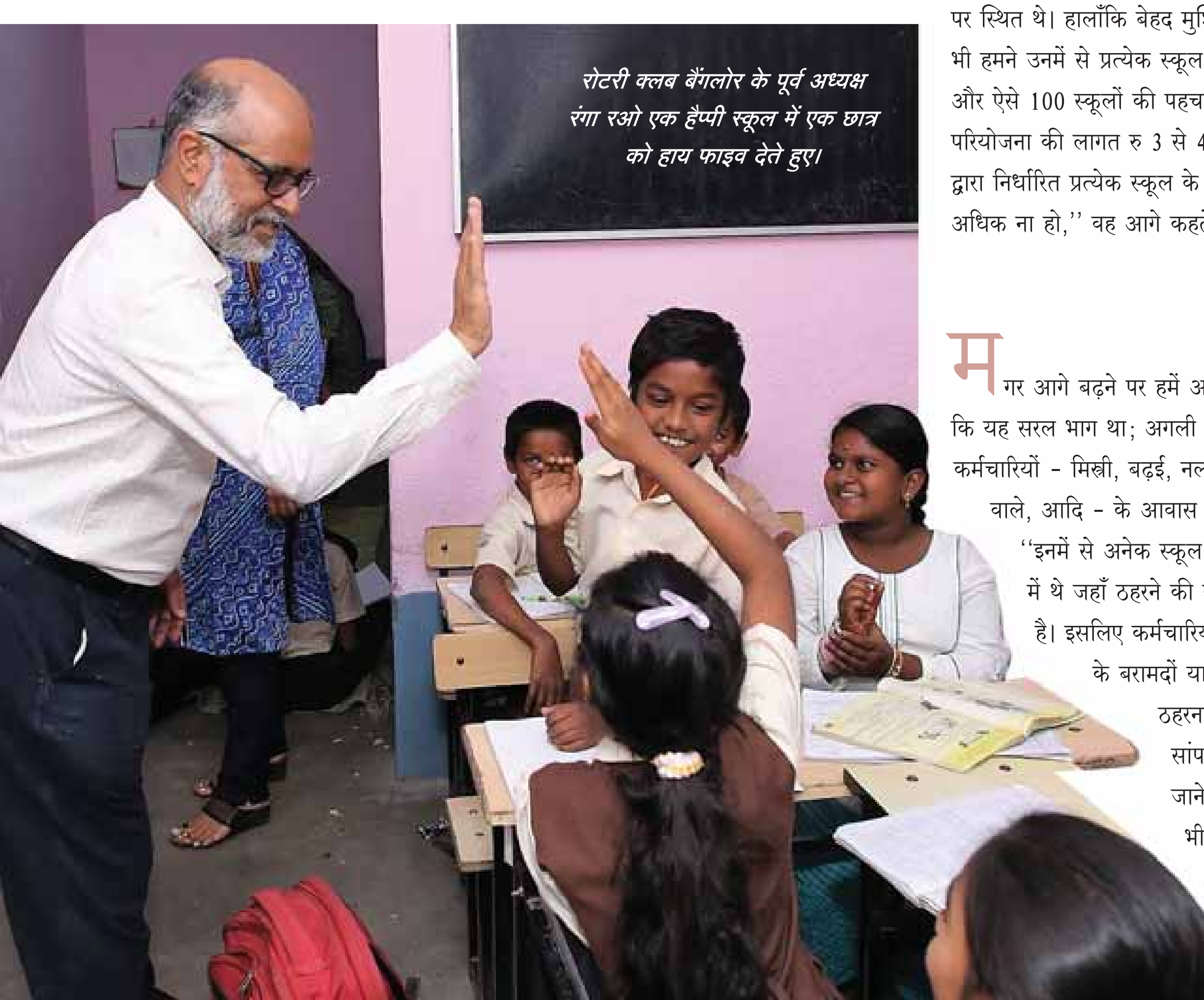

रोटरी क्लब बैंगलोर के पूर्व अध्यक्ष रंगा रओ एक हैप्पी स्कूल में एक छात्र को हाय फाइव देते हुए।

मगर आगे बढ़ने पर हमें अहसास हुआ कि यह सरल भाग था; अगली बड़ी चुनौती कर्मचारियों - मिस्त्री, बढ़ई, नलकार, बिजली वाले, आदि - के आवास की थी क्योंकि ''इनमें से अनेक स्कूल दूर स्थित गाँवों में थे जहाँ ठहरने की कोई सुविधा नहीं है। इसलिए कर्मचारियों को स्कूल के बरामदों या कक्षाओं में ठहरना/सोना पड़ा और सांप द्वारा काट लिए जाने के खतरे का भी सामना करना पड़ा।'' कुछ

स्कूल तो इतनी अधिक दयनीय स्थिति में थे कि खिड़की के बाहर ही पौधे और घास उग रही थी, दीवारें फफूंद से भरी थी और या तो वहाँ पानी नहीं था या बेहद ही दूषित जल था। इसलिए सबसे पहले, हमें कर्मचारियों के लिए सुरक्षित पीने योग्य पानी की व्यवस्था करनी पड़ी!

अगली चुनौती इन स्कूलों तक निर्माण सामग्री के परिवहन की व्यवस्था करने की एवं कक्षाओं के चलते समय निर्माण करने की थी। ''हमें ऐसे बहुत कम स्कूलों में काम करने की सुविधा प्राप्त हुई जहां छुट्टियाँ चल रही थी; अधिकतर स्कूलों में, कक्षाएं चल रही थी और हमें बच्चों को परेशान ना करते हुए, और चारों ओर फैली निर्माण सामग्री से उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए काम जारी रखना था,'' राव कहते है।

यहाँ पर हैप्पी स्कूल परियोजना समिति के अध्यक्ष रोटेरियन मंजुनाथ ने मुख्य भूमिका निभायी। स्वयं निर्माण व्यवसाय में होने के नाते, उन्होंने रियायती दर पर निर्माण सामग्री की खरीद का प्रबंध किया, कर्मचारी ढूंढें, जो दूसरी चुनौती थी, और जब भी कोई समस्या आई उसका हल निकाला। राज्य सरकार के शिक्षा विभाग से ''हमें बहुत सहयोग प्राप्त हुआ। ऐसा अनुमान लगाया गया कि रियायती दर पर सामग्री और सेवाओं के साथ प्रत्येक स्कूल की औसत लागत रु 350,000 पड़ेगी। परियोजना की औपचारिक घोषणा 19 सितम्बर, 2016 को क्लब की बैठक में की गई और पहला विद्यालय जिसे 'हैप्पी स्कूल' में बदलने के लिए चुना गया वह होरोकेतनाहल्ली में था और उसका उद्घाटन वाडलामानी की उपस्थिति में नवम्बर 2016 में किया गया,'' मंजुनाथ कहते है।

परियोजना को औपचारिक रूप से 19 सितंबर, 2016 को एक क्लब बैठक में घोषित किया गया और पहला स्कूल जिसे 'हैप्पी स्कूल' में तब्दील किया गया वह हरोकैतनहल्ली में थी और इसका उद्घाटन वडलामनी की उपस्थित में नवंबर 2016 में किया गया, मंजूनाथ कहते हैं।

यह TEACH कार्यक्रम का सर्वोत्तम रूप है; एक साल में 100 से अधिक हैप्पी स्कूल करना, और इसे दूसरे वर्ष भी जारी रखना एक उदाहरण है कि हम क्या हासिल कर सकते है यदि हम एक साथ मिलकर कुछ करें तो।

धन इकट्ठा करने के अत्यंत कठिन कार्य पर आते हुए - अनुमानित रु 350,000 की आवश्यकता थी। धन इकट्ठा करने के लिए आयोजित एक गोल्फ कोर्स से उन्हें संयुक्त रूप से रु 36 लाख प्राप्त हुए, और *विद्या के लिए कला प्रदर्शनी*, जिसमें बेंगलुरु के प्रसिद्ध कलाकारों जैसे जतिन दास, एस. जी. वासुदेव और गुरुदास शेनॉय ने आधी कीमत पर अपनी कलाएं दी, के माध्यम से दल को अतिरिक्त रु 9 लाख जुटाने में मदद मिली।

लेकिन वे मुख्यतः रोटेरियन थे जिन्होंने परियोजना के लिए रु 1 से 12 लाख तक का दान दिया, ''साथ ही कुछ लोगों ने रु 30 से 40 लाख तक का दान दिया,'' क्लब के एक सदस्य और परियोजना समिति के अध्यक्ष पीआरआईडी पांडूरंगा शेट्टी कहते है। उनकी स्वयं के शैक्षणिक ट्रस्ट राष्ट्रीय शिक्षण समिति ने इस परियोजना के लिए रु 25 लाख दान दिए।

''इस परियोजना के बारे में जो अनूठी बात है वह यह है कि साल खत्म हो गया लेकिन परियोजना अभी भी चल रही है और इस रोटरी वर्ष में भी, हमारे क्लब ने अतिरिक्त 100 सरकारी प्राथमिक स्कूलों को 'हैप्पी स्कूलों' में परिवर्तित करने की चुनौती स्वीकार की है,'' वह आगे कहते है।

राव आगे कहते है, ''अज़ीम प्रेमजी संस्थान के साथ साझेदारी में हमने पहले से पूर्ण हो चुके 106 स्कूलों के 500 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की योजना बनायी है, और इन स्कूलों में अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ जारी रखेंगे।''

पीआरआईडी मेहता और रोटरी भारत साक्षरता मिशन के अध्यक्ष, जिन्होंने 100वें

स्कूल का उद्घाटन किया, कहते है, ''यह TEACH कार्यक्रम का सर्वोत्तम रूप है; 300 गाँवों के कुछ 16,000 बच्चों को लाभान्वित करते हुए एक अकेले क्लब द्वारा एक साल में 100 से अधिक हैप्पी स्कूल करना, और इसे दूसरे वर्ष भी जारी रखना - अगले दो क्लब अध्यक्षों का भी इस हैप्पी स्कूल परियोजना के लिए समान रूप से समर्पण - एक उदाहरण है कि हम क्या हासिल कर सकते है यदि हम एक साथ मिलकर कुछ करें तो।''

क्लब के सदस्यों और अध्यक्षों की प्रशंसा करते हुए, ''पीआरआईडी पांडू और सभी दानकर्ता, और बेशक हैप्पी स्कूल राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष रवि वाडलामानी, जिन्होंने इस परियोजना का विचार प्रस्तुत किया और उसे करने के लिए क्लब को प्रोत्साहित किया, मेहता ने आगे कहा: यह मेरे ह्रदय को सबसे बड़ी खुशी और आशा से भर देता है कि भारतीय रोटेरियन भारत को साक्षर बनाने और बच्चों की पढ़ाई के लिए एक खुशनुमा वातावरण तैयार करने के लिए कितना अधिक कर सकते है।''

पीआरआईडी शेट्टी ने आगे कहा, ''जबकि हम इस परियोजना के लिए धन हेतु किसी के पास भी नहीं गए, हाल ही में जब क्लब के कुछ सदस्य यूके और यूएस गए और इस परियोजना के बारे में बात की तो दोनों देशों के दो से तीन मंडलों ने इस परियोजना से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की, हालाँकि हमने किसी से भी वित्तीय सहायता की मांग नहीं की है।''

राव आगे कहते है, ''हम इन सभी 100 स्कूलों जो कन्नड़, उर्दू, तमिल और तेलुगु भाषाओँ में शिक्षा देते है, को तीन वर्षों के अंदर आदर्श स्कूलों में बदलना चाहते है। नियोजन, लॉजिस्टिक्स, धन इकठ्ठा करने और क्रियान्वयन करने के इस विशाल कार्य, जिसने 50,000 लोगों को लाभान्वित करते हुए 300 गाँवों के 106 स्कूलों को प्रभावित किया, जिसमें 9,500 श्रम घंटे शामिल है, ने हमें भरोसा दिलाया कि हम कर्नाटक के बच्चों को लाभान्वित करने के लिए इस परियोजना को जारी रख सकते है।''

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

सांसेरा इंजीनियरिंग के एम डी और एक उदारदाता (बाएं) एफ आर सिंघवी, और रंगाव एक पुनर्निर्मित स्कूल में बच्चों के साथ।

WHERE WILL ROTARY GLOBAL REWARDS TAKE YOU?

THE MEMBER BENEFIT PROGRAMME THAT OPENS UP A WORLD OF OPPORTUNITIES.

Rotary

SEE MORE AT ROTARY.ORG/ GLOBALREWARDS

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

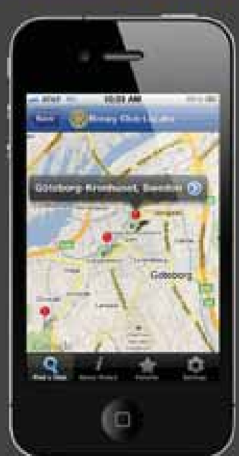

Get Rotary's free Club Locator app and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

District Wise TRF Contributions as on October 2017

(in US Dollars)

District Number		APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India						
2981		14,172	882	0	0	15,054
2982		15,319	70	2,725	0	18,113
3000		6,217	3,738	33,195	0	43,150
3011		39,925	284	39,598	0	79,807
3012		47,068	1,578	0	3,016	51,661
3020		11,227	934	19,950	17,378	49,489
3030		203	22,724	1,050	0	23,977
3040		418	0	10,435	0	10,853
3053		1,158	0	5,250	0	6,408
3054		70,042	102	73,000	0	143,144
3060		20,028	486	206	11,000	31,720
3070		12,518	148	16,617	89	29,372
3080		8,821	3,845	10,500	0	23,166
3090		508	0	0	0	508
3100*		3,575	0	0	345	3,919
3110		22,554	2,245	50,132	0	74,931
3120		13,514	508	0	0	14,022
3131		57,758	4,400	126,479	48,094	227,930
3132		23,177	660	0	0	23,836
3141		209,430	5,971	105,323	4,000	324,723
3142		139,215	336	0	1,000	138,551
3150		21,049	3,093	9,126	0	33,268
3160		31,317	0	0	0	31,317
3170		17,980	6,788	3,007	0	27,775
3181		18,362	250	0	78	18,690
3182		11,217	0	20,843	0	32,060
3190		803	300	6,095	16	7,214
3201		37,103	1,959	71,700	0	110,762
3202		3,694	556	0	0	4,249
3211		21,754	0	0	10,000	11,754
3212		164,330	1,748	0	0	166,078
3231		20,131	0	61,250	16,000	97,381
3232		35,801	10,234	23,664	0	69,699
3240		12,643	225	0	555	13,422
3250		16,339	0	0	0	16,339
3261		22,760	100	0	0	22,860
3262		924	100	0	0	1,024
3291		22,034	24,973	21,325	0	68,333
India Total		**1,175,085**	**90,433**	**711,470**	**89,570**	**2,066,558**
3220	Sri Lanka	19,703	10,092	0	1,217	31,012
3271	Pakistan	2,000	23,006	0	0	25,006
3272	Pakistan	329	885	0	1,000	444
3281	Bangladesh	148,552	2,535	28,353	25,025	204,465
3282	Bangladesh	26,626	1,151	0	0	27,777
3292	Nepal	18,770	105	91,271	0	110,146
South Asia Total		**1,391,064**	**126,437**	**831,094**	**116,812**	**2,465,408**
World Total		**29,230,389**	**11,149,651**	**4,240,777**	**6,903,249**	**51,524,066**

** non-districted*

Source: RI South Asia Office

आईपीडीजी के विजयकुमार (बीच में), आईपीपी जी वासु, पीडीजी टी ए नेल्लैनायगम और डीजी एन शेख सलीम रामासेशियर स्कूल के शौचालय ब्लॉक के उद्घाटन के बाद छात्रों और स्कूल कर्मचारियों के साथ।

अच्छे कार्यों के 75 वर्ष

जयश्री

तिरुनेवेली के रोटरी क्लब, मंडल 3212, इस साल आपने 75 वर्ष पूरे करेगा; समुदाय में उनकी प्लेटिनम यात्रा ने मंडल को तीन गवर्नर देने के अतिरिक्त, शौचालय का निर्माण करके और स्कूलों में फर्नीचर, पास के गाँवों के लिए जल भण्डारण की टंकी, एक आंगनवाड़ी, शहर भर में बस यात्रियों के लिए आश्रय और स्वास्थ्य शिविर प्रदान करके समुदाय में महत्वपूर्ण बदलाव लाए है।

रोटेरियनों ने हाल ही में तमिलनाडु के तिरुनेलवेली के पास पट्टामड़ई के रामासेशिएर स्कूल के बच्चों के लिए शौचालय खण्ड और हाथों की धुलाई के स्टेशनों का निर्माण करके इस महत्वपूर्ण दिवस का उत्सव मनाया। ''स्कूल 125 वर्ष पुराना है, लेकिन इसके पवित्र परिसर में, शौचालय बड़ी दयनीय स्थिति में पाए गए। फिर हमने सर्वसम्मति से निश्चय किया कि यह हमारी प्लेटिनम जयंती का कार्य होगा,'' क्लब के टीआरएफ अनुदान प्रमुख सतीशकुमार कहते है। 500 लड़के और 250 लड़कियों के साथ स्कूल में बच्चों की संख्या 750 है। जहाँ लड़के शौच के लिए पास के खेतों में जाते थे, वहीं लडकियां स्कूल के सुनसान शौचालय का इस्तेमाल करती थी। उसमें पानी की कोई सुविधा नहीं थी, वह ''बहुत बुरी हालत में था और खासतौर पर किशोर लड़कियों के लिए तो भयावह था।''

लेकिन आज यह धरोहर रुपी स्कूल आधुनिक शौचालय सुविधा का बखान कर सकता है, और यह सब क्लब की 'विस्तृत स्वास्थ्य प्रबंधन परियोजना' के कारण संभव हुआ जिसमें शौचालय खण्ड और लड़के एवं लड़कियों के लिए हाथ

धुलाई के स्टेशन, लड़कियों के लिए इन्सिनरेटर (भट्टी), और पर्याप्त पानी प्रदान करने के लिए बोरेवेल और पंपसेट शामिल थे। शौचालयों का निर्माण बहुत सोच विचार करके किया गया; हेल्थ फॉसेट से सुशोभित भारतीय एवं पश्चिमी शौचगृह स्थापित किये गए और फर्श पर फिसलन रोधक टाइल्स लगाई गई।

आठवीं कक्षा की के विजयालक्ष्मी जब भी शौचालय जाती है या इन्सिनरेटर का उपयोग करती है तो अपने विस्मय को दबा नहीं पाती है। ऐसा ही अधिकतर बच्चे करते है। बच्चों को कक्षा में रखना अब शिक्षकों के लिए चुनौती है। ''वे कक्षा के समय पर भी शौचालय जाना चाहते है,'' एक शिक्षक कहते है। 'परिवर्तन के एजेंट' बनने के सिद्धांत पर, अब कुछ बच्चे अपने माता-पिता से घर में भी शौचालय बनाने की जिद कर रहे है। उदाहरण के लिए, विजयलक्ष्मी चाहती है कि ''मेरे अगले जन्मदिन से पहले उसके घर में शौचालय का निर्माण हो जाए।''

क्लब ने कोडेकनाल के जल, स्वच्छता और स्वास्थ्य संस्थान के माध्यम से बच्चों एवं शिक्षकों के लिए धुलाई की आदतों एवं स्वच्छता के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण का आयोजन किया था। सतीशकुमार कहते है, ''चूँकि बहुत से बच्चें पश्चिमी प्रकार से अनभिज्ञ थे, तो यह जरूरी है कि हम उन्हें इसके इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षित करें।''

परियोजना की लागत 33,000 डॉलर थी जिसे यूएस के मंडल 6250 के ला क्रोसे वैली व्यू और ला क्रोसे डाउनटाउन के रोटरी क्लबों के वैश्विक अनुदान और टीआरएफ के माध्यम से जुटाया गया, और डीडीएफ से प्रारंभिक धन प्राप्त हुआ। ''पहले मुझे अनुदान के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया को समझने में कठिनाई हुई, लेकिन जब मैं रोटरी की वेबसाइट पर गया, तो मुझे पता चला यह बहुत ही आसान कार्य था। यह इतना आसान है कि कंप्यूटर का थोड़ा भी

चूँकि बहुत से बच्चें पश्चिमी प्रकार से अनभिज्ञ थे, तो यह जरूरी है कि हम उन्हें इसके इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षित करें।

उसतीश कुमार

टीआरएफ चेयर 2016-17, रोटरी क्लब टिनेवेली

ज्ञान रखने वाला कोई भी व्यक्ति एक परियोजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर सकता है,'' अनुदान प्रमुख कहते है।

तत्कालीन डीजी के. विजयकुमार द्वारा पूर्ण व्यवस्थाओं का शुभारंभ किया गया और स्कूल प्रबंधन समिति को सौंप दिया गया जिन्होंने सावधानीपूर्वक इसकी देखभाल करने का वचन दिया।

क्लब अब एक निकटवर्ती गाँव के 40 घरों में शौचालय सुविधाएं प्रदान करने की योजना बना रहा है। ''उनमें से बहुत से खेतिहर मजदूर है। खुले में शौच करना वहाँ पर व्याप्त है। पूरे इलाके से बदबू आती है। हम जल्द ही उन्हें समाधान प्रदान करेंगे... उन्हीं विदेशी साझेदारों की मदद से,'' सतीशकुमार कहते है।

परियोजना की अनुमानित लागत 60,000 डॉलर है। यूएस में, साझेदार क्लब से रोटेरियन सैन्ड्रा और रोज़र लेग्रेंड ने पहले से ही दिवाली नाईट की मेजबानी करके उनका अनुदान संचयन करना चालू कर दिया है।

प्लैटिनम जयंती का उत्सव

इस ऐतिहासिक यात्रा का स्मरण करने के लिए क्लब ने हाल ही में एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया जिसे पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन ने वानाथी के साथ आभूषित किया। उन्होंने रोटेरियनों को पीड़ित लोगों के उत्थान हेतु निस्वार्थ सेवा में लिप्त होने के लिए समझाया और ऐसी परियोजनाएं स्वयं रोटरी की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाएंगी और नए सदस्यों को आकर्षित करेंगी।

उन्होंने क्लब की विभिन्न मानवीय परियोजनाओं की प्रशंसा की और एक क्लॉक टावर की प्रतिकृति का उद्घाटन किया जिसे बस स्टैंड पर स्थापित करने को लेकर क्लब कार्य कर रहा है। क्लब के अध्यक्ष पी. चोकालिंगम ने प्लैटिनम जयंती परियोजनाओं की सूची तैयार की जिसमें एक कैंसर क्लीनिक और एक वृद्धाश्रम शामिल है।■

डीजी चिन्नदुराई अब्दुल्ला (दाएं से दूसरे) और क्लब अध्यक्ष पी चॉकलिंगम ने पीआरआईपी के आर रवींद्रन और उनकी पत्नी वनाथी की उपस्थिति में क्लब के वर्षगाँठ केक को काटा।

नज़ारा पुस्तकों से

संध्या राव

पुस्तकें दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण आविष्कारों की श्रेणी में आती हैं।

गुर्राती हवा की तेज़, बर्फीली अंगुलियों ने कागज़ का वह पन्ना मेरे हाथ से छीन लिया। मैं चिल्लायी लेकिन मेरे होठों से कोई आवाज़ नहीं निकली। धरती की अंतिम पुस्तक का अंतिम पन्ना चला गया था, किसी ब्लैक होल के अगाध अंधेरे में गुम हो गया था, और मैं ज़मीन पर चिपकी सी खड़ी थी अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य में अब आये खालीपन की गूँज को टकटकी लगाकर देखते हुए। चारों तरफ शून्यता बिखरी पड़ी थी - कागज़ का एक भी टुकड़ा नहीं, आलमारी के खानों में एक भी पुस्तक नहीं, मेरी मेज पर अब एक के ऊपर एक पड़ी भारी भरकम पुस्तकों का ढेर नहीं, मेरी ज़िंदगी अब हमेशा के लिए खो गई कहानियों के उफनते समुद्र की तरह हो गई थी

यह हर पाठक के लिए एक दुःस्वप्न की तरह है - पुस्तक-विहीन दुनिया में रहना। यदि मुझे इसे दूसरी तरह कहना पड़े तो मैं यूँ कहूँगी कि मैं हर रंग, स्वाद और बनावट की पुस्तकों के दौर में रहने के लिए हर रोज़ आभार प्रकट करना चाहती हूँ। कुछ समय के लिए यह डर ज़रूर लगा था कि टेकनॉलॉजी छपनेवाली पुस्तकों की सुरक्षित दुनिया में उथल-पुथल मचा देगी। शुक्र है कि वह खतरा उतनी ही तेज़ी से ग़ायब हो गया जितनी तेज़ी से वह उजागर हुआ था, बिना किसी आवाज़ या आवेश या पागलपन के।

दरअस्ल दोनों एक साथ खुशी से रहते हैं। किंडल य मोबाइल पर कोई और एप ख़ासकर तब ठीक हैं जब आपको बिना वज़न के सामान के साथ सफर करना हो लेकिन जीत हमेशा होती है हाथ में पेपरबैक की, जिसके पन्ने आप हाथ से पलटते हैं और कभी-कभी यह याद रखने के लिए कि आपने आखिरी बार कौन सा पन्ना पढ़ा था, आप उसमें एक बुकमार्क छोड़ देते हैं। पुस्तकों को छूने और उन्हें महसूस करने की इच्छा पर काबू रख पानेवाले बहुत कम लोग हैं। और उनकी संख्या तो और भी कम है जो पुस्तकों की गंध, नई पुस्तकों के टोस्ट जैसे कुरकुरेपन, पुरानी पुस्तकों के हल्के पीलेपन, और उम्रदराज़ी के निशान दिखानेवाली अति प्रिय बन चुकी पुस्तकों के प्रति उदासीनता दिखाते हैं।

योहैन्नेस ग्यूटेन्बर्ग ने 1450 में यूरोप में मूवेबल टाइप प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया। उससे ऐसी पुस्तक-क्रांति आई कि उसकी गूँज पूरी दुनिया में सुनाई दी। छपनेवाली सबसे पहली प्रमुख पुस्तक थी लैटिन में छपी *बाइबल* जो *ग्यूटेन्बर्ग बाइबल* के नाम से लोकप्रिय हुई। वैसे 594 में ही चीनी, जापानी और कोरियाई प्रिंट टेकनॉलॉजी से पहले से वाकिफ़ थे। असल में, लगभग 100 बीसी में चीन में कागज़ का आविष्कार हुआ था और माना जाता है कि 105 एडी में हान डिनैस्टी के शासन के दौरान चीन ही में कागज़ बनाने के उद्योग की भी शुरूआत हुई।

पूर्व और पश्चिम के ज्ञान और निपुणता के इस मिलन और संबंध से उपजी सामूहिक चेतना की शिशु हैं पुस्तकें। कहा जाता है कि अक्टूबर 1578 में छपी *तंपीरन वणक्कम* भारत में जन्मी पहली पुस्तक है। यह फ्रैंसिस ज़ेवियर की पुर्तगाली पुस्तक *डॉक्ट्रीना क्रिस्टैम* का तमिल में 16 पन्नों का अनुवाद है। जिस वक्त यह पुस्तक भारत में छपी, उस वक्त विजयनगर, मैसूर, मदुरई और तंजावुर साम्राज्यों के शक्तिशाली शासक सूचना के प्रसार के लिए तांबे और पत्थरों का प्रयोग कर रहे थे। इस दौरान मुग़ल साम्राज्य खुद को मज़बूत कर रहा था। मुग़ल पुस्तकों के बारे में सब जानते थे क्योंकि उनकी अदालतों में आनेवाले विदेशी अपने साथ अकसर पुस्तकें लाया करते थे। हालाँकि उन्हें उनमें कोई खास रुचि नहीं थी; उन्हें कैलिग्राफि (हस्तलिपि-विद्या) में ज़्यादा रुचि थी। लेकिन उनका ताल्लुक इतिहास से था और इसलिए हर अदालत में ऐसे लेखक रखे जाते थे जो सम्राटों के जीवन और समय की जानकारी रखते थे। इसी तरह *अकबरनामा* की पांडुलिपि तैयार हुई। यह अकबर के शासन का दस्तावेज़ है जिसे अबु फ़ज़्ल ने बहुत सूक्ष्मता से तैयार किया था। अकबर के दादा और भारत के पहले मुग़ल शासक बाबर की जीवनी *बाबरनामा* एक आत्मकथा है। अपने पोते अकबर के ठीक विपरीत उसके दादा शिक्षित थे।

प्रिंटिंग प्रेस के आगमन के बावजूद पांडुलिपियाँ हाथ से ही लिखी जाती रहीं, मशीनी टाइपराइटर 1874 में ही जा कर उपलब्ध हुए। फिर आए इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर, और आज हमारे पास वे यंत्र हैं जिन्होंने पैन/

पेंसिल और कागज़ का संबंध लगभग समाप्त ही कर दिया है। सिर्फ QWERTY बचा, तब भी और भी। हर कोई इस चिह्न को जानता है; यह एक टाइपराइटर पर अक्षरों और अंकों को तरीके से लगाने की व्यवस्था है। QWERTY शब्द आपके मोबाइल ही की तरह किसी भी कीबोर्ड पर अंकों के बिल्कुल नीचे की पंक्ति के पहले पाँच अक्षरों को मिलाने से बनता है।

लेकिन समाज में टाइपराइटर के अच्छी तरह स्थापित होने के बावजूद लोगों ने हाथ से लिखना जारी रखा - शेक्सपियर और टैगोर जैसे दुनिया भर के लेखक अपने लेखों को काटते और दोबारा लिखते हुए स्याही से सनी अपनी अंगुलियों द्वारा नाम और प्रसिद्धि पाते रहे। जब मैं 11 या 12 साल की थी, मुझे अचानक *ग्लिंप्सेस ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री* नाम की काली हार्डबाउंड पुस्तक मिली। उसमें लगभग एक हज़ार पन्ने थे और वह पतले कागज़ पर छोटे टाइप में बहुत सलीके से छपी थी। उसके मुखपृष्ठ पर एक अभिलेख था जिससे यह समझ में आया कि वह 5 मई, 1954 को मेरे पिताजी को उनके विवाह के अवसर पर भेंट में दी गई थी। मैंने पन्ने पलटकर उसका पहला अध्याय देखाः 'अ बर्थडे लैटर।' उस पर लिखा था कि वह 13वें जन्मदिन पर इंदिरा प्रियदर्शिनी के लिए थी, और उस पर 26 अक्टूबर, 1930 की तारीख और सेंट्रल प्रिज़न नैनी लिखा था। मैंने उसे पढ़ना शुरू कियाः तुम्हें अपने जन्मदिन पर शुभेच्छाओं और उपहार मिलने की आदत हो गई है। ''तुम्हें अब भी ढेर सारी शुभेच्छाएं तो ज़रूर मिलेंगी, लेकिन मैं तुम्हें नैनी जेल से क्या तोहफा भेज सकता हूँ? मेरे उपहार न तो भौतिक वस्तु हो सकते हैं और न ही कोई ठोस चीज़। वे सिर्फ हवा और मस्तिष्क और आत्मा के हो सकते हैं, मानो तुम पर एक अच्छी परी ने बरसाए हों वे चीज़ें जो जेल की ऊँची दीवारें भी रोक नहीं सकतीं।'' मैं सम्मोहित हो गई।

ग्यूटेन्बर्ग बाइबल

युवाओं के लिए इतिहास का भ्रमणकारी वर्णन मानी जानेवाली यह पुस्तक हमारे पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा उनकी बेटी इंदिरा को लिखे गये पत्रों का संकलन है। यह सबसे पहले 1934 में प्रकाशित हुई। हमारे बुकशेल्फ पर रखी प्रति 1948 में छपी उसका चौथा संस्करण थी। मेरे लिए तो मानो वह हर बात का जवाब हो गई। कोई भी होमवर्क, कोई भी दिया गया काम, कोई भी वक्त मेरे लिए उस पुस्तक को यकायक खोलकर पन्नों पर उभर रही किसी भी बात को पढ़ने का कारण बन जाता। मैं इस वक्त भी वही कर रही हूँ। मैंने वही किताब खोली हैः 70-71 के पन्नों पर। मेरी आँखें सबसे छोटे अनुच्छेद (पैराग्राफ) पर जाती हैं। उसमें लिखा हैः ''हान साम्राज्य के दौरान की दो और महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखनी ज़रूरी हैं। तब वुडन ब्लॉक प्रिंटिंग का आविष्कार हो चुका था लेकिन लगभग 1000 वर्षों तक उसका कोई खास इस्तेमाल नहीं हुआ। तब भी चीन यूरोप से 500 वर्ष आगे था।'' यह क्या है? संयोग? पूर्वज्ञान? इतिहास?

मैं पढ़ना जारी रखती हूँ। ''दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य था लोकाधिकारियों के लिए परीक्षा प्रणाली की शुरूआत। लड़कों और लड़कियों को परिक्षाएं पसंद नहीं होतीं और मुझे उनसे हमदर्दी है। लेकिन लोकाधिकार नियुक्त करने की यह चीनी प्रणाली उन दिनों एक उत्कृष्ट बात थी। बाकी देशों में, अभी हाल तक, अधिकारियों को मुख्य रूप से या तो पक्षपात द्वारा या विशेष वर्ग या जाति का होने के कारण नियुक्त किया जाता था। चीन में जो भी उस परीक्षा में उत्तीर्ण होता, उसे नियुक्त किया जा सकता था। यह एक आदर्श प्रणाली नहीं थी क्योंकि एक व्यक्ति कन्फ्यूशियन क्लासिक्स की परीक्षा पास कर सकता है लेकिन ज़रूरी नहीं कि वह एक अच्छा लोकाधिकारी भी हो।'' परीक्षाएं वह एक विषय जो आज भी हमारे समाज को परेशान करता है।

ज़रा यह नज़ारा अपने मस्तिष्क में उभारियेः देश स्वतंत्रता की आग में उबल रहा है, लोग रोशनी और मार्गदर्शन के लिए आपकी ओर देख रहे हैं और आप लंबे अरसे तक जेल की सलाखों

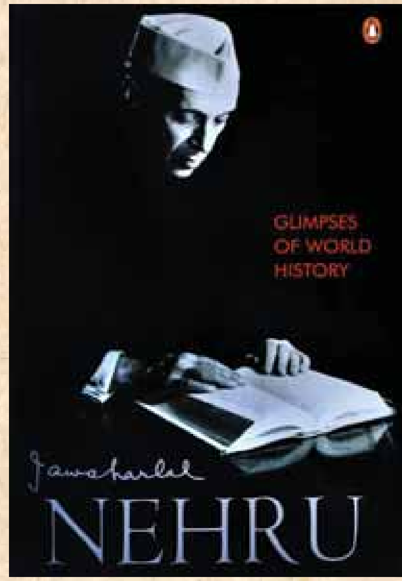

के पीछे हैं। उस माहौल में, जब आपके पास जानकारी पाने का बहुत कम ज़रिया है, आप दुनिया के बारे में इतने स्पष्ट दृष्टिकोण से लिखते हैं। विवरण दिलचस्प है, लेखन आनंदमय। नहीं, यह दुनिया का निर्णायक इतिहास नहीं है; नेहरू प्रस्तावना ही में स्वीकारते हैं कि उनके लेखन में त्रुटियाँ हैं और उन्हें कुछ बातें संभवतः या तो दोबारा लिखनी चाहिए थीं या फिर उनकी दोबारा जाँच कर लेनी चाहिए थी। लेकिन जैसे-जैसे आप उनके साथ कार्थेज से फ्रांस, फ्रांस से टर्की, टर्की से रूस, रूस से जर्मनी, जर्मनी से अरब देशों का सफर करते हैं, आपको अलग-अलग दौर और घटनाओं की असली समझ मिलती जाती है। एक अजीब तरीके से यह समझकर दिलासा मिलता है कि आप गतिविधियों से भरे इस छत्ते के, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं, का हिस्सा हैं; कि आपका उससे संबंध है। यह सब, सिर्फ उनके अपनी किशोरी बेटी को लिखे पत्रों से।

और यदि आप सोच रहे हैं कि पत्र की तारीख 26 अक्टूबर क्यों है जब हम सब जानते हैं कि इंदिरा गाँधी का जन्मदिन 19 नवंबर है, तो नीचे एक फुटनोट में इसकी जानकारी मिलती है। 1930 में उनका जन्मदिन विक्रम संवत के आधार पर 26 अक्टूबर को मनाया गया था। जी हाँ, लगभग हर बात की एक व्याख्या होती है - पुस्तकों में।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

प्रेम के साथ
कानपुर से अमृतसर

नीता मेहरोत्रा और प्रियांकी गर्ग

एक अखिल-महिला मंडली जिसमें एन्स, एन्नेट्स और कानपुर ग्रेटर के रोटरी क्लब (आरसीकेजी), मंडल 3110, के कुछ सदस्य सम्मिलित थे, अमृतसर के स्वर्णिम शहर की यात्रा के लिए रवाना हुई, जिसे हम प्यार से अम्बरसर कहते है। यह यात्रा आध्यात्मिकता (स्वर्ण मंदिर), इतिहास (गोबिंदगढ़ किला और जलियाँवाला बाग), देश प्रेम (वाघा बॉर्डर), मैत्री (अमृतसर के रोटरी क्लब के साथ सभा), पाक-कला (स्वादिष्ट भोजन) और खरीददारी (मसालों से लेकर फुलकारियों और जूतियों तक) का एक पुलिंदा थी।

विंग निदेशक रितु टंडन और अनुभवी 'यात्रा सलाहकार' ऋतु भार्गव के नेतृत्व में, हमारी एन विंग पश्चिम की ओर निकल गई। हालाँकि यात्रा केवल 4 दिन और 3 रातों की ही थी, अत्यंत व्यस्त निर्धारित कार्यक्रम ने हमें सुबह जल्दी उठने और रात को देर से सोने के लिए विवश किया।

हर जगह ध्यान आकर्षित कर रही बहु रंगी पोल्का पोशाक पहने हुए, हमने लखनऊ से एक फ्लाइट पकड़ी और दिल्ली होते हुए हम

अमृतसर पहुंचे। दी ग्रैंड हयात में चेक-इन करने और शीघ्रता से लंच करने के बाद हम सभी मुख्य आकर्षण - स्वर्ण मंदिर को देखने के लिए उत्तेजित और अधीर थे।

स्वर्ण मंदिर आध्यात्मिकता और सुन्दरता का एक प्रतीक है; धार्मिक शहर काशी में पले-बड़े होने के नाते, मुझे (प्रियांकी) तुरंत ही इस शहर से जुड़ाव महसूस हुआ। उस माहौल ने मुझे सकारात्मक सिहरन दी और मैं स्तंभित होकर खड़ी रही। उत्साही श्रद्धालु, समर्पित पहरेदार, *गुरु ग्रन्थ साहिब* की देख-रेख करने वाले *ज्ञानजी* - उन सभी में एक निश्छल *सेवाभाव* था। सबसे आश्चर्यजनक अवलोकन यह था कि दिन प्रतिदिन हजारों भक्तगणों के इस जादुई मंदिर में आने के बावजूद भी पूरा परिसर स्वच्छ था।

दर्शन के लिए कतार में लगना, *परिक्रमा* करना, लंगर में भोजन करना, *शयनपाल्की* रस्म को देखना और विशाल रसोई में *करसेवा* करना, हमने सब कुछ किया। हम में से बहुत से लोगों ने एक से ज्यादा बार मंदिर के दर्शन किये। प्रत्येक दौरे में, हमने मंदिर के एक नए स्वरुप को देखा, दिन में वह धूप से जगमगाया और शाम में मंदिर ने परिधि में अपनी चमक डाली - जादुई, तेजस्वी और दिलकश!

भारत-पाकिस्तान की अटारी-वाघा संयुक्त जांच चौकी (JCP) हमारी अगली मंजिल थी। हमारे अध्यक्ष अनूप मेहरोत्रा के कारण हमें वीआईपी घेरे में विशेष सीटें प्राप्त हुई जिसके

घर वापसी पर, जैसे ही मैंने निशानी के रूप में मिले नमकीन के डिब्बों को खोला और पकवानों पर टूट पड़ी, यादों के नज़ारे सामने आने लगे - अनवरत तस्वीरें खेचना, एक साथ होने की ख़ुशी, हंसी और मजाक-मस्ती!

गोल्डन टेम्पल, अमृतसर।

कारण हम बीटिंग दी रिट्रीट समारोह - भारत और पाकिस्तान के ध्वजों को एक साथ नीचे करने की क्रिया - के साक्षी बन सके। समारोह बीएसएफ के कारनामों के साथ ही प्रसिद्द अभिनेता अमिताभ बच्चन की आवाज में एक कमेंटरी के साथ शुरू हुआ। हवाओं में देशभक्ति का उत्साह था जब बीएसएफ के अमले और पाकिस्तानी रेंजरों ने बिगुल की ध्वनि के बीच मार्च किया। और अंततः, ढलते सूर्य की सुनहरी पृष्ठभूमि पर जब दोनों देशों के झंडे एक साथ नीचे किये गए, तब दैनिक समारोह का समापन हुआ। और भीड़ तितर-बितर हो गई। विशेष प्रबंधन के कारण, हमें बॉर्डर के एकदम अंतिम स्वीकार्य बिंदु तक जाने की अनुमति दी गई थी और हमें भारतीय सेना द्वारा चाय-नाश्ते के लिए भी आमंत्रित किया गया। आरसीकेजी की ऐतिहासिक विशिष्टता वह थी जब हम एन्स ने वहाँ रिट्रीट क्षेत्र में उमंग और गर्व के साथ जॉगिंग करते हुए अपने निशान छोड़े।

हमारी अगली यात्रा गोबिंदगढ़ किले की थी जिसे 1760 में महाराजा रंजीत सिंह द्वारा बनावाया गया था। पर्यटकों के मध्य एक कम विदित गंतव्य स्थल, लेकिन एक देखने योग्य जगह। यह एक अनोखा संग्रहालय है, पंजाब के इतिहास का एक भंडार-गृह जिसे सार्वजनिक लोगों के देखने के लिए फरवरी 2017 से ही खोला गया है। राज्य सरकार ने इस धरोहर स्मारक को प्रायोगिक परियोजना के रूप में लिया है और इसे विशेष पर्यटक आकर्षण प्रदान किया है। एक 7-ऊ फिल्म किले की सुन्दर वास्तुकला, अद्वितीय कोहिनूर हीरे के प्रतिरूप, सिख योद्धाओं के सजीव मोम के पुतले, शाम में एक लेज़र शो, साहसी योद्धाओं का *गतका*-पद्धति (तलवार और ढाल) से तलवारबाजी का प्रदर्शन और आकर्षक लोक नृत्य गिद्धा को प्रदर्शित करती है। गोबिंदगढ़ किले में पंजाबी संस्कृति सजीव हो उठती है। और अगर यह काफी नहीं था, तो इसके प्रसार का कार्य अब भी प्रगति पर है।

जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बारे में बात किये बिना अमृतसर का वर्णन अधूरा है। यह

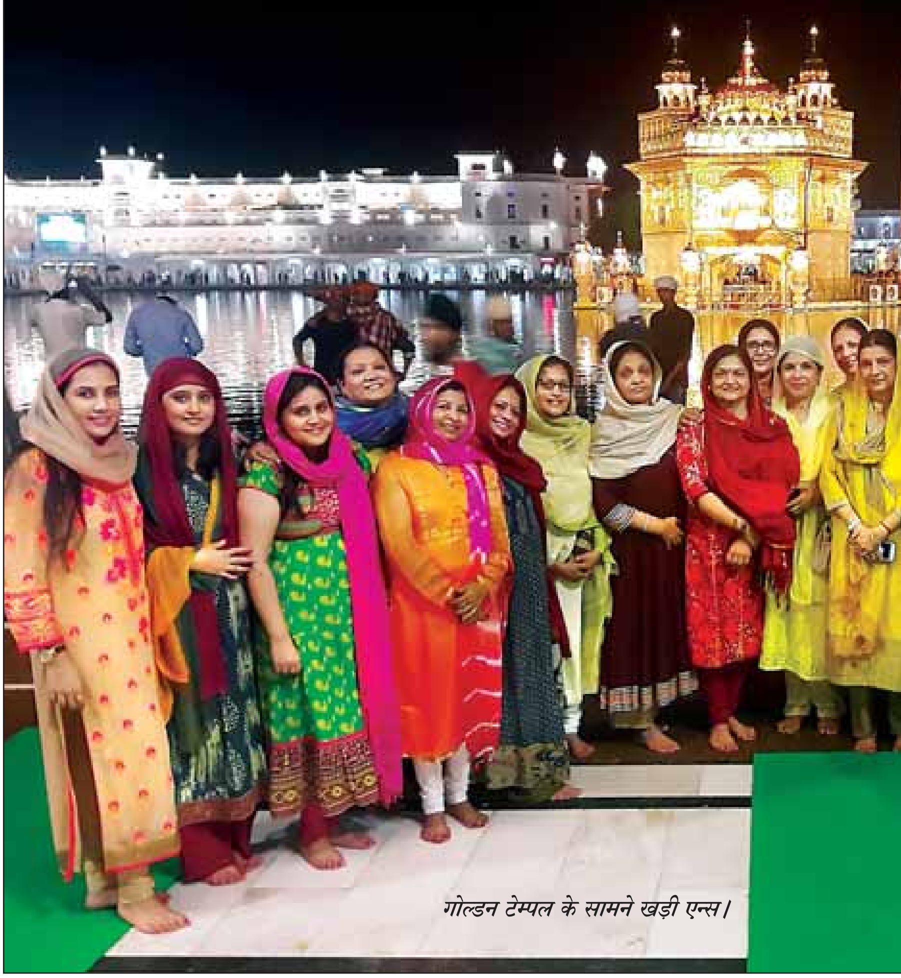

गोल्डन टेम्पल के सामने खड़ी एन्स।

बाएं : एन सुमन अग्रवाल कारसेवा करती हुयी।

दाएं : एनएट्स सुरभी और तन्वी टंडन।

जगह अभी भी दहशत का एहसास करवाती है जब हम 13 अप्रैल, 1919 के दिन जनरल डायर के आदेश पर किये गए सैंकड़ों बेबस और मासूम लोगों के नरसंहार को याद करते है।

कानपूर ग्रेटर के रोटरी क्लब से संबंधित होने का वास्तविक सार तब महसूस हुआ जब हमें अमृतसर के रोटरी क्लब, मंडल 3070, द्वारा आमंत्रित किया गया। स्वतंत्रता के पहले स्थापित, यह भारत के सबसे पुराने रोटरी क्लबों में से एक है। हमारे दल का रोटेरियनों और एन्स के सरल और विनम्र समूह द्वारा शाम की चाय और नाश्ते के साथ प्यार से स्वागत किया गया। क्लबों ने झंडों का आदान-प्रदान किया और साथ ही मानवता की सेवा के अपने क्षेत्रों को साझा किया। अमृतसर का रोटरी क्लब कैंसर और कुष्ठरोग से पीड़ित मरीजों के कल्याण के लिए कार्य करता है और साथ ही स्थानीय

महिलाओं को सिलाई सिखाने की एक छोटी इकाई चलाता है।

कैसे कोई यात्रा, वो भी केवल महिलाओं के समूह वाली, बिना खरीददारी के पूर्ण हो सकती है? घर वापस जाने वाली फ्लाइट के ज्यादा सामान ना ले जाने के कायदे की उपेक्षा करते हुए, हमने सीधे बुनकरों की इकाई से बैग भरकर विशिष्ट *फुलकारी,* उत्कृष्ट *पश्मीना* और निस्संदेह अमृतसरी *जूतियाँ* खरीदी।

और आखिरी लेकिन कम महत्वपूर्ण नहीं, *कुल्चों* की भूमि पर होठों से चटकारे लेकर एवं उँगलियाँ चाटते हुए खाया जाने वाला स्थानीय व्यंजन, जिसे हमने प्रतिष्ठित केसर दा ढाबा में खाया था। उनके *कुल्चों, छोले भटूरों* और

ऊपर: पान की दुकान पर।

अटारी-वाघा सीमा पर एन नीता पारिख राष्ट्रीय ध्वज को लहराते हुए।

पटियाला के गिलास में शुद्ध *लस्सी* का स्वाद आज भी जबान पर टिका हुआ है।

हमारी प्रसन्नता तब अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई जब हमने रात को 10.30 बजे रोड किनारे पर एक ठेले से चाट बताशे और चौरसिया पान दुकान से विशेष पान खाए।

चौथे दिन, वंडरलैंड से बाहर एलिस की तरह, हम एक स्वप्न यात्रा से वास्तविक दुनिया में लौटने के लिए घर जाने की अपनी फ्लाइट पर सवार हो गए।

घर वापसी पर, जैसे ही मैंने निशानी के रूप में मिले नमकीन के डिब्बों को खोला और पकवानों पर टूट पड़ी, यादों के नज़ारे सामने आने लगे - अनवरत तस्वीरें खेचना, एक साथ होने की ख़ुशी, हंसी और मजाक-मस्ती! और फिर पवित्र स्वर्ण मंदिर की तस्वीरें मेरी आँखों के सामने आने लगी... अत्यंत शांतिमय एवं सुखपूर्ण...

अमृतसरी छड़ी ने हम पर जादू कर दिया था। अब हम पूरी तरह अम्बरसरिया है।

नीता मेहरोत्रा आरसीकेजी के अध्यक्ष अनूप मेहरोत्रा की पत्नी है और प्रियांकी गर्ग रोटेरियन प्रशांत गर्ग की पत्नी है।

चित्र : नीता मेहरोत्रा

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

एक सड़क सुरक्षा परियोजना

टीम रोटरी न्यूज़

डीसीपी शनमुगा प्रिया सुरक्षा के नियमों पर एक सड़क उपयोगकर्ता के साथ संपर्क करती हुई।

चेन्नई भारती रोटरी क्लब मंडल 3232, जो हमेशा अपनी विशिष्टता के लिए जाना जाता है, ने एक बार फिर से चेन्नई के 12 अन्य क्लबों के साथ मिलकर, सड़क सुरक्षा परियोजना संचालित करते हुए समुदायिक सेवा के लिए अपने उत्साह का प्रदर्शन किया। चेन्नई ट्रैफिक पुलिस ने इस विशाल सार्वजनिक छवि को बढ़ाने वाले कार्यक्रम में रोटरी के साथ मिलकर काम किया।

रोटरी क्लब चेन्नई भारती के साथ भाग लेने वाले अन्य क्लबों में चेन्नई गैलक्सी, चेन्नई सनराइज, मद्रास नॉर्थ, अडयार, मद्रास सिल्वर बीच, मद्रास गोल्डन सिटी, मद्रास इंडस्ट्रियल सिटी, चेन्नई कोस्टल, चेन्नई जैमिनी, मद्रास बसंत नगर, एमसीसी और चेन्नई चोला के रोटरी क्लब शामिल थे। इन क्लबों के सदस्यों को उत्तर चेन्नई में 11 पॉइंट्स पर तैनात किया गया, जो अपने यातायात की भीड़ और अराजकता के लिए कुख्यात है।

सड़क सुरक्षा पर इस मंडल प्रयास को गतिशील महिला पुलिस अधिकारी डीसीपी शनुमुगा प्रिया से बहुत समर्थन प्राप्त हुआ, जिन्होंने इस प्रस्ताव को पहली बैठक में स्वीकार तत्काल कर लिया और सड़क़ों पर सभी पॉइंट्स पर पुलिस विभाग के सहयोग की पेशकश की।

छात्र समुदाय की शक्ति को जानते हुए, आयोजकों ने सड़क़ सुरक्षा गश्ती (आरएसपी) के स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया और 25 आरएसपी स्वयंसेवकों को पुलिस अधिकारियों और वार्डन के साथ-साथ सभी निर्दिष्ट पॉइंट्स पर तैनात किया गया।

रोटरियनों की ओर से उदार योगदान और रोटरी क्लब चेन्नई भारती के अध्यक्ष सुगुना देवी मुथुवेल, सचिव श्रुति नायर रेड्डी, क्लब सेवा निदेशक निश्रीन मद्रासवाला, लोक छवि निर्देशक जयश्री किदंबी द्वारा तैयार विस्तृत योजनाओं के साथ ट्रेंडसेटिंग करने वाले अध्यक्षों अंशुल अग्रवाल (चेन्नई गैलक्सी), मेटिलदा विजयकुम ार (सनराइज), अनीता डेविड (नार्थ), भूपति (अदयार), इथिराज (सिल्वर बीच), रवि चक्रवर्ती (चेन्नई जैमिनी), अरोकीराज (गोल्डन सिटी), बालाजी (इंडस्ट्रियल सिटी), आनंद (कोस्टल), अरुणकुमार (बेसेंट नगर), लता(एमसीसी), बाबू (चोला) और मंडल अध्यक्ष रणजीत के योगदान ने परियोजना की सुचारु रूप से निष्पादित करने में सहायता की।

बाद में सेंट मैरी हाई स्कूल के सभागार में एक बैठक हुई जिसमें मंडल 3232 के डीजी आर श्रीनिवासन, आरएसपी के छात्रों और कर्मचारियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में डीसीपी उत्तर द्वारा चिन्हित सात यातायात पुलिसकर्मियों, साथ ही स्वयं डीसीपी को, और प्रत्येक पॉइंट से चुने गए एक छात्र, को सम्मानित किया गया।■

सीमाओं के परे दृष्टि का सुधार

किरण ज़ेहरा

भारतीय रोटेरियन गाम्बिया में बच्चों और वयस्कों को नेत्र सेवा प्रदान करते है।

जब गाम्बिया की सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंडल 3190 के नेत्र विशेषज्ञों डॉ एम वी रविकुमार और डॉ. रविशंकर से गाम्बिया में एक नेत्र शिविर आयोजित करने का अनुरोध किया तो उन्होंने इस अवसर को हाथ से जाने नहीं दिया।

देश की दो मिलियन जनसंख्या में से, आँखों से संबंधित समस्याओं के मामलें लगभग एक प्रतिशत है, लेकिन वहाँ केवल तीन नेत्र विशेषज्ञ है। इसलिए, वहाँ पर मरीजों का बहुत बड़ा जमाव है - खासतौर से बच्चों का - जो शल्य चिकित्सा करवाने का इंतजार कर रहे है, डॉ. रविकुमार कहते है, जो वर्ष 2002 से अवॉइडेबल ब्लाइंडनेस परियोजना का नेतृत्व कर रहे है।

डॉ रविशंकर पहले भी दो बार सरकार के निमंत्रण पर बच्चों की नेत्र सर्जरी करने के लिए गाम्बिया जा चुके है। वह वीटीटी के दस कार्यक्रमों में स्वयंसेवक भी थे और 2013 में तत्कालीन मंडल 3140 के गिनी के लिए वीटीटी के हिस्से के रूप में अफ्रीका जा रहे मर्सी शिप्स पर भी थे। दोनों ही नेत्र विशेषज्ञ वर्ष 2001 से एक साथ काम कर रहे है। ''यह तब की बात है जब फ्रैंक जे डेवलिन रोई अध्यक्ष (2000-2001) थे और टीआरएफ परियोजना के लिए सीधे धन दे सकता था, रविकुमार याद करते है।'' उनके क्लब ने 1000 डॉलर एकत्रित किये थे जिसका मिलान टीआरएफ द्वारा किया गया था। ''हमने तब मोतियाबिंद की

दाएँ सेः डॉ के वी रविशंकर, डॉ एम वी रविकुमार, डॉ अरनब विश्वास, अभिजीत रामप्रसाद और डॉ वसंत कुमार, ऐनस्थीश असिसटन्ट बिसिन और गाम्बिया के बांजुल में स्थित शेख जायद अस्पताल के नेत्र रोग विरोषज्ञ डॉ ओक।

100 सर्जरियाँ की थी और तभी मैं पहली बार रविशंकर से मिला था, वह आगे कहते है।''

गाम्बिया की सरकार के अनुरोध का पालन करते हुए, दोनों रोटेरियनों ने बांजुल, फ़जिरा और ब्रुसिबी के रोटरी क्लबों, मंडल 9101, से गाम्बियाई गणराज्य की राजधानी बांजुल में एक नेत्र शिविर आयोजित करने के लिए संपर्क स्थापित किए। सितंबर में आयोजित हुए छह दिवसीय शिविर के दौरान बयालीस मरीजों, जिनमें 35 बच्चे थे, का विभिन्न नेत्र संबंधी समस्याओं के लिए सर्जरी द्वारा इलाज किया गया।

''वहाँ पर कुशल चिकित्सा-सहायक और तकनीशियन है पर कोई निश्चेतक नहीं है। चूंकि जिन मरीजों का ऑपरेशन करना होता है उन्हें सामान्य रूप से बेहोशी की दवा देनी पड़ती है, इसलिए यह हम सर्जनों को चिंता में डाल देता है कि मरीजों को सही मात्रा में बेहोशी की दवा दी गई है या नहीं,'' रविशंकर कहते है। जब उन्होंने इस शिविर के लिए अपने दल को एकत्रित किया, तो उन्होंने चिंता-मुक्त सर्जरी सुनिश्चित करने के लिए, मैसूर के एक निश्चेतक डॉ वसंत कुमार को शामिल करना सुनिश्चित किया। दल के शेष सदस्य कलकत्ता से नेत्र विशेषज्ञ प्रदीप मोहान्टी और अरनव विश्वास थे। यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो के द्वितीय वर्ष के मेडिकल छात्र अभिजीत रामप्रसाद लॉजिस्टिक्स सहायता देने के लिए चार-सदस्यीय दल से जुड़े। ''अभिजीत ने अपने स्वयं के खर्चे पर गाम्बिया की यात्रा की, वह आगे कहते है।''

नेत्र रोग विशेषज्ञ एम वी रविकुमार (बाएँ से तीसरे, खड़े हुए) और के वी रविशंकर (बैठे हुए) गाम्बिया के बच्चों के साथ।

यात्रा, उपकरण और अन्य चिकित्सीय सामग्रियों को मिलाकर परियोजना की लागत 14,000 डॉलर थी। पुर्तगाल से एस्पोसेंड, यूके से गिल्डफॉर्म और यूएस से स्टैट्सविले के रोटरी क्लब, मंडल 3190 से तीन क्लब - बंगलौर का ई क्लब, बंगलौर ईस्ट और कोरमंगला, और यूएसए का कॉम्बैट ब्लाइंडनेस इंटरनेशनल, एक संस्थान जो इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर प्रिवेंशन ऑफ़ ब्लाइंडनेस से संबद्ध है, इस परियोजना को समर्थन देने के लिए शामिल हुए।

स्थानीय रोटेरियनों ने शिविर का मीडिया कवरेज करने की व्यवस्था की जो गाम्बियाई रेडियो और टीवी चैनलों पर प्रसारित हुआ। ''हमारा ध्यान बच्चों पर था और उनमें से 35 बच्चों का आमवाती मोतियाबिंद, कॉर्निया की समस्याओं और भेंगी आँखों के लिए ऑपरेशन किया गया,'' रविकुमार कहते है। वह मेज़बान क्लब के सदस्यों से मिले, जिनमें रोटरी क्लब बांजुल के डीजीई अकी एलन भी शामिल थे और समझाया कि कैसे सेवा परियोजनाएं करके वे रोटरी की सार्वजनिक छवि एवं सदस्यता को बढ़ा सकते है। गाम्बिया से डीजीई एलन प्रथम गवर्नर होंगे।

मगर हम केवल 42 सर्जरियाँ ही पूर्ण कर सके। मेरे दिमाग में इंतजार कर रहे 100 बच्चों का नज़ारा अभी भी अचानक से आ जाता है।

डॉ रविशंकर,
नेत्र विशेषज्ञ

जब शिविर समाप्त होने पर था, तब भी 100 बच्चे अपनी बारी आने का इंतजार कर रहे थे। ''मगर हम केवल 42 सर्जरियाँ ही पूर्ण कर सके। हालाँकि हमने 200 अन्य सर्जरियों के लिए सामग्री और उपकरण वहीं छोड़ दिए, फिर भी मेरे दिमाग में इंतजार कर रहे 100 बच्चों का नज़ारा अभी भी अचानक से आ जाता है,'' रविशंकर कहते है।■

आपके गवर्नरों से मिलें

जयश्री

गुणवान सदस्यों को भर्ती करना उनका मंत्र है

रवि चौधरी

विज्ञापन, रोटरी क्लब दिल्ली वेस्ट, मंडल 3011

उनका मानना है कि क्लब के अध्यक्ष एवं सदस्यों की चर्चा की जानी चाहिए क्योंकि ये वे लोग है जो बुनियादी स्तर पर कार्य करते है। ''अधिकतर मामलों में गवर्नर को ज्यादा तारीफ मिलती है। यह सही नहीं है। हमारा कार्य केवल निरीक्षण करना, सहयोग देना, और क्लबों को मजबूत बनाना है। सदस्य रोटरी की रीढ़ है। अगर क्लब प्रदर्शन नहीं करेंगे, तो गवर्नर प्रतिष्ठा खो देंगे,'' रवि चौधरी कहते है।

वह एक पोलियो सम्मेलन को याद करते है जब उन्होंने रोटरी के पोलियो उन्मूलन कार्य पर एक वीडियो पेश किया था, जहाँ पर फोकस रोटरी स्वयंसेवकों पर था। उन्हें तत्कालीन रोई अध्यक्ष और मुख्य अथिति ग्लेन एस्टेस द्वारा तारीफों से पुरस्कृत किया गया था जिन्होंने उनसे दुनियाभर में इसे प्रचलित करने के लिए 200 प्रतियों का आग्रह किया था। ''मैंने इसकी वजह, हमारे सामूहिक प्रयास को प्रदर्शित किया था। उसमें किसी भी एक व्यक्ति का प्रचार नहीं था।''

उनके अनुसार, 80 प्रतिशत रोटेरियन अच्छे है लेकिन वह पीछे रहते है, जबकि बचे हुए 20 प्रतिशत उन अच्छे रोटेरियनों को नष्ट करने के लिए कुछ भी करेंगे। ''वे लोग जिन्होंने रोटरी के अंदर जीवन गुजारा है केवल वे ही हर पद के लिए होड़ करते है,'' वह कहते है।

सदस्यता पर, चौधरी किसी लक्ष्य या 'अंकों के खेल' में रूचि नहीं रखते है। ''हम अभी भी '1.2 मिलियन रोटेरियनों' के स्थिर अंक के आसपास ही मंडरा रहे है। मैं गुणवान सदस्यों को भर्ती करने में विश्वास रखता हूँ जिन्हें रोटरी की अच्छी जानकारी हो और जिनमें समुदाय में अच्छा करने की रूचि हो। नहीं तो हमारी संघर्षण दर ज्यादा हो जाएगी,'' वह कहते है। उन्होंने युवा पीढ़ियों के पाँच क्लबों को अधिकृत किया है लेकिन अलग हो चुके सदस्यों द्वारा अस्तित्व में आए नए क्लबों को हतोत्साहित किया है। ''यह संस्थान को बर्बाद कर देगा। इसके बजाए मैंने उनसे ऐसे क्लबों से जुड़ने के लिए कहा जिनमें उनके समान विचारधारा वाले सदस्य हो। अगर मुझे किसी लक्ष्य को हासिल करना हो तो मैं उसे दो दिन मैं कर सकता हूँ, अपने हर एक अध्यक्ष से दो सदस्यों को लाने का बोलकर। लेकिन वह केवल एक कृत्रिम बढ़त होगी। वह दस सदस्यों से भी कम सदस्य वाले क्लबों से निरुत्साहित है, जो किसी प्रकार की वोट बैंक राजनीति करने के लिए शुरू हुए थे; वे रोटरी की किसी भी गतिविधि को बढ़ावा नहीं देते है,'' वह कहते है।

वह कहते है, वह रोटरी से 1996 में जुड़े क्योंकि ''मैं एक रोटेरियन बनना चाहता था; लेकिन आज हम चाहते है कि लोग रोटेरियन बने... यही अंतर है, वह आगे कहते है, अगर हम अपने बच्चों को रोटेरियन नहीं बना सकते तो हम दूसरों को कैसे रोटरी से जुड़ने के लिए मना सकते है?''

समुदाय को WinS और साक्षरता परियोजनाओं द्वारा बेहतर बनाना, मंडल में कैंसर के प्रति जागरूकता फैलाना और सीएसआर निधियों के लिए राज़ी करना उनकी प्राथमिकता है। उनका मंत्र तीन ढ में संक्षेपित है - समय प्रबंधन, पारदर्शिता और तकनीक - बैठकें और परियोजनाएं समय पर हो, लेखा बजट में एवं परीक्षित हो और सम्प्रेषण इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से किया जाए।

रोटरेक्ट में जान डालना उनका सपना है

रोई निदेशक सी भास्कर द्वारा नया रायपुर स्थित सत्य साईं संजीवनी अस्पताल में एक कैथ लैब का उद्घाटन करने हेतु मंडल का दौरा करने के दो हफ्ते बाद भी उनका उत्साह स्पष्ट है। ''उनके दौरे ने सार्थक सेवा परियोजनाओं को करने के लिए अत्यंत प्रोत्साहित किया,'' हरजीत सिंह हूरा कहते है। उनका ध्यान अस्पताल की क्षमताओं को बढ़ाने पर है क्योंकि यहाँ अनेक बच्चों की, यहाँ तक कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल के बच्चों की भी मुफ्त में हृदय सर्जरियाँ की जाती है। स्कूलों में शौचालयों का निर्माण/ मरम्मत भी उनके एजेंडे में है। ''मेरे पास पिछले साल का 80,000 डॉलर का डीडीएफ बचा है। लेकिन हमने महानदी कोलफील्ड, एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, के साथ साझेदारी की है जो हमारी WinS परियोजनाओं के लिए धन देने के लिए तैयार हो गया है,'' वह कहते है।

सदस्यता पर, हूरा पाँच अन्य क्लबों को जोड़ना चाहते है। 250 रोटेरियनों को भर्ती करके, और बिलासपुर में एक अखिल-महिला क्लब को अधिकृत करके उन्होंने पहले से ही अपने 200 नए सदस्यों के लक्ष्य को पार कर लिया है। स्वयं एक रोटरेक्टर और एक डीआरआर भी होने के नाते, वह रोटरेक्ट क्लबों को मजबूती प्रदान करने के लिए उत्साहित है। वह कहते है, ''जबकि पहले रोटरेक्ट बहुत जीवंत था, मंडल के पास पिछले तीन सालों से कोई डीआरआर नहीं था! केवल इस वर्ष हमारे पास एक है,'' आगे कहते हुए कि वह रोटरेक्ट क्लबों की संख्या को 35 तक बढ़ाना चाहते है, जो अभी 10 के आसपास है।

वह टीआरएफ के लिए 100,000 डॉलर का अनुदान इकठ्ठा करने पर कार्य कर रहे है।

डीआरआर के अपने कार्यकाल के थोड़े समय बाद ही, वह 1991 में रोटेरियन बने। उन्हें यह कहते हुए गर्व होता है कि सभी सदस्य जिन्होंने उनके क्लब को बनाया पूर्व रोटरेक्टर है और एक समान विचार साझा करते है कि सदस्यों को प्रेरित करने के लिए रोटरेक्ट पर आवश्यक जोर नहीं दिया जाता है।

हरजीत सिंह हूरा
होटल व्यवसायी, रोटरी क्लब संबलपुर सेंट्रल, मंडल 3261

ब्रोजो गोपाल कुंदू
इंटीरियर डिज़ाइनर
रोटरी क्लब कलकत्ता ओल्ड सिटी, मंडल 3291

जन्मजात दिल की बीमारियां उनकी चिंता है

वह जन्मजात दिल की बीमारी से पीड़ित बच्चों और उनके बेबस माता-पिता जो अपने बच्चों को बचाने के लिए चिकित्सीय सुविधाओं को वहन नहीं कर सकते है, के दृश्यों को देखकर चिंतित है। ''हमने ऐसे 17 बच्चों की सर्जरियाँ करने में मदद की है और इस हफ्ते दो और बच्चों का ऑपरेशन किया जाएगा। सांस लेने के लिए तड़पते नवजात और छोटे बच्चों को देखकर मेरे दिल को चोट पहुंचती है,'' ब्रोजो कुंदू कहते है।

सुंदरबन में एक व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र का विकास करना भी उनकी इच्छा सूची में सबसे ऊपर है। वहाँ के लोग पिछड़े है और उनमें कुशलता की कमी है। इससे उन्हें रोजगार प्राप्त करने में मदद मिलेगी और मैं उन्हें उनकी ज़िंदगियाँ बर्बाद करने से बचाना चाहता हूँ। आरआईएलएम के अन्तर्गत निर्धारित विभिन्न पहलुओं की शिक्षा देना भी उनके एजेंडे में है।

सदस्यता की बढ़त पर, उनका लक्ष्य मंडल की संख्या में 20 प्रतिशत की वृद्धि करना और टीआरएफ के लिए 400,000 डॉलर इकठ्ठा करना है।

गैर–कार्यात्मक क्लब उनकी चिंता है

गैर–क्रियात्मक क्लब उन्हें सबसे ज्यादा परेशान करते है। वह कहते है कि इस प्रकार के आठ क्लब है जिन्हें पिछले रोटरी वर्ष के एकदम अंत में अधिकृत किया गया था और जो बिल्कुल भी प्रदर्शन नहीं करते है। राजकुमार भूतोरिया कहते है, ''वह एकदम गैर-क्रियाशील है और रोटरी के उद्देश्य के लिए स्थापित नहीं किये गए थे; या तो मैं उन्हें जीवंत कर दूंगा या बंद कर दूंगा,'' आगे कहते हुए है कि 80 प्रतिशत क्लब टीआरएफ के लिए कुछ भी योगदान नहीं करते है। ''ये सब बड़ी चुनौतियाँ है, इस सच्चाई के अतिरिक्त कि मंडल बीकानेर, जोधपुर और मध्यप्रदेश के भी कुछ हिस्सों को सम्मिलित करते हुए 1,200 किमी. के बड़े क्षेत्र तक फैला हुआ है।''

टीआरएफ में योगदान का उनका लक्ष्य 200,000 डॉलर का है, और सदस्यता का लक्ष्य 15 प्रतिशत की वृद्धि करने का है। वह लक्ष्यों को हासिल करने को लेकर विश्वस्त है, इस चिंता के बावजूद भी कि उन्हें पाँच क्लबों को बंद करना होगा जो उनकी बकाया राशियों का भी भुगतान नहीं करते है। ''उनके लिए कोई और भुगतान कर रहा है,'' वह कहते है।

परियोजनाओं की बात करते हुए, भूतोरिया उत्साहित है कि उनके पास तीन वैश्विक अनुदान है जिनका उपयोग जोधपुर में सात स्कूलों को 'हैप्पी स्कूलों' में बदलने के लिए, बीकानेर के एक नेत्र अस्पताल में मोतियाबिंद की सर्जरियाँ करने में मदद करने के लिए एवं जोधपुर में एक ब्लड बैंक स्थापित करने के लिए किया जायेगा। अपने दल द्वारा परियोजना के लिए निधीयन के माध्यम से वह अलवर में भी एक ब्लड बैंक स्थापित करना चाहते है।

राजस्थान के कन्या भ्रूण हत्या के इतिहास के कारण, भूतोरिया बेटी बचाने को लेकर जागरूकता फ़ैलाने पर ध्यान केन्द्रित कर रहे है। वह खुश है कि उनके द्वारा शुरू की गई नेकी की दीवार परियोजना को मंडल में प्रसिद्धि मिली है; लोग हर प्रकार के सामान और खाद्य पदार्थ भी दान करते है, जिसे गरीबों द्वारा ले जाया जाता है। वह तीन वर्ष पूर्व शुरू की गई रोटरी क्लब गुना की एक परियोजना पर प्रकाश डालते है, जिसके अंतर्गत गर्भवती महिलाओं को मुफ्त चिकित्सीय जांच और पौष्टिक आहार दिया जाता है। ''सरकार अब इसे राज्य के लिए दोहरा रही है।''

वह 1985 से एक रोटेरियन है, और उस पल को याद करते है जब एक 22 वर्षीय नौजवान हाल ही उनसे मिला और उन्हें दिल से धन्यवाद दिया। ''मैं उसे पहचान नहीं सका लेकिन उसने कहा कि वह एक कंप्यूटर केंद्र का विद्यार्थी था जिसे स्थापित करने में मैंने तब मदद की थी जब मैं क्लब का अध्यक्ष था। वह कहता है कि आज वह एक आईटी कंपनी में काम करता है। मैं बहुत खुश हूँ कि रोटरी जरूरतमंदों को रोजगार दे सका। यह ज्यादा महत्वपूर्ण है,'' भूतोरिया कहते है।

राजकुमार भूतोरिया

पेपर बोर्ड निर्माण, रोटरी क्लब अलवर कैंटोनमेंट, मंडल 3053

परविंदर जीत सिंह,

वाहन वित्तीयन,

रोटरी क्लब जालंधर सेंट्रल, मंडल 3070

स्वच्छ जल, उनकी चिंता

वह 1995 में अपने दोस्त द्वारा आमंत्रित करने पर रोटरी से जुड़े और शुरुआत में उन्हें मेलजोल और मनोरंजन करना पसंद था। ''बाद में जब मैं सेवा गतिविधियों में शामिल हुआ, तो मुझे संपूर्ण, और इससे अधिक एक रोटेरियन होने का एहसास हुआ,'' परविंदर जीत सिंह कहते है।

उनकी मौजूदा 107 क्लबों में 6-7 क्लबों को जोड़ने की योजना है, एक अखिल-महिला क्लब को शामिल करके हाल ही में उन्होंने दो क्लबों को अधिकृत किया है।

उनकी ध्यानाकर्षण परियोजनाओं में जालंधर में रोटरी कैंसर अस्पताल को बेहतर सुविधाओं के साथ विकसित करना एवं मुफ्त उपचार को अधिक लोगों तक पहुँचाना और सरकारी स्कूलों में बेहतर स्वच्छता एवं पानी की सुविधाओं को प्रदान करना शामिल है। वह दृढ़तापूर्वक मानते है कि स्कूलों को सुरक्षित पीने योग्य पानी से सुसज्जित होना चाहिए ताकि बच्चों को बीमार पड़ने से बचाया जा सके और इसलिए, वह स्कूलों को ठज संयंत्र प्रदान करने पर ध्यान दे रहे है।

वह टीआरएफ योगदान के लिए उनके मंडल के लक्ष्य को पार करने को लेकर विश्वस्त है।

सिंह की पत्नी सवरीना ने जालंधर सेंट्रल के इनर व्हील क्लब के अध्यक्ष के रूप में सेवा दी है।

बंकर रॉय को मिला रोटरी चतुर्दिक परीक्षण पुरस्कार

टीम रोटरी न्यूज़

डीजीएन अजय अग्रवाल, बेयर फुट कॉलेज के संस्थापक संजित बंकर राय को पुरस्कार से सम्मानित करते हुए। चित्र में (बाएँ से) डीजी ब्रोजो गोपाल कुंडु, पीआरआईडी शेखर मेहता, 4 वे टेस्ट चेयरमेन जी एस सारडा एवं पीडीजी रवींद्र पी सेहगल।

जाने माने कार्यकर्ता, शिक्षाविद् और समाजसेवी बेयर फूट (नंगे पैर) कॉलेज के संस्थापक संजित बंकर रॉय को रोटरी क्लब बेलूर और रोटरी डिस्ट्रिक्ट 3291 द्वारा संयुक्त रूप से कोलकाता में ''रोटरी चतुर्दिक परीक्षण'' - वर्ष पुरूष पुरस्कार 2017 *(4-Way Test Man of the Year Award 2017)* पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

रॉय वर्ष 2010 में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों मे निरक्षर और अर्द्धसाक्षर लोगों को शिक्षित करने के कार्य के परिणामस्वरूप *टाइम* मैगजीन द्वारा चयनित 100 प्रभावशाली व्यक्तियों की सूची में स्थान बना चुके थे। उन्होंने वर्ष 1956 से 1962 तक दून स्कूल में और 1962 से 1967 तक सेंट स्टीफेंस कॉलेज, नई दिल्ली में शिक्षा प्राप्त की। रॉय वर्ष 1964 में स्कवैश में राष्ट्रीय स्तर पर उप विजेता रहे और उन्होंने तीन बार विश्व स्कवैश प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उनका विवाह वर्ष 1770 में अरूणा रॉय के साथ हुआ।

बेयर फूट कॉलेज

करीब 100 सूखा प्रभावित क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता का सर्वे करने के बाद 1972 में रॉय ने ''सोशियल वर्क एण्ड रिसर्च सेन्टर'' की स्थापना की। जल्द ही इसका उद्देश्य पानी व सिंचाई पर फोकस करने के बजाय सशक्तिकरण और स्थिरता की तरफ परिवर्तित हो गया। उनके इस कार्यक्रम ने विशेष रूप से गाँवों के पास पानी के पम्प लगाने और स्थानीय लोगों की इस बात के लिए प्रशिक्षण देने पर ध्यान दिया जिससे वे किसी बाहरी व्यवस्था पर निर्भर रहने की अपेक्षा स्वयं आत्मनिर्भर बने।

टाइम ने उनके द्वारा तीन मिलियन से अधिक लोगों को, जिनमें सौर ऊर्जा इंजीनियर, शिक्षक, प्रसाविकायें, बुनकर, आर्किटेक्ट और चिकित्सकक शमिल थे।

रॉय को राजीव गाँधी द्वारा योजना आयोग में नियुक्त किया गया। उन्होंने सिफारिश की कि एक ऐसा कानून बनाया जाए जो गैर-सरकारी संस्थाओं के लिए ''आचार संहिता'' का कार्य करेगा। उन्होंने यह अभिशंषा भी की कि एक ऐसी राष्ट्रीय परिषद का गठन किया जाये जो ''विश्वसनीय और सही'' संगठनों के लिए सरकार को सिफारिश करें और इन संगठनों की निगरानी भी रखे।

वर्ष 1983 में वे *रॉय बनाम राजस्थान सरकार* मामले में परिवादी बने। इस प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय ने एक आपातकालीन नीति को ठुकरा दिया था, जिसमें अकाल राहत कार्य में महिला मजदूरों को पुरूषों से कम मजदूरी दिए जाने की अनुमति दी गई थी। रॉय ने TED सम्मेलन में भाषण देते हुए बताया कि बेयर फूट (नंगे पैर) कॉलेज ने किस तरह ''ग्रामीण समुदायों को आत्मनिर्भर बनाया है।''

रोटरी के चतुर्दिक परीक्षण पुरस्कार में एक लाख रूपये की नगद राशि व प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पीआरआईडी निदेशक शेखर मेहता थे।

यह पुरस्कार इससे पूर्व किरण बेदी, मेघा पाटेकर, रामानन्द सागर, वी. कुरियन, मेनका गाँधी, एन.आर. नायणण मूर्ति, पंडित बिरजू महाराज और डॉ. देवी प्रसाद शेट्टी को मिल चुका है।■

डिजिटल साक्षरता का उपहार

जयश्री

रोटरी क्लब दिल्ली साउथ वेस्ट के अध्यक्ष लोकेश गुप्ता दिल्ली में क्लब के डिजिटल साक्षरता केंद्र में।

दिल्ली में रोटरी के व्यावसायिक केंद्र में, विद्यार्थी - निकिता (14), मोहित (10) और अभिषेक रावत (20) - पॉवरपॉइंट के ज़रिये एक कृत्रिम विपणन असाइनमेंट को पेश करने को लेकर उत्तेजित है। कुछ हफ्ते पहले भी वे ऐसी ही उत्तेजना का अनुभव कर रहे थे जब उन्होंने एमएस वर्ड में छोटे निबंध और पत्र पेश किये थे। ऐसी उपलब्धियाँ उनके लिए बहुत मायने रखती है। वे पहली पीढ़ी के सीखने वाले है, सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे है, और रोटरी क्लब दिल्ली साउथ वेस्ट, मंडल 3011, के रोटेरियनों के प्रयास के कारण, वे वास्तव में पहली बार कंप्यूटर को छूकर महसूस कर रहे है। ये बच्चे, जिनके माता-पिता ज्यादातर निर्माण मजदूर है, कंप्यूटर में श्रेष्ठ होने और प्लेसमेंट प्राप्त करके पर्याप्त पैसा कमाने के बड़े सपने देखते है ताकि वे अपने परिवार को गरीबी से ऊपर उठाने में मदद कर सकें।

क्लब ने दिल्ली के सफदरजंग एन्क्लेव में हुमायूँपुर के आसपास की झुग्गियों के सुविधाओं से वंचित बच्चों को खासतौर से कंप्यूटर शिक्षा प्रदान करने के लिए हाल ही में डिजिटल साक्षरता और व्यावसायिक केंद्र का उद्घाटन किया है। यहाँ पर एमएस-ऑफिस, डीबीएमएस, सी लैंग्वेज और टैली एकाउंटिंग सॉफ्टवेर का तीन महीने का कोर्स सिखाया जाता है। रोटेरियन अशोक अग्रवाल की पत्नी पुष्पा अग्रवाल केंद्र का प्रशासन करती है। पहले बैच में लगभग तीस बच्चे नामांकित हुए है। कोर्स का शुल्क रु 350 प्रतिमाह है; ''हालाँकि यह उनके लिए बिल्कुल मुफ्त है जो इस शुल्क को वहन नहीं कर सकते है,'' क्लब के अध्यक्ष लोकेश गुप्ता कहते है।

क्लब द्वारा प्रायोजित रोटरेक्ट क्लब के रोटरेक्टर टैली पढ़ाते है। ''अब मैं अपने एकाउंट्स सही ढंग से और तेज़ी से तैयार कर पाती हूँ,'' मैत्री कॉलेज से एक स्नातक श्वेता गोयल कहती है। वह एक फुटकर दुकान चलाती है।

यह केंद्र महिला सशक्तिकरण के लिए काम करने वाले एक गैर सरकारी संगठन 'स्त्रीबल' के स्वामित्व वाली इमारत में स्थापित है। क्लब ने परियोजना की रु 4 लाख की लागत को उसके सदस्यों से एकत्रित किया।

केंद्र का अधिकतम उपयोग किया जाता है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसका लाभ ले सकें। शाम को यह एक ट्यूशन केंद्र में बदल जाता है जब 45 स्कूली विद्यार्थी स्कूल के बाद ट्यूशन प्राप्त करते है। रोटेरियन सुनीता वर्मा ट्यूशन केंद्र की प्रभारी है। सप्ताह के अंत में यह सिलाई की क्लास बन जाती है जिसमें 25 महिलाएं नामांकित है। क्लब ने, सिंगर के साथ साझेदारी में, परिसर में सिलाई मशीनें स्थापित की है।■

हैंडवॉश दिवस ने स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित किया

वी मुत्तुकुमारण

(बाएं से खड़े) क्लब के अध्यक्ष जी सुंदरेशन, डीजी आर श्रीनिवासन, WinS वाइस चेयर पी टी प्रभाकर, डीजीएन जी चंद्रमोहन, मंडल WinS चेयर राम एन राममूर्ति, आर तमिलसेलवन, जी गोपाल और मंडल WinS अतिरिक्त चेयर जी गुनावथी की उपस्थिति में छात्र स्वच्छता की आदतों का चित्रण करते हुए प्लाकार्ड पकड़ते है।

अपने हाथों में प्लैकार्ड लिए मुस्कुराते हुए नन्हें बच्चों ने ग्लोबल हैंडवॉशिंग दिवस के आयोजन के उपलक्ष्य में आयोजित एक जागरूकता कार्यक्रम के दौरान, चेन्नई में पथिपगा चेम्मल के गणपति गवर्नमेंट एचएस स्कूल में मंडल 3232 के रोटरियनों का स्वागत किया। लगभग 2,000 से अधिक छात्रों ने हाथ धोने की तकनीक और स्वस्थ जीवन शैली के लिए सर्वोत्तम स्वच्छता पद्धतियों को अपनाने के लिए आयोजित एक परिचर्चा में भाग लिया। रोटरी क्लब मद्रास माउंट ने हाथ धोने के स्वास्थ्य लाभ पर छात्रों को जागरूक बनाने के लिए स्कूल के इंटरैक्ट क्लब के साथ सहयोग किया। ''हम एक महीने में रु 10,000 खर्च कर चार शौचालय ब्लॉक की देखभाल करते हैं - जिसमें से दो लड़कों और लड़कियों के लिए शौचालय हैं। दो वर्ष पहले, हमने वैश्विक अनुदान के माध्यम से ब्लॉकों का पुनर्निर्माण किया था,'' रोटरी क्लब मद्रास माउंट के सचिव, पद्म राममूर्ति कहते हैं।

क्लब ने एक स्मार्ट क्लासरूम और ओवरहेड प्रोजेक्टर स्थापित किया है जिसका बेहतर उपयोग किया जा रहा हैं। वर्ष 2014 और 2015 में, कक्षा 10 और 12 परीक्षाओं में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले तीन रैंकरों को नकद प्रोत्साहन दिया गया था।

अपने मित्रों के साथ प्लैकार्ड पकड़े हुए एस इलिक्षा (कक्षा 7) से जब यह पूछा गया कि क्या वह घर में हाथ धोने के मूल सिद्धांतों का पालन कर रही थी, तो सहमति में उसने अपने सिर जोर हिलाया। उन्हें उनके शिक्षकों द्वारा अपने हाथों को धोने और हानिकारक रोगाणुओं को धोने के बारे में सिखाया जाता है।

छात्रों को संबोधित करते हुए, WinS के उपाध्यक्ष पी टी प्रभाकर ने कहा कि स्कूलों में वॉश रोटरी की प्रमुख परियोजनाओं में से एक थी जिसने संपूर्ण भारत में छात्रों के बीच नागरिक भावना और सर्वोत्तम स्वच्छता प्रथाओं को स्थापित किया। ''मुझे यह देख कर अतिप्रसन्नता हो रही है कि इंटरैक्ट क्लब सक्रिय है और छात्रों पर सही प्रभाव डाल रहा है।'' उन्होंने गांधीजी को याद करते हुए कहा कि स्वतंत्रता की तुलना में उनके लिए सफाई अधिक महत्वपूर्ण है। शौचालयों को अच्छी तरह से बनाए रखा जा रहा था, उन्होंने कहा.., मंडल WinS के अतिरिक्त अध्यक्ष जी गुणवती ने हाथ धोने की तकनीक पर एक डेमो दिया। पिछले दो वर्षों में, मंडल 3232 में वैश्विक अनुदानों के माध्यम से करीब 30 हैंडवॉश स्टेशन स्थापित किए गए थे, मंडल WinS अध्यक्ष राम एन राममूर्ति ने कहा। ''इस वर्ष हमने अब तक 85 सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में हैंडवॉश डेमो-कम-व्याख्यान आयोजित किए हैं।''

चित्र: वी. मुत्तुकुमारण

अर्ध-ग्रामीण युवाओं को शामिल करना

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन की अध्यक्ष उषा कुमार रोटरी रूरल रन का उद्घाटन करती हुई।

सुबह की पहली किरण के आगमन के साथ, गुम्मदीपोंडी तालुक और उसके आसपास के विद्यालयों के युवा छात्रों का समूह चेन्नई के पास आरएमके कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी के द्वार पर पहुंचने लगे थे। वे रोटरी क्लब मद्रास मिडटाउन, मंडल 3232 द्वारा आयोजित *रोटरी रूरल रन* नामक एक मिनी मैराथन में भाग लेने के लिए एकत्र हुए थे, और सभी जगह 'एंड पोलियो नाउ' का लोगो दिखाई दे रहा था। क्लब द्वारा आयोजित 3, 5 और 10 किमी श्रेणियों में इस तरह के एक दौड़ के आयोजन का यह दूसरा वर्ष था, जिसमें क्लब को परोपकारी और आरएमके समूह ऑफ इंस्टीट्यूशंस के संस्थापक का सहयोग प्राप्त हुआ था।

आयोजन स्थल पर एकत्र हुए लगभग 1,000 प्रतिभागियों और स्वयंसेवकों को स्वादिष्ट नाश्ता उपलब्ध कराया गया था और क्लब के अध्यक्ष उषा कुमार ने 3 किमी श्रेणी के दौड़ को ध्वज दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य अर्ध-ग्रामीण इलाके में इस तरह के एक मिनी मैराथन का आयोजन करना था ताकि ग्रामीण युवाओं को भी शारीरिक फिटनेस की आवश्यकता से परिचित कराया जा सके और युवाओं में रोटरी के बारे में सामान्य जागरूकता उत्पन्न की जा सकें।

इसका उद्देश्य अर्ध-ग्रामीण इलाके में युवाओं को शारीरिक फिटनेस की आवश्यकता से परिचित और रोटरी के बारे में सामान्य जागरूकता उत्पन्न करना था।

इस कार्यक्रम में आर श्रीनिवासन, डीजी 3232, सहायक गवर्नर विकास चन्द्र, आरएमके समूह के संस्थानों के प्रबंधन और स्थानीय समुदाय के नेताओं ने बी भाग लिया।

तीन श्रेणियों में से प्रत्येक श्रेणी के विजेता को पदक और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया और प्रतिभागियों ने रोटरी की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने के लिए एंड पोलियो नाऊ का टीशर्ट पहना था।■

बच्चों को बचाने के लिए कैथ लैब

जयश्री

रायपुर ग्रेटर, मंडल 3261, के रोटरी क्लब ने हाल ही में छत्तीसगढ़ में नया रायपुर स्थित सत्य साईं संजीवनी अस्पताल में बच्चों के दिलों के लिए एक कैथीटेराइजेशन लैब स्थापित की है। उपकरणों को इंडोनेशिया और फ़िलीपीन्स से आयातित किया गया है, जिनकी कीमत 3 करोड़ रूपए है और क्लब ने रोटरी क्लब फोर्ट वेन, मंडल 6540, यूएसए से एक वैश्विक अनुदान की और टीआरएफ की मदद ली है।

हृदय संबंधी कैथ मशीन जन्मजात दिल की बीमारी वाले बच्चों में दिल से जुड़े दोषों का आंकलन करेगी, हृदय तक रक्त पहुँचाने वाली धमनियों में रक्त के संचार और दिल के चेम्बरों में रक्त-चाप की जांच करेगी। अक्सर, एक हृदय संबंधी कैथीटेराईजेशन ओपन हार्ट सर्जरी को अनावश्यक बनाते हुए बच्चों को मृत्यु से बचा सकती है।

आरआईडी सी भास्कर ने (बाएं से) रोटेरियनगण डॉ प्रवीण कोलीपारा और रोटरी क्लब फोर्ट वेन की होली सीब्री, डीजी हरजीत सिंह हुरा, पीडीजी विवेक के तनखा और कार्यक्रम अध्यक्ष मुनीश सागर की उपस्थिति में कैथ लैब का उद्घाटन किया।

हृदय संबंधी विकारों से पीड़ित बच्चों को अस्पताल मुफ्त में इलाज प्रदान करता है। अस्पताल में कोई कैश काउंटर नहीं है, क्लब के अध्यक्ष विवेक रंजन गुप्ता कहते है। मगर जहाँ एक कैथ परीक्षण की आवश्यकता होती थी, बच्चों को अन्य अस्पतालों में भेजा जाता था "जो जांच करने के रु 10,000-20,000 लेते थे।"

रोई निदेशक सी भास्कर, जिन्होंने लैब का उद्घाटन किया, ने सुविधाओं से वंचित लोगों की पहुँच में उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा लाने के लिए दल की प्रशंसा की और समुदाय को जिसकी जरूरत थी वह देने के लिए क्लब के प्रयासों को स्वीकारा।

"यह सुविधा गरीबों के लिए बिल्कुल मुफ्त है। पीड़ित बच्चों के लिए गरीबी उचित स्वास्थ्य सेवा ना मिल पाने का कारण नहीं बनना चाहिए," क्लब के सहायक गवर्नर और आईपीपी, राज दुबे कहते है। पूर्व गवर्नरों, और अंतर्राष्ट्रीय साझेदार क्लब के रोटेरियनों के साथ, मंडल गवर्नर हरजीत सिंह हूरा, अस्पताल के चेयरमेन सी श्रीनिवास, पीडीजी विवेक के. तनखा, डीआरएफसी राकेश चतुर्वेदी और एआरएफसी विनोद बंसल उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे।

सत्या साईं अस्पताल में नई कैथ लैब।

परियोजना के लिए मुख्य दानकर्ता फोर्ट वेन से एक कर्करोग चिकित्सक डॉ. प्रवीण कोल्लिपारा और बेंगलुरु का वाइटल पेपर उद्योग थे। परियोजना, जिसका विचार 2015 में किया गया था, को क्लब के सदस्य एस. के. अग्रवाल द्वारा समन्वित किया गया। "रोई निदेशक भास्कर ने हमें अस्पताल के लिए जिस भी चीज़ की भी कमी हो रही है उसके लिए और अधिक सुविधाएं प्रदान करने का सुझाव दिया है, और अब हम उस पर कार्य कर रहे है," गुप्ता कहते है।■

सौर ऊर्जा से रोशन एक छोटा गाँव

वी. मुत्तुकुमारन

महाराष्ट्र के थाणे ज़िले में सहयाद्री पर्वतों की गोद में स्थित एक आदिवासी गाँव वेलोशी अब उन सौर सड़क लैंप और घरेलू बल्बों के कारण रात में एक चमकदार, रोशन नज़ारा दिखाता है, जिन्हें रोटरी क्लब मुंबई बांद्रा कुर्ला काम्प्लेक्स, मंडल 3141, द्वारा दी ग्रीन आई इनिशिएटिव फाउंडेशन, जो ग्रामीण घरों में वैकल्पिक ऊर्जा का सूत्रपात कराने में व्यस्त है, के साथ साझेदारी में स्थापित किये गए है।

75 मिट्टे के घरों में रहने वाले 375 ग्रामीणों के लिए अँधेरे में जीना एक स्थायी बुरा अनुभव था और बहुत से बुजुर्गों ने किसी भी प्रकार की बिजली की कोई अनुभूति नहीं की है। जबकि खेती उनका मुख्य व्यवसाय है, अगस्त 2016 में रोटेरियनों के एक 10 सदस्यीय दल ने जाना कि ग्रामीण लोग बमुश्किल अपना जीवन यापन कर पा रहे थे क्योंकि गरीबी प्रचण्ड थी। ''उनसे बातचीत करने के बाद, हमें अहसास हुआ कि पहली प्राथमिकता उस छोटे गाँव को टिकाऊ, प्रबंधन-में-सरल बिजली आपूर्ति द्वारा रोशन करना था और हमने सौर पीवी प्रणाली का निश्चय किया,'' क्लब के पूर्व अध्यक्ष एवं अक्षय ऊर्जा के एवेन्यू प्रमुख सचिन शिगवान याद करते है।

क्लब के एक सदस्य और एबीएम नॉलेजवेयर के सीईओ प्रकाश राणे ने उनके सीएसआर कोष में से रु 9.5 लाख 3 kwp (किलोवाट पीक) प्रणाली के संस्थापन एवं शुरुआत के लिए दान दिए जिसने प्रत्येक घर को तीन सोलर बल्ब और गाँव में 20 सड़क लैंप वितरित किये। तीन छतों पर 12 सोलर पैनलों को आवश्यक सामग्रियों के साथ लगाया गया। शिगवान कहते है, ''छतों पर पैनल लगाने के लिए हमने जिम्मेदार लोगों, जैसे गाँव का मुखिया, के घरों का चुनाव किया।''

बैटरी से चलने वाले सौर बल्ब शाम 7 बजे से आधी रात तक रोशनी देते है, जबकि सड़क लैंप शाम 6 बजे से सुबह 6 बजे तक जलते है। बारिश के दौरान, घरेलू बल्ब प्रतिदिन 3 घंटा काम करते है। सड़क लैंप में सावधानी के तौर पर अन्तर्निहित बैटरियों के साथ ऑटो सेंसर लगे हुए है। सौर प्रणाली की स्थापना एवं निरीक्षण की जिम्मेदारी दी ग्रीन आई इनिशिएटिव की है।

वेलोशी ग्राम पंचायत के सरपंच कमल रघुनाथ शिवारी कहते है कि अब ग्रामीण लोग बिना किसी डर के शाम को स्वतंत्रतापूर्वक निकलते है। ''केरोसीन लैंप के इस्तेमाल में भारी गिरावट आई है, जिससे आगजनी की घटनाओं एवं नेत्र विकारों की दर में कमी आई है।'' सौर प्रणाली के प्रबंधन के लिए प्रत्येक घर से रु. 50 मासिक का योगदान लेकर एक संग्रह का निर्माण किया गया है।

गाँव के स्कूल चैतन्य विद्यालय के प्रधानाध्यापक दीपक लड़कू देशमुख प्रसन्न है कि परियोजना ''रोशनी का एक सतत स्रोत लेकर आई है जो मेरे विद्यार्थियों को शाम में अधिक घंटों के लिए पढ़ने हेतु मदद करेगी।'' ■

रोटरी की व्यावसायिक इकाई के लिए सीएसआर निधि

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पुणे गांधी भवन, मंडल 3131, ने स्विस सर्फेस कोटिंग सलूशन निर्माता ओरलिकॉन बाल्जर्स द्वारा प्रदत्त सीएसआर निधि की सहायता से पुणे से 45 किलोमीटर दूर सल्लूम्ब्रे स्थित ग्राम प्रबोधिनी ग्रामीण स्कूल के परिसर में एक व्यावसायिक केंद्र स्थापित किया है।

इस संस्था में 16-18 वर्ष की आयु के 20 छात्रों के पहले बैच को विद्युत तकनीशियनों के रूप में प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है और वेल्डिंग टेक्नोलॉजी पर दूसरा कोर्स जल्द ही शुरू किया जाएगा। क्लब के पूर्व अध्यक्ष केशव ताम्हनकर कहते हैं, ''हम उन लड़कों और लडकियों को प्रशिक्षित करना चाहते हैं, जिन्होंने 10 वीं कक्षा की परीक्षा उतीर्ण की हैं या फेल कर गए हैं, लेकिन उच्च शिक्षा हासिल करने में असमर्थ हैं।'' इस प्रशिक्षण के लिए छात्रों से रु 1,000 का मासिक शुल्क लिया जाता है।

भवन में 2,500 वर्ग फुट क्षेत्र में एक कक्षा और तीन कार्यशालाएं हैं। भवन निर्माण के लिए सीएसआर निधि से रु 65 लाख व्यय किया गया; तथा व्यावसायिक कक्षाओं के लिए प्रशिक्षण सुविधाएं, मशीनरी और उपकरण स्थापित करने के लिए प्रथम चरण में रु 10 लाख का निवेश किया गया। जबकि क्लब ने केंद्र के निर्माण और स्थापना की निगरानी की, इसका प्रशासन (ग्रामप्रबोधिनी) संस्थान द्वारा किया जाएगा, जिसके संकाय छात्रों को प्रक्षिक्षण प्रदान करेंगे। क्लब ने छात्रों को व्यक्तित्व विकास, संचार और शरीर की भाषा जैसे सॉफ्ट स्किल्स में प्रशिक्षण देने की योजना बनाई है, जिसे पाठ्यक्रम के बीच में पढ़ाया जाएगा। ''हम ग्रामीण युवाओं को व्यावसायिक कौशल के साथ आत्मनिर्भर बनना चाहते हैं,'' ग्राम प्रबोधिनी के सचिव व्यंकटराव भाटने कहते हैं । इस बिल्डिंग का उद्घाटन बाल्जर के ग्लोबल हेड मार्क डेसरेयॅड और डीजी प्रशांत देशमुख ने मार्च (2016-17) में किया था।■

दाएं से बाएं *: ग्राम प्रबोधिनी सचिव सुभाषराव देशपांडे, ओर्लीकान बॉल्ज़र्स कोटिंग एम डी प्रवीण शीर्से, आईपीडीजी प्रशान्त देशमुख, बॉल्ज़र्स चेयरमेन कमोंडर बद्रे, बॉल्ज़र्स इंडस्ट्रीयल सोल्यूशन्स हेड मार्क देस्रायुद, आरसी पुणे गाँधी भवानीस आइपीपी केशव तमहांकर, रोटेरियन शशांक साप्रे और ग्राम ग्राम प्रबोधिनी प्रसिडेन्ट गिरीश बापत।*

सम्मेलन

बाहर खाएं

रैंडी ड्रज़िन

दुनिया के सबसे अधिक बहु-सांस्कृतिक शहर, टोरंटो में जितनी तरह की भाषाएँ है उतने ही तरह के पकवान भी है। जब आप 2018 में 23 से 27 जून तक चलने वाले रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए शहर में होंगे तब आप उनमें से कुछ को चखना चाहेंगे।

उन लोगों के लिए अनेक विकल्प है जिन्हें इटालियन खाना (लिटिल इटली), यूनानी खाना (ग्रीक टाउन), भारतीय खाना (लिटिल इंडिया), और चायनीज़ खाना (चाइना टाउन) पसंद है। लिटिल पुर्तगाल क्षेत्र में, *लोग चरास्को* (भुना हुआ मांस) खाने के लिए एलेक्स रेई डोस लेइटोस में या *पेस्टल डे नाटा* (अंडा कस्टर्ड टार्ट) खाने के लिए नोवा एरा बेकरी जाते है। कोरिया टाउन में, बक चांग डोंग सून टोफू पर जाए, जो पारंपरिक कोरियाई भोज पदार्थ *सनडुबू जिग्गे* (टोफू स्टू) पर आधारित व्यंजन पेश करता है। केंसिंग्टन मार्केट में, जंबो एम्पेनाडस पर चिलियन *एम्पेनाडस* और *ह्यूमिटस* (मक्के के पत्तों में लिपटा और भाप से पका हुआ मक्का, प्याज और तुलसी) मिलता है।

यहाँ तक कि टोरंटो में हैमबर्गर में भी रचनात्मक बदलाव हो रहे है। रिचमंड स्टेशन पर, स्टेशन बर्गर एक दूध की मीठी ब्रेड में चुकंदर की चटनी के साथ मिलता है। बर्गर्स प्रीस्ट पर, वैटिकन सिटी दो भुने हुए पनीर सैंडविचों के बीच में एक डबल पनीर बर्गर है।

और अगर आप नजारें देखते हुए भोजन करना पसंद करते है, तो 360 रेस्टोरेंट का कोई मुकाबला नहीं है, जो सी एन टावर पर सड़क तल से 1,151 फीट की ऊँचाई पर स्थित एक घूमता हुआ भोजन कक्ष है।

@ The Rotarian

सम्मेलन के लिए सर्वोत्तम दाम हेतु 15 दिसंबर तक पंजीयन करें। *riconvention.org* पर जाएं।

रेगिस्तान में नखलिस्तान की तलाश

भरत और शलन सवुर

भाग्य का लेखक: एक बुजुर्ग सज्जन डॉक्टर के प्रतीक्षालय की लम्बी कतार में बैठे थे। वह बुजुर्ग सज्जन कैंसर से उबर चुके थे और अपनी नियमित जाँच करवाने आये थे ताकि कैंसर से उन्हें पूरी तरह से मुक्ति मिल सके। क्योंकि समय यूंही गुजरता जा रहा था, वे अपनी जगह से उठे और शिष्टतापूर्व रिसेप्शनिस्ट को सम्बोधित करते हुए बोले ''महोदया, मेरी 10 बजे की मुलाकात तय हुई थी। अभी 11 बजे चुके हैं। मैं और इंतजार नहीं कर सकता। कृपया क्या आप मेरी कल की मुलाकात निर्धारित कर सकती हैं?''

इस पर कतार में मौजूद एक महिला ने दूसरी महिला से कहा - ''हाहा! यह व्यक्ति अवश्य ही 80 वर्ष का तो होगा। इसे इस उम्र में ऐसा क्या जरूरी काम हो सकता है कि यह प्रतीक्षा नहीं कर सकता।'' उस औरत का यह वक्तव्य जब उन बुजुर्ग सज्जन ने सुना तो उस महिला की ओर विनम्रतापूर्वक अपना सिर झुकाकर उन्होंने उत्तर दिया - ''मैं 88 वर्ष का हूँ महोदया। ठीक यही कारण है जिसकी वजह से मैं कीमती समय का एक मिनट भी बर्बाद नहीं कर सकता।''

प्रबुद्ध व्यक्ति कभी भी स्वयं के प्रति सहानुभूति से नीचे नहीं गिरता क्योंकि जैसाकि पोप फ्रांसिस ने कहा है - ''मत भूल तुम्हारा जीवन इस दुनिया का सबसे बड़ा उद्यम है। केवल आप ही इसे बर्बाद होने से बचा सकते हैं ....। सुखी रहने के लिए यह आवश्यक है कि आप स्वयं को पीड़ित महसूस करना बंद करे और अपने भाग्य के लेखक बने।''

सीखते रहो: यह कहानी सुकरात के बारे में है। मृत्यु के समय इस महान दार्शनिक ने अपने साथी कैदी को कवि स्टेसीकोरोस का लिखा एक मुश्किल गीत गाते सुना। सुकरात ने इस कैदी से उस गीत का अर्थ समझाने की प्रार्थना की। गायक कैदी ने सुकरात से गीत का अर्थ जानने का कारण पूछा तो सुकरात ने जवाब दिया कि ''मैं इसलिए इस गीत का अर्थ जानना चाहता हूँ ताकि मैं मरने से पहले एक चीज और सीख सकूं।'' गायक ने पुनः ''पूछा कि मृत्यु से ठीक एक सप्ताह पूर्व कुछ नया सीखने से क्या लाभ मिलेगा?'' सुकरात ने कहा ''ठीक

वही वजह हैं जिस वजह से तुम मरने के 50 साल पहले कुछ सीखना चाहते हो।''

प्रबुद्ध या जागृत व्यक्ति हमारी ही तरह रेगिस्तान से गुजरते हैं, किन्तु वे कठिन हालातों में भी नखलिस्तान ढूंढ़ लेते हैं।

नखलिस्तान कहाँ हैं? यह लेख इसी सम्बन्ध में है। आप पिछले 12 महीनों में बुरे दौर से गुजरे हो। शायद आपको वित्तीय संकट का सामना करना पड़ा हो। दरकते रिश्ते का अनुभव हुआ हो, आपके हाथ से नौकरी छूट गई हो, अप्रत्याशित बीमारी के कारण आपको अस्पताल में भर्ती होना पड़ा हो, आपका प्रियजन आपको छोड़कर चला गया हो। किन्तु हौंसला रखिए और संकट से बाहर निकलने के लिए स्वयं को पूरा श्रेय दीजिए। संकट में डटे रहने और मैदान न छोड़ने के लिए अपनी पीठ थपथपाएँ। हाँ, संघर्ष में पीड़ा थी और उस पीड़ा का कुछ अवशेष अभी भी शायद बचा हो, किन्तु यह भी सच है कि संघर्ष की राह में आपने अपने वर्षों के भय से मुक्ति पाई है। आपमें छुपे हुए अवरोध दूर हुए हैं, एक गहरी समझ विकसित हुई है। और इसी वजह से नया साल पुराने साल से काफी बेहतर होगा।

आप नये हैं: हाँ, यह सच है, आप वह नहीं है जो आप कल थे, आप आज कल से बहुत अधिक हैं। आप अधिक अनुभवी, अधिक परिपक्व और सबसे बढ़कर आप अधिक आप हो गए हैं। और जब आप स्वयं होते है तो आप एक तरह से ईश्वर ही होते हो। आज आप संकट से पहले जितने सुलझे हुए थे, उससे अधिक सुलझे हुए बन गए हो। आप जागृत है क्योंकि संकट के समय अंहकार आहत होकर अब अवरूद्ध हो गया है। यह अहंकार अब और आज्ञा नहीं देता। अतएव आप अपने संकट काल में तरक्की करते और निखरते हैं। मन की गति काफी मंद हो जाती है। चिंता भरी भागदौड़ से स्वीकृति की ठोस स्थिरता। इसमें उपचार है। नयेपन में जीवन है। एक नई दमक है।

अपरिचित रास्तों पर चलने से डरो मत। ये अपरिचित रास्ते आपको सबसे अच्छी जगहों पर ले जाते हैं।

हाँ, यह अच्छा है जब संकट ने आपको अस्थिर बनाया उससे पहले की दिनचर्या में आप लौट जाएं, साथ ही साथ संकट काल में जो कुछ भी हुआ उसे एक आघात न मानें। मैने यह सीखा है कि ऐसे आघात हमें रूककर उन महत्वपूर्ण बातों की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करते हैं जिन्हें हम अनदेखा कर रहे थे। अस्थायी रूप से किनारे पर बैठना हमें दर्शक के दृष्टिकोण से सब कुछ देखने में समर्थ बनाता है। ''यहाँ तक कि जिससे हम पूरी तरह से परिचित है तब वह भी हमें कुछ नया दिखाई देता है।''

प्रारंभ में आप चाहते हैं चीजें जैसे पहले थी वैसी ही रहे, पर धीरे-धीरे जैसे-जैसे आप चीजों को स्वीकारना प्रारंभ करते हैं, जैसा कि कुशल लोग कहते हैं और जो काफी सार्थक बात है - ''अपरिचित रास्तों पर चलने से डरो मत। ये अपरिचित रास्ते आपको सबसे अच्छी जगहों पर ले जाते हैं।'' आप अपनी शक्तियों के बारे में जान पाते हैं, जिसका यह परिणाम होता है कि आपको यह अहसास होता है, चाहे जो कुछ भी हो जाए, आपके कुछ नहीं होगा। इस बात से बहुत सम्बल मिलता है। और जब आप जान जाते हैं कि चीजें आपके नियंत्रण में है, तो आप मानवीय करूणा में भरोसा एवं परिस्थितियों को उचित सम्मान देना जैसे नगीने चुनते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात आपका शरीर और आपका मन जिन्होंने वर्षों से आप बोझ उठाया है, वे आपको सिखाते हैं आराम कोई अपराध नहीं है।

नखलिस्तान में आगे बढ़ते रहिये: निश्चय ही आप रेगिस्तान में काफी चल चुके हैं, अब मखलिस्तान को खोजिए और उसमें समृद्धि प्राप्त कीजिए। खुद को और अपने जीवन को नई कार्य व्यवस्था में लगाइये। कोई आदर्श वाक्य बनाइये जैसे - *दुःख कम करना, सुख बढ़ाना*। इस आदर्श वाक्य को अमल में लाइये।

- थके हुए मस्तक को स्फूर्ति प्रदान करने के लिए पौष्टिक आहार लीजिए। कम नमक, चीनी और तेल वाला भोजन चुनिए। टिपः गर्म खिचड़ी, चावल, दाल, सब्जियों का मिश्रण, जो कम मसालेदार हो। काफी राहत देने वाला और स्फूर्तिदायक है। दिन भर पानी पीजिए। जल मिश्रित (नम) कोशिकाएं ऊर्जा से भर जाती है। बिना किसी तरह की शिकायत किए जब आप

तुम्हारा जीवन इस दुनिया का सबसे बड़ा उद्यम है। केवल आप ही इसे बर्बाद होने से बचा सकते हैं ....।

शांत मन से खाते-पीते है, तो भोजन स्वादिष्ट लगता है और शरीर को अधिकाधिक पोषण मिलता है।

- मनोयोग पूर्वक व्यायाम करें। व्यायाम करते समय शरीर को ज्यादा कष्ट न दें। जब मैं अपनी आरामकुर्सी पर बैठकर स्थिर साईकिल पर पैंडल मारता हूँ तो मैं अपना मन भी काम में लेता हूँ। परिणाम मेरा शरीर तो तंदुरूस्त रहता ही है, साथ ही मेरे तीव्र गति से दौड़ते मस्तिक और मन की गति धीमी पड़ जाती है। इस क्रिया में कभी असीम शान्ति, कभी हल मिलते हैं, तो कभी विचार उभरते हैं। मुझे तो साईकिल चलाते समय शरीर छोड़ देने का अनुभव हुआ है। जब आप शरीर को छोड़ देते हैं, तो आप *में, मुझे, मेरा* जैसी बातें नहीं करते आप अधिक क्षमाशील, निष्पक्ष पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। ऐसा लगता है कि आप अदृश्यों, फूलों की मधुर सुगंध की तरफ खींचे चले जा रहे हैं।

ये सभी शानदार घटनायें आपको साहस से भर देती है। आप अपने धन का हिसाब करते हैं, तो आप पाते हैं, आपने जितना सोचा था उससे अधिक पास है। आप अपने दिवंगत प्रियजन के बारे में शान्तिपूर्वक सोच पाते हैं। आपकी व्यक्तिगत हानि सार्वभौमिक मानवीय अनुभव का हिस्सा बन जाती है और पीड़ा पीछे छूट जाती है। आपकी स्वयं की बीमारी की दूर चली जाती है।

मेरा विश्वास करो। मन को अविचलित रखना ठीक ऐसा ही जैसे शुद्ध सोने की प्रवृत्ति का मालिक होना जो हमेशा चमकती रहती है। खनन करते रहिए। एक सम्पूर्ण अत्युत्तम नई दुनियां जो स्वास्थ्य, धन एवं प्रेम से भरपूर है आपके सामने आएगी।

लेखक 'फिटनेस फॉर लाइफ' पुस्तक के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Advertise in ROTARY NEWS
(Colour only)

Tariff (per insertion)

Back cover
Rs.1,00,000

Inner Front cover
Rs.60,000

Inner Back cover
Rs.60,000

Inside Full page
Rs.30,000

Inside Half page
Rs.20,000

Specifications

Full page
17 x 25 cm

Half page
17 x 12 cm

Contact:
rotarynews@rosaonline.org
044 42145666

Rotary at a glance

Rotarians : 12,27,314

Clubs : 35,774

Districts : 539

Rotaractors : 2,46,146*

Clubs : 10,702*

Interactors : 5,09,243*

Clubs : 22,141*

RCC members: 2,21,674*

RCC : 9,638*

* As on November 1, 2017

Membership Summary

As on November 1, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	112	4,621	216	59	225	173
5	2982	67	3,017	97	59	111	43
5	3000	126	5,328	428	289	646	195
4	3011	72	3,196	620	52	104	24
4	3012	87	3,547	706	66	125	55
5	3020	102	4,427	213	116	461	351
4	3030	94	5,022	612	73	306	164
4	3040	97	2,184	237	53	114	135
4	3053	77	2,923	468	16	36	93
4	3054	128	6,085	947	91	291	472
4	3060	97	4,022	418	62	116	129
4	3070	108	3,023	275	67	153	54
4	3080	78	3,366	223	69	215	106
4	3090	79	2,083	80	32	36	122
4	3100*	74	1,684	76	10	73	146
6	3110	115	3,948	284	51	49	104
6	3120	75	3,276	345	37	54	50
4	3131	134	5,439	1,062	102	274	79
4	3132	110	4,442	485	63	193	138
4	3141	91	5,400	1,130	114	251	86
4	3142	79	2,905	413	63	184	69
5	3150	100	3,681	352	93	227	109
5	3160	69	2,407	111	21	45	81
5	3170	128	5,502	380	58	300	160
5	3181	73	3,167	220	31	172	104
5	3182	79	3,278	244	28	271	90
5	3190	132	5,294	612	139	346	50
5	3201	139	5,210	306	95	124	47
5	3202	132	4,927	246	97	425	44
5	3211	137	4,419	260	12	88	123
5	3212	96	3,877	212	108	266	126
5	3231	68	2,864	99	55	192	236
5	3232	98	3,943	524	135	302	82
6	3240	88	3,053	347	60	146	151
6	3250	99	3,877	703	44	205	176
6	3261	70	2,510	221	16	102	42
6	3262	97	3,348	387	43	68	75
6	3291	149	3,927	757	71	130	586
India Total		**3,756**	**1,45,222**	**15,316**	**2,650**	**7,426**	**5,070**
5	3220	73	1,968	244	81	198	77
6	3271	80	1,503	242	46	16	13
6	3272	155	2,925	448	39	36	36
6	3281	203	5,753	782	227	84	186
6	3282	138	3,900	317	133	40	41
6	3292	116	4,487	681	120	106	109
S Asia Total		**4,521**	**1,65,758**	**18,030**	**3,296**	**7,906**	**5,532**

**Non-districted.*

Source: RI South Asia Office

रोटरी क्लब सेलम यंग टाउन - मंडल 2982

अन्नपूर्णा दिवस के उत्सव के तहत क्लब ने नेत्रहीन बच्चों और अगाविल्ली चैरिटेबल ट्रस्ट के सदस्यों को पौष्टिक आहार प्रदान किया। परियोजना की लागत रु 10,000 थी।

रोटरी क्लब गोदावरी पलाकोल - मंडल 3020

हैप्पी स्कूल परियोजना के हिस्से के रूप में, क्लब ने रु 50,000 की लागत से एक सरकारी ग्रामीण विद्यालय की पुताई की। रोटेरियनों ने स्कूल को गोद लिया है और उनकी आगामी महीनों में बच्चों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने की योजना है।

रोटरी क्लब मोगा ग्रेटर - मंडल 3090

विभिन्न साक्षरता परियोजनाओं में शिक्षकों के प्रयासों के लिए क्लब द्वारा उन्हें राष्ट्र निर्माता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डीजी बाघ सिंह पन्नू ने प्राप्तकर्ताओं को प्रमाण पत्र और शाल वितरित किए।

रोटरी क्लब सेनोरस जामनगर - मंडल 3060

जामनगर की दो झुग्गियों में रहने वाले 100 स्कूल जाने वाले बच्चों को रेनकोट बांटी गई। इससे उन्हें बारिश का सामना करने में मदद मिलेगी और यह उन्हें बीमार पड़ने से बचाएगा।

विधियाँ

रोटरी क्लब मुंबई मालाबार हिल्स - मंडल 3141

तीन स्कूलों के बच्चों को अन्नपूर्णा भोजन परियोजना के अंतर्गत 600 से अधिक रोटरी का चक्र लगे नाश्ते के बक्से वितरित किये गए। बच्चों ने ऊँचे स्वर में धन्यवाद बोलकर क्लब के इस कृत्य के प्रति अपना आभार व्यक्त किया।

रोटरी क्लब न्यू सेंचुरी बीदर - मंडल 3160

इलाके की कुशल और सुविधाओं से वंचित महिलाओं को सिलाई मशीन दान की गई ताकि वे सिलाई को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी पारिवारिक आय में वृद्धि कर सके। कार्यक्रम में पीडीजी जी एस मंसूर ने हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब मैसूर नॉर्थ - मंडल 3181

वजमंगला गाँव के रोटरी स्कूल के बच्चों ने डेंगू और चिकनगुनिया के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए रैली निकाली। ग्रामीणों को आसपास का वातावरण स्वच्छ रखने के लिए पैम्फलेट बांटें गए।

रोटरी क्लब नरसिंहराजपुरा - मंडल 3182

ज़िला स्तरीय और राज्य-स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं के लिए चयनित लगभग 100 सरकारी स्कूलों के बच्चों को क्लब ने ट्रैक सूट उपहार में दिए। ''हम बच्चों को अकादमिक स्तर पर श्रेष्ठ होने के साथ-साथ खेलों में भी सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते है,'' क्लब के सचिव प्रभाकर कहते है।

रोटरी क्लब बिचोलिम - मंडल 3170

शहर के तीन स्कूलों में सेनेटरी नैपकिन डिस्पेंसर और इन्सिनरेटर स्थापित किये गए। प्रत्येक इकाई की कीमत रु 30,000 है और परियोजना की लाभार्थियों एवं समुदाय द्वारा प्रशंसा की गई।

मंडल गति

रोटरी क्लब बंगलौर इंदिरानगर - मंडल 3190

भारतीय विद्या भवन और जीविका स्किल्स के साथ साझेदारी में क्लब द्वारा चौबीस लोगों को खुदरा बिक्री सहायक के रूप में प्रशिक्षित किया गया। पिछले बैच में, 25 महिलाओं को खुदरा केशियर के रूप में प्रशिक्षित किया गया था।

रोटरी क्लब कोचिन वेस्ट - मंडल 3201

अभिघातज और अवसादकारी घटनाओं से पीड़ितों को बचाने और मानसिक आघात और आपातकालीन देखभाल पर जागरूकता फ़ैलाने के लिए सेमीरिटन परियोजना प्रारंभ की गई। परियोजना क्लब, वीपीएस लेकशोर हॉस्पिटल और कोची सिटी पुलिस की संयुक्त पहल है।

रोटरी क्लब पत्तनमतिट्टा साउथ - मंडल 3211

क्लब ने कीरूकुझी स्थित बालभवन नाम के एक अनाथालय के सहवासियों को चारपाई, बिस्तर, तकिये और चादरें बांटी। अपनी चालू परियोजना के हिस्से के रूप में रोटेरियन अनाथालय को समर्थन दे रहे है।

रोटरी क्लब शिवकाशी सेंट्रल - मंडल 3212

परिसर को स्वच्छ रखने के प्रयास के लिए क्लब द्वारा शिवकाशी के सरकारी अस्पताल के बीस सफाईकर्मियों को सम्मानित किया गया। इस छोटी सी प्रशंसा से रोटरी ने अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा ख्याति अर्जित की।

रोटरी क्लब पोल्लाची - मंडल 3202

पोल्लाची और उसके आसपास के सरकारी स्कूलों के उत्कृष्ट शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। क्लब के सदस्य और पीए शिक्षण संस्थानों के अध्यक्ष पी. अप्पूकुट्टी द्वारा पुरस्कार वितरित किये गए।

विधियाँ

रोटरी क्लब कांचीपुरम - मंडल 3231

रु 3.75 लाख के मंडल अनुदान के साथ रु 8.20 लाख की लागत वाले एक शव वाहन को मोक्ष ज्योति श्मशान ट्रस्ट को दान किया गया। जबकि क्लब ने परियोजना के लिए रु 2.50 लाख का योगदान दिया, वहीं रोटरी क्लब स्पाईवे, मंडल 6990, जॉर्जिया की रोटेरियन पद्मिनी शर्मा ने रु 1.50 लाख का दान दिया।

रोटरी क्लब चेन्नई टावर्स - मंडल 3232

नदियों के लिए रैली कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, क्लब ने मंडल के सात अन्य क्लबों के साथ मिलकर शहर के समीप स्थित पोरूर लेक की सफाई का आयोजन किया। रोटरेक्टरों और ईशा संस्थान के स्वयंसेवकों ने भी शामिल होकर अपना योगदान दिया। डीजी आर. श्रीनिवासन और शहर के पुलिस कमिश्नर ए. के. विश्वनाथ ने मुहीम की शुरुआत की।

रोटरी क्लब गंगटोक साउथ - मंडल 3240

बेंगलुरु के श्रीदेवी ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूट के सहयोग से आयोजित एक कार्यक्रम जिसका शीर्षक था 'क्रॉस रोड: 21वीं सदी के शिक्षक' में छह शिक्षकों को राष्ट्र निर्माता पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रतिष्ठित शिक्षकों ने अध्यापकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों और अनुभवों को साझा किया।

रोटरी क्लब दरभंगा- मंडल 3250

बच्चों में हाथों की धुलाई की आदतों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए रोटेरियनों ने तीन स्कूलों को बाल्टी, मग्गे, कूड़ेदान और अन्य उपयोगी सामग्रियाँ दान दी। उनमें से एक स्कूल में उन्होंने हाथों की धुलाई की एक इकाई भी स्थापित की।

रोटरी क्लब कबीतीर्थ कलकत्ता - मंडल 3291

सुविधाओं से वंचित बच्चों को पढ़ाने के लिए संतोषपुर इलाके में एक शिक्षण केंद्र खोला गया। रोटेरियनों ने बच्चों को शैक्षणिक किट बांटी और इलाके में पौधारोपण किया।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

रोटरेक्टरों की मालदीव्स में मौज-मस्ती

किरण ज़ेहरा

"स्वच्छ समुद्र तट, साफ नीला पानी और हमें परेशान करने के लिए कोई फेरीवाले नहीं। काश कि हम भारत को इतना सुन्दर बना सकते,'' बॉम्बे जुहू बीच, मंडल 3141, के रोटरेक्ट क्लब के एक अभिषेक बांदोड़कर, मालदीव्स के अपने मजेदार, अर्थपूर्ण, वहन करने योग्य, एवं यादगार छह दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय रोटरी युवा नेतृत्व पुरस्कार (RYLA) समारोह को याद करते हुए कहते है। रोटरी क्लब मुलुंद, मंडल 3141, और रोटरी क्लब माले, मंडल 3220, ने मंडल 3142, 2982, 3000, 3080, 3190, 3211, 3231, 3240, 3250, 3261 के 22 क्लबों, मुंबई के स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया और KRYFS पॉवर कंपोनेंट्स लिमिटेड के साथ मिलकर संयुक्त

रूप से अंतर्राष्ट्रीय IRYLA का सह-आयोजन किया।

माले के होटल चंपा सेंट्रल में ठहरने से लेकर नॉर्थ माले एटोल स्थित दी पैराडाइस आइलैंड रिसॉर्ट्स तक, सब कुछ अच्छे से आयोजित किया गया था। एक पक्का शाकाहारी होने के नाते, मैं खाने को लेकर चिंतित थी। लेकिन हमें दोनों ही होटलों में अच्छा शाकाहारी भोजन मिला, जोधपुर की ऐश्वर्या महेश्वरी मोदी कहती है। संयोजक और मंडल 3141 के RYLA अध्यक्ष पीपी सीए दीपक लाला कहते है कि वह रोटरी क्लब माले, मंडल 3220, के रोटेरियनों और रोटरेक्टरों के आभारी है कि उन्होंने छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखा और भारत के विभिन्न हिस्सों से आए सभी 49 रोटरेक्टरों और 24 रोटेरियनों को "घर से दूर होते हुए भी, घर जैसा एहसास करवाया।"

मंडल RYLA चेयर दीपक लाला और पीडीजी लता सुब्रायडू, मालदीव के भारतीय राजदूत अखिलेश मिश्रा (बीच में) के साथ।

रोंगली गुवाहाटी के रोटरेक्ट क्लब, मंडल 3240, के एक रोटरेक्टर दीप ज्योति दास कहते है, "8-13 सितंबर 2017 के दौरान, मैं अपनी ही दुनिया में था। पूर्णतः स्वच्छ लैगून के ऊपर से समुद्री विमान की यात्रा, व्हेल सब्मरीन में बैठकर समुद्री जीवन की सुन्दरता को देखना, समुद्र में स्नोर्केलिंग करना... मैंने निश्चित रूप से अपनी यात्रा के लिए अभिलषित सभी गतिविधियों का अनुभव कर लिया है।" उन्होंने यह भी कहा कि उनके लिए इतनी कम उम्र में यह सब संभव केवल रोटरेक्ट के कारण हो पाया है। "मेरे फेसबुक पेज पर मालदीव्स की तस्वीर देखकर मेरे दोस्तों की शुरुआती प्रतिक्रिया थी 'वाओ' और अब मेरे क्लब ने पाँच नए सदस्यों को शामिल किया है और पांच अन्य शामिल होने के लिए तैयार है क्योंकि वे सोचते है रोटरेक्ट बहुत मज़ेदार है," दास आगे कहते है।

RYLA एक अनुभव है और वह सब कुछ जो सहभागी यहाँ यात्रा और प्रशिक्षण सत्रों के रूप में सीखते है उनके अंतर्वैयक्तिक कौशलों को बढ़ाता है," लाला कहते है जिन्होंने "उनके अंदर के नेतृत्व कौशलों का उपयोग करने के लिए आठ मनोरंजक एवं प्रगतिशील सत्रों की योजना बनाई थी।" सत्रों के बारे में बात करते हुए पीडीजी (मंडल 3141) लता सुब्रैदु, जिन्होंने दल निर्माण पर एक सत्र का संचालन किया, कहती है, "एक सत्र से कुछ नहीं बदलता। हम केवल सोच का एक बीज बोते है जो समय के साथ बड़ा होता है और युवा नेतृत्वकर्ताओं के रूप में सामने आने में उनकी मदद करता है।"

बांदोड़कर के हिसाब से, डॉ. राहुल जोशी का संगीत चिकित्सालय सर्वश्रेष्ठ सत्रों में से एक था। मनीषा के लिए जिन्हें *एमिग्डाल हाईजैक* के बारे में कोई जानकारी नहीं थी कहती है, "यह जानना बहुत ही रोचक था कि एक मूंगफली के आकार जितना आपके दिमाग का यह हिस्सा आपको चकमा दे सकता है।" रोटरी क्लब देओनार, मंडल 3141, के रोटेरियन झंकार गडकरी, जिन्होंने इस सत्र की अध्यक्षता की कहते है, "सचेतन ही एकमात्र जागरूकता तकनीक है जो किसी विवाद को खत्म करने में मदद कर सकती है - चाहे यह घर पर हो या काम पर। इस सत्र का उद्देश्य भावना और बुद्धि के मध्य संतुलन बनाना और अधिक जागरूक चुनावों को करने में उनकी मदद करने का था।" मालदीव्स में भारतीय राजदूत अखिलेश मिश्रा ने भारत और मालदीव्स के मध्य आर्थिक और सामाजिक रिश्ते की व्याख्या करते हुए एक सत्र की अध्यक्षता की।

धिवेही बोदू बेरू - मालदीव्स का एक सांस्कृतिक कार्यक्रम, बॉलीवुड शाम, म्यूजिक बैंड का लाइव प्रदर्शन और एक टैलेंट शो कुछ अन्य विशिष्टताएं थी। सभी प्रतिभागियों को एक अंतर्राष्ट्रीय IRYLA किट दी गई जिसमें एक लटकाने वाला बैग, एक छाता, एक टी-शर्ट और एक माल्दिवियाई स्मारक शामिल था।

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

लुटियन्स मेरे दिमाग में

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

मेरे जैसे वृद्ध मनुष्यों को 'ट्विटर' और 'फेसबुक' जैसी चीजों से दूर रहना चाहिये। अधिकांश ऐसा करते है लेकिन कुछ (मेरे जैसे) इन प्लेटफार्म को दिलचस्प मानते हैं। ट्विटर जैसा ऑग्डन नैश कह चुके है, बेहतर है, लेकिन फेसबुक नहीं। आपने किसी को 'दोस्त' बनाया, तो आपके पास उनकी निजी जिन्दगी से जुड़ी अनेक अरूचिकर सूचनाओं की बाढ़ सी आ जाती है। और यदि आपने उन्हें 'दोस्त' से हटा दिया तो वे नाराज़ हो जाते हैं।

इसलिए मैं ट्विटर पर हूँ, फेसबुक पर नहीं। मैं वहाँ भी किसी गंभीर बात को 140 शब्दों में लिखना चुनौती मानता हूँ, मैं यह अक्सर करता हूँ।

एक दिन मेरे बहुत ही पुराने दोस्त जो ज्यादा उम्र के नहीं है, ने मुझे 'लुटियंस हैण्डल' को फॉलो करने को कहा। इसे 'लुईयंस' उच्चारित किया जाता है न कि लुटि-यंस। मैने ऐसा किया और मुझे वहाँ बहुत ही रूचिकर, किस्से मिले। दिल्ली के रहस्यमयी पत्रकारिता जगत में जीवन का अधिकांश समय बिताने के बाद मैने महसूस किया कि मैं अलीबाबा की तरह गुफा के सामने ''खुल जा सिमसिम'' बोलकर खड़ा हुआ हूँ।

लुटियंस दिल्ली वह क्षेत्र है, जहाँ 1947 से पूर्व ''गौरे साहब'' बड़े-बड़े जमीन के प्लॉटों पर बने घने व हवादार बंगलों में रहा करते थे। ये 1000 के आसपास बंगले दिल्ली के हृदयस्थल में 400 एकड़ भूमि पर बने हुए हैं।

फेस्बुक पर अगर आपने किसी को 'दोस्त' बनाया, तो आपके पास उनकी निजी जिन्दगी से जुड़ी अनेक अरूचिकर सूचनाओं की बाढ़ सी आ जाती है। और यदि आपने उन्हें 'दोस्त' से हटा दिया तो वे नाराज़ हो जाते हैं।

वर्ष 1947 में जब ब्रिटिश चले गए थे, उसके बाद सबसे नीरस भारतीय - राजनेता, नौकरशाह व फौजी लुटियंस में आये। वर्ष 1980 आते-आते वे इस पर लड़ने लगे थे। एक मामूली सरकारी सेवक के आवास के स्थान पर यह प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया।

जो लोग नहीं जानते उनके लिए, लुटियंस दिल्ली के दो भाग है, एक 1947 पूर्व और एक 1947 पश्चात। पूर्ववती लुटियंस लाइट है। इसमें हजारों गन्दे फ्लैट्स है, जो बढ़ती हुई ब्यूरोक्रेसी के लिए बने हैं। वे सब अब गिर रहे हैं। वास्तविक लुटियंस दिल्ली करीब एक चौथाई नई व पुरानी दिल्ली के करीब थी अब 0.001 प्रतिशत रह गई है।

अब वहाँ रह रहे लोगों के द्वारा एक हस्यास्पद बात यह है कि सरकार ने इसे एक वनक्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया है। हिन्दी में उसे 'जंगल' या 'जांगल' कहा जाता है।

अधिकांश लोग लुटियंस की मुख्य सड़कों को जानते हैं, लेकिन मैं उसी क्षेत्र में बड़ा हुआ हूँ, मैं वहाँ की आंतरिक और भीतरी सर्विस रोड़ और लेनों को जानता हूँ। पुराने दिनों में प्रेमी-जोड़े वहाँ इन कम रोशनी वाली गलियों में त्वरित आलिंगन और लुके छिपे चुम्बन के लिए मिलने आते थे।

लेकिन आज, सुरक्षा बलों को धन्यवाद। वहाँ पुलिस के कांस्टेबल है। मैं सोचता हूँ कि उन सबको मुफ्त 4जी मोबाइल दिए जाने चाहिए, ताकि वे नितान्त व्यक्तिगत आनंद को सार्वजनिक रूप से अश्लीलतापूर्वक प्रदर्शित करने वालों पर रोक लगा सकें।

खैर, ट्विटर पर भी इस छोटे वनक्षेत्र के कई अश्लील किस्से हैं। ये सब बेकार हैं। कुछ चुनींदा लोगों के अलावा बाकी इस क्षेत्र में ऊबाऊ और नीरस लोगों का कहना है जिनके कोई किस्से नहीं हैं।

पिछले 25 साल इस लुटियंस दिल्ली का सामाजिक चरित्र तीन बार बदल चुका है। पहली

अब वहाँ रह रहे लोगों के द्वारा एक हस्यास्पद बात यह है कि सरकार ने इसे एक वनक्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया है। हिन्दी में उसे 'जंगल' या 'जांगल' कहा जाता है।

बार 1990 में ऐसा हुआ जब वी.पी. सिह के नेतृत्व में पहली बार बड़े गठबंधन की सरकार बनी। क्षेत्रीय पार्टियों के गैर-अंग्रेजीयत लोग इन बंगलों में आकर रहने लगे। कई तो अपने साथ गायें भी लेकर आयें।

इसके बाद 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी एक स्थायी सरकार को नेतृत्व देने में कामयाब हो पाये। भाजपा के लोगों का पूरा समूह इसमें प्रविष्ट हुआ। लेकिन उनका डेरा बहुत ही अल्प समय का रहा। उस समय की भाजपा आज से अलग थी। उन दिनों इसके अधिकांश सदस्य अंग्रेजी बोल सकते थे, और सही ढंग से लिख भी सकते थे।

वर्ष 2004 में अंग्रेजीयत कांग्रेस पुनः यहाँ आई। उन्होंने इस तरह दावा किया कि मानों उन्होंने अपनी पैतृक सम्पति का पुनर्निर्माण किया हो उसके इस अंहकारवादी रवैयों ने ही मोदीजी को इतना लोकप्रिय बना दिया।

दस वर्ष बाद भाजपा को नया चेहरा यहाँ आया। ये वे लोग है जिन्होंने लुटियन्स को निंदात्मक क्षेत्र बना दिया ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने ''सेक्युलर'' के साथ किया। उन्होंने 7 रेसकोर्स को लोक कल्याण मार्ग नाम दिया।

मैं उस दिन का इंतजार कर रहा हूँ जब कोई समाजशास्त्री इस 400 एकड़ के बारे में किताब लिखे। मैं लिख सकता हूँ, लेकिन मेरा मानना है कि ... मेरे पास इससे बेहतर करने को हैं। ■

संक्षेप में

स्कूल छोड़ने वाली से एक सर्वोत्तम व्यवसायी तक

इंग्लैंड के वेस्ट नॉटिंघमशायर कॉलेज की प्रधानाध्यापिका एवं सीईओ आशा खेमका (65) ने हाल ही में बर्मिंघम में 'एशियन बिज़नेसवुमन ऑफ़ दी इयर' का खिताब जीता। आशा बिहार की रहने वाली है और 13 वर्ष की उम्र में उन्होंने स्कूल छोड़ दिया था। छोटी उम्र में शादी होने के बाद, 25 वर्ष की उम्र में वह बिना अंग्रेजी के ज्ञान के इंग्लैंड चली गई। उन्होंने टीवी धारावाहिकों को देखकर और उनके पड़ोसियों से बात-चीत करके अंग्रेजी सीखी और कार्डिफ विश्वविद्यालय से एक व्यावसायिक डिग्री प्राप्त की। वह एक लेक्चरर के रूप में वेस्ट नॉटिंघमशायर कॉलेज से जुड़ी। तीन बच्चों की माँ आशा को 'डेम कमांडर ऑफ़ दी आर्डर ऑफ़ दी ब्रिटिश एम्पायर', जो देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक और नाईट की उपाधि के महिला समकक्ष के बराबर है, एवं स्वयं क्वीन द्वारा 'आर्डर ऑफ़ दी ब्रिटिश एम्पायर' से सम्मानित किया गया है।

साड़ी पहनने वाली मैराथन धावक

जयंती संपतकुमार (44) हाल ही में हैदराबाद में आयोजित हुई एयरटेल मैराथन में 20,000 अनोखे धावकों में अलग दिखी। सामान्य ट्रैकसूट के विपरीत, जयंती मैराथन में बिंदी और सैंडल के साथ बैंगनी रंग की साड़ी में दौड़ी, पांच घंटे से भी कम समय में वह 42 कि.मी दूर समापन रेखा तक पहुँची। उनका मकसद हथ-करघे को बढ़ावा देना था और ध्यान आकर्षित करने के लिए इससे अच्छा तरीका क्या होता! उनका यह अद्भुत कार्य उन्हें 'साड़ी पहनकर सबसे तेज मैराथन करने वाली' के रूप में गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में जगह दिलवा सकता है। मैराथन में उनका एक अनुयायी उदय भास्कर धन्दामुदी (27) था जो धोती पहनकर मैराथन में दौड़ा। उसने दौड़ को पाँच घंटे और पन्द्रह मिनट में पूर्ण किया।

एक टैग के लिए खींचतान

पश्चिम बंगाल को हाल ही में उसके रसगुल्लों के लिए भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा GI (भौगोलिक संकेत) टैग प्राप्त हुआ है। उड़ीसा एवं बंगाल के मध्य इस मिठाई की उत्पत्ति को लेकर कशमकश चली आ रही थी। जहाँ बंगाल ने इसकी उत्पत्ति का श्रेय 1860 के दशक के हलवाई नोबिन चंद्र दास को दिया, वहीं उड़ीसा ने दावा किया था कि 'पहला रसगुल्ला' के नाम से निर्दिष्ट यह मिठाई 13वीं शताब्दी से पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर के धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा रही है। प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी ने ट्वीट किया: ''हम सभी के लिए मीठा समाचार। हम बहुत प्रसन्न और गर्वित है कि #Bengal को रसगुल्लों के लिए GI दर्जा प्रदान किया गया है।'' दूसरी ओर, उड़ीसा ने रसगुल्ले के उसके अपने ही ब्रांड के लिए ऋख टैग आवेदन दर्ज किया है।

सेलफ़ोन से कैंसर होता है

CNN के साथ एक साक्षात्कार में, WHO की चिकित्सीय संवाददाता एलिज़ाबेथ कोहेन ने कहा कि ऐसे वैज्ञानिक निष्कर्ष है जो ''सेलफ़ोन के संभवतः कैंसरकारी होने'' का समर्थन करते है और सीसे, इंजन के धुएं एवं क्लोरोफॉर्म की तरह कैंसर कर सकते है। ''यह समय के साथ बढ़ने वाला कैंसरकारी है। एक फ़ोन कॉल से आपको कैंसर नहीं होगा,'' एलिज़ाबेथ कहती है। विकिरण तब अधिक होता है जब फ़ोन को सिर के पास पकड़ा जाता है। वह इयरफ़ोन या ऐसे किसी अन्य उपकरण के इस्तेमाल का सुझाव देती है जो फ़ोन को दूरी पर छोड़ सके, और इस बात का भी सुझाव देती है कि फ़ोन को शरीर के पास जैसे जेब में रखने से भी बचना चाहिए। वह आगे कहती है, ''इस बात की संभावना है कि कंपनियाँ उनके ड्राइंग बोर्डों पर जाकर कम विकिरण वाले फ़ोनों का निर्माण करेंगी।''

आशीर्वाद देकर प्रदत्त

पोप फ्रांसिस, जिन्हें लक्ज़री कार निर्माता द्वारा लेम्बोर्गिनी हुराकैन प्राप्त हुई, उसकी नीलामी करके उससे प्राप्त राशि का इस्तेमाल धर्मार्थ कार्यों जैसे ISIS उग्रवादियों द्वारा इराक में ईसाईयों के तबाह किये गए घरों के पुनर्निर्माण, मानव तस्करी के शिकारों के पुनरुद्धार और सेंट्रल अफ्रीका में चिकित्सीय सेवाएं देने वाले दो इतालवी समूहों की मदद के लिए होगा। 200,000 डॉलर कीमत वाली हुराकैन की अधिक कीमत में बिकने की अपेक्षा है क्योंकि पोप ने कार के हुड पर उनके हस्ताक्षर करके उसे आशीर्वाद दिया है। पिछले वर्ष, पोप ने सीरियाई शरणार्थियों की सहायता के लिए उनके द्वारा पोलैंड में इस्तेमाल की गई तीन कारें दी थी और वर्ष 2013 में, रोम में बेघर लोगों की मदद के लिए हार्ले-डेविडसन मोटरबाइक दान की थी।

जयश्री द्वारा संकलित, एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा

Regn. No. TN/CCN/359/2015-2017 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: Rs 35

Categorized 'A' by MHRD
Accredited by NAAC

THE IIS UNIVERSITY

(deemed to be university u/s 3 of UGC Act 1956) JAIPUR

Admission for 2018-19

will commence in May 2018

- One of the 38 Deemed Universities under Category 'A' as placed by MHRD, Govt. of India
- Active Training & Placement Cell
- A state-of-the-art Gym & fitness cum Yoga Centre
- French Digital Corner
- Counselling Cell
- Plethora of activities for the promotion of Art, Culture Sports & Hobbies
- Hostel Facility on merit basis
- Pioneer in Girls' Education in India

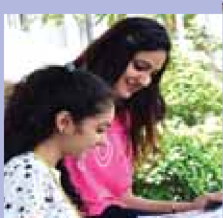

Memberships & Academic Collaborations

NEN

IMA

ACCA

OVER 200 UG / PG / M.PHIL. / PH.D. & PROFESSIONAL COURSES

UNDERGRADUATE COURSES

- B.A.
- B.A. Hons.
- B.A. (Journalism and Mass Communication)
- B.V.A. (Applied Art, Painting, Sculpture)
- B.B.A.
- B.C.A.
- B.Com.
- B.Com. Hons.
- B.Sc.
- B.Sc. Hons.
- B.Sc. Hons. (Home Sc.)
- B.Sc. Hons. (Multimedia & Animation)
- B.Sc. Fashion Design
- B.Sc. Jewellery Design & Technology

CAREER ORIENTED & SKILL DEVELOPMENT COURSES

3-level Certificate/Diploma/Advanced Diploma

- Banking, Insurance & Equity Services
- CCNA
- Clinical Nutrition and Dietetics
- Counselling & Guidance
- Early Childhood care & Education
- Event Management
- Fashion Designing
- Folk Dance
- Food Science and Quality Control
- French
- Functional Accountancy
- German
- Integrated CAD & Graphic Designing
- Intellectual Property Right and Patents
- International Business
- Jewellery Designing
- Kathak Dance
- Mass Communication & Video Production
- Patent Law & Practice
- Radio Programme Production
- Remote Sensing and GIS
- Research Methodology
- Retail Management
- Still Photography and Audio Production
- Tax Procedure & Tax Planning
- Theatre Studies
- Tourism and Airline Management
- Visual Arts
- Vocal Music
- Web Design & Technology

POSTGRADUATE COURSES

- M.A.- Economics, English, Foreign Trade Management, French, Sociology, Geography, History, Mathematics, Political Science, Psychology, Statistics
- M.Sc.- Biotechnology, Botany, Chemistry, Economics, Environmental Science, Geography, Information Technology, Mathematics, Microbiology, Physics, Psychology, Statistics, Zoology
- M.Com. - Accounting & Taxation, Business Studies, Financial Studies, Foreign Trade Management
- M.Sc. Home Science - Clothing and Textiles, Foods and Nutrition, Human Development
- M.V.A. - Applied Art (Graphic Design/Illustration), Print Making, History of Art, Painting, Sculpture (Portraiture, Creative Sculpture)
- M.A. Journalism & Mass Communication
- M.A./M.Com./M.Sc. Fashion Design
- M.S.W. (Master of Social Work)
- M.B.A. (semester based) Human Resource Management, International Business, Retail Management
- M.B.A. (Dual Specialization, Trimester based - Male students may also apply for this course) Marketing, Finance, Human Resource, International Business, Information Technology Management
- M.B.A. (Family Business & Entrepreneurship)(Co-educational Trimester Based Programme)
- M.C.A. (Master of Computer Applications - Two years (with lateral entry) / Three years, full time, semester based programme) Male students may also apply for this course

INTEGRATED COURSES

B.A. B.Ed.* | B.Sc. B.Ed.* | *Approved by NCTE

CIVIL SERVICE PREPARATION ALONGWITH GRADUATION.

HANDS-ON EXPERIENCE AT THE IN-HOUSE COMMUNITY RADIO STATION 'FM7' & STATE-OF-THE-ART AUDIO-VISUAL STUDIO

STUDENT SUPPORT THROUGH EARN WHILE YOU LEARN' SCHEME

Psychometric testing available for vocational and career counselling by a qualified counsellor

SPECIALIZED COURSES

- **B.Com Hons.** (Proficiency in Chartered Accounting/ Proficiency in Company Secretaryship) Specialized programmes and separate academic calendars for aspirants of CA & CS.
- **B.Com. Hons.** (Applied Accounting and Finance) Accredited by ACCA, UK

SPECIALIZED CERTIFICATE PROGRAMMES

- **CISCO Certified Network Associate** (CCNA)
- **ICAI sponsored Certificate** programme for Accounting Technicians
- **University of Cambridge,** U.K.'s Business English Certificate Test of English.

Approved Center for DELF

Training for Certified Management Accountant (CMA) examination using official IMA licenced study material available

RESEARCH PROGRAMMES

- **M.Phil. / Ph.D. :** Faculty of Arts & Social Science, Commerce & Management, Science (Details of subjects offering M.Phil./Ph.D. Programme is available on the Website)

www.iisuniv.ac.in

Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur 302020 INDIA
T: +91 141 2400160,61F: +91 141 2395494
E-mail: info@iisuniv.ac.in
Web: www.iisuniv.ac.in